स्त्री
अस्तित्व से एक कदम आगे

स्त्री
अस्तित्व से एक कदम आगे

संपादक

डॉ. हंसा व्यास

शिवालिक प्रकाशन

दिल्ली वाराणसी

प्रथम संस्करण : 2018

मूल्य : 495.00 रुपये

ISBN : 978-93-87195-45-5

आवरण : राजा रवि वर्मा की पेंटिंग आधारित छाया चित्र से

प्रकाशक :
शिवालिक प्रकाशन
27/16, शक्तिनगर
दिल्ली-110007
फोन : 011-42351161
ई-मेल : shivalikprakashan@yahoo.com
शाखा कार्यालय
प्लॉट सं. 394, संजय नगर कालोनी
पहरिया, रामदत्तपुर, वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

भारत में प्रकाशित

विरेन्द्र तिवारी द्वारा शिवालिक प्रकाशन 27/16, शक्ति नगर, दिल्ली-110007 के लिए प्रकाशित। शब्द संयोजन : फ्रेंड्स ग्राफिक्स, दिल्ली और आर. के. ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

Stri

Astitwa Se Ek Kadam Aage

Edited by : **Dr. Hansa Vyas**

कुछ शब्द अपनी ओर से....

नारी का सबला से अबला हो जाना समाज का सबल से निर्बल होना है यह समाज में नारी की सामाजिक स्थिति को दर्शाती है। आज वर्तमान सन्दर्भों में यदि हम बात करें तो यह निर्विवाद सत्य है कि नारी ने अपनी नारी सुलभ प्रकृति और प्रवृत्ति से परे जाकर राजसिंहासन से लेकर युद्ध के मैदान तक और घर की देहरी से लेकर आसमान की ऊंचाईयों तक अपने आपको स्थापित किया है।

यह सच है कि दुनिया की आधी आबादी अभी भी शोषित है, पीड़ित है। शारीरिक हिंसा का शिकार वह कभी तेजाब से जला दी जाती है तो कभी गला घोंट कर उसकी सांसें बन्द कर दी जाती हैं। जो कभी जिन्दा ही चिता की आग के हवाले कर दी जाती है। इतना ही नहीं कभी वह कोख से ही बाहर नहीं आ पाती।

कैसी विडम्बना है जिस कोख से पुरुष ने जन्म लिया उसी कोख पर अत्याचार करते उसे संकोच नहीं होता। वह क्यों भूल जाता है कि जिस दिन नारी की कोख नहीं होगी, उस दिन उसका अस्तित्व कहाँ होगा।

बड़ा विचित्र सा लगता है नवरात्रि में कन्या पूजन, कन्या भोजन शक्ति उपासना का एक पर्याय है। घर, चौक, चौराहे देवी उपासना के केन्द्र बन जाते हैं। पूरा देश देवी की भक्ति में लीन हो जाता है, पर घर की देहरी के अन्दर की शक्ति रूपेण नारी के प्रति उसका दृष्टिकोण एकदम अलग होता है।

जबकि इतिहास गवाह है कि आसुरी शक्तियों का विनाश शक्ति रूपेण माता पार्वती के अनेक रूपों ने ही किया है। राजा विक्रमादित्य के सिंहासन की बत्तीस पुतलियाँ ही उस सिंहासन की ताकत थी। राजा भोज को धर्म-कर्म, दान-ज्ञान, परोपकार, सहिष्णुता, शूरवीरता, पराक्रम आदि गुणों का ज्ञान बत्तीस पुतलियाँ ही कराती हैं। यह भी सत्य है कि जैसे ही पुतलियाँ सिंहासन छोड़ती हैं, सिंहासन का दुर्दशा काल प्रारम्भ हो जाता है। सिंहासन की ताकत शक्ति रूपेण नारी ही थी जो बत्तीस प्रतीकात्मक पुतलियों के रूप में सिंहासन में विद्यमान थी।

प्रस्तुत संदर्भों का यह मतलब कदापि नहीं कि नारी ही सब कुछ है, पर यह अटल सत्य है कि नारी के बिना कुछ भी नहीं। वह यदि जननी है सभ्यता और संस्कृति की तो उसकी ही कोख से सृष्टि आकार पाती है। नारी में वह सामर्थ्य है कि वह व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र में व्याप्त हीनता बोध को दूर कर सके। वह गृह प्रबंधक है, वह पालक है, वह रचयिता है। वह धाय माँ बनकर यदि इतिहास के पन्नों में अमर है तो दुर्गावती, अवन्ति बाई, रानी लक्ष्मीबाई बनकर भारत के ताज में मणि की तरह सुशोभित हैं। ताराबाई का स्वतंत्रता संग्राम और जीजाबाई का संघर्ष आज भी प्रतिनिधि उदाहरण के रूप में प्रस्तुत है। महिला सन्तों और समाज सुधारकों की एक समृद्ध परम्परा भारतीय वसुन्धरा को अलंकृत करती रही है।

सनातन चिन्तन धारा में मातृशक्ति महाशक्ति है। वह सरस्वती है, लक्ष्मी है, दुर्गा है। वह सरस्वती के रूप में ज्ञान के चरम उत्कर्ष का नेतृत्व है, लक्ष्मी के रूप में परम वैभव का संरक्षण है और दुर्गा के रूप में भीषण दैत्यों का संहार करने में सक्षम है। मातृशक्ति की सबसे महत्वपूर्ण और सार्थक भूमिका यह है कि वह पीढ़ियाँ गढ़ती है और भरसक प्रयत्न करती है कि ये पीढ़ियाँ सफलतापूर्वक जीवन की सीढ़ियाँ चढ़े।

चलते-चलते ऋग्वेद के दसवें मण्डल के 125वें सूक्त की ऋचा वागाम्भृणी की यह आत्मस्तुति उल्लेखनीय है-

मया सो अन्नमति यो विपश्यती यः प्राणिनी य ई शृणोत्युक्तम।

अमन्तवो मां त उपक्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्रद्धिवं ते वदामि।।10210।। (ऋग्वेद)

अर्थात् प्राणियों में जो जीवन शक्ति है, दर्शन क्षमता है, ज्ञान-श्रवण सामर्थ्य है, अन्न भोग करने की सामर्थ्य है, वह सभी मुझ वाग्देवी के सहयोग से ही प्राप्त होती है। जो मेरी सामर्थ्य को नहीं जानते वे विनष्ट हो जाते हैं। हे बुद्धिमान मित्रों आप ध्यान दें, जो भी मेरे द्वारा कहा जा रहा है, वह श्रद्धा का विषय है।

डॉ. हंसा व्यास

प्रस्तावना

आज जितनी दूर तक और जितने पास तक हमारी नजर जाती है, नन्हीं छह माह की मासूम बच्ची से लेकर 70 वर्ष तक की बुजुर्ग महिला शारीरिक हिंसा और शोषण का शिकार हो रही है। भारत का कोना-कोना उसकी दर्द भरी चीत्कार से गूंज रहा है। वह अपने से ही ठगी जा रही है और 'बेचारी' शब्द को सार्थक कर रही है

पर यह केवल एक पक्ष है। वह प्रकृति प्रदत्त अपनी कोमलता को अपने आत्मविश्वास से सशक्त करते हुए धरती, जल, आसमान की ऊँचाई को नाप रही है। वह कवि और लेखक की कोरी कल्पना नहीं रही, अब उसकी लेखनी भी सशक्त हो रही है। उसने बन्दूक भी अपने कन्धों पर उठा ली है, देश सेवा के लिए। वह दंगल गर्ल, फोटोग्राफर, खिलाड़ी बनकर अपने अस्तित्व से एक कदम आगे अपने आपको स्थापित कर रही है।

ऐसे ही कुछ बिन्दुओं के साथ प्रस्तुत है कुछ सशक्त पहलू इस पुस्तक के रूप में।

अनुक्रम

1.

सती से सशक्तिकरण तक की यात्रा

डॉ. हंसा व्यास
प्राध्यापक, इतिहास
शासकीय नर्मदा स्नातकोत्तर
महाविद्यालय होशंगाबाद

पौराणिक आख्यानों के अनुसार दक्ष ने जगदम्बा की स्तुति की ओर जगदम्बा ने प्रसन्न होकर दक्ष के गृह में पुत्री के रूप में उत्पन्न होने का वचन दिया पर एक शर्त रख दी कि जैसे ही उनके सम्मान में कमी आयेगी वो आत्म दाह कर देगी। हुआ भी यही जब दक्ष ने उन्हें और शिव को यज्ञ में सम्मान नहीं दिया तो उन्होंने आत्म दाह कर दिया। पर इस घटना के बाद धरती पर तमाम आसुरी शक्तियों का विनाश करने के लिए कभी महिषासुर मर्दिनी बनी तो कभी काली तो, कभी वैष्णवी, माहेश्वरी, विनायकी, वारही आदि रूपों में वह अवतरित हुई और फिर उसके तमाम रूप संगठित होकर शुंभ-निशुंभ जैसे आसुरों का विनाश करते है। यह पौराणिक आख्यान सती से सशक्तिकरण की यात्रा का सबसे उल्लेखनीय तथ्य है।

उपाध्यायान्दशाचार्य आपार्याणं शतं पिता।
सहस्त्रं तु पितृन्माता गौरवेणानिरिच्यते।।

(मनुस्मृति, 2.145) (2)

नारी सदैव से ही पारिवारिक, सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवस्थाओं का आधार रही है। सांस्कृतिक विकास एक ऐतिहासिक प्रक्रिया है। ''महिलाओं के सन्दर्भ में यदि हम सोलह संस्कारों को देखें तो उसके केन्द्र में नारी ही है। कोई भी संस्कार नारी के बिना पूर्ण नही होता है।'' नारी की मूल प्रवृत्ति आध्यात्मिक होती है। उसमें आत्मिक शक्तियों की बहुलता के कारण वह दिव्य शक्ति की अधिक अधिकारिणी बनी है। शास्त्रों में कहा गया है, ''10 उपाध्यायों से एक आचार्य श्रेष्ठ, 100 आचार्यों से एक

पिता श्रेष्ठ, 1000 पिताओं से एक माता श्रेष्ठ है।''

जनको जन्मदातृत्वात पालनाच्च पिता स्तृतः।
गरीयान् जन्मदातृश्च योडन्तदाता पितामुने।।
तयो शतगुणे माता पूज्या मान्या च वन्दिता।
गर्भ धारण पोषाभ्यां सा च ताम्यां गरीयसी।।

(ब्रहम्वैवर्त पुराण, गणेश खण्ड अध्याय- 40)

नारी का प्रत्येक रूप पूजनीय है जब वह बेटी है तो मांगलिक है देवी माहत्म्य के अनुसार देवी के नौ रूपों मे गौरी एक है जिसमें दस वर्ष आयु वाली बालिका को गौरी कहा गया है। गौरी की उत्पत्ति तथा उनके विविध स्वरूपों के वर्णन दीपार्णव, देवता मूर्ति प्रकरण, अपराजित पृच्छा, रूपमण्डन, अग्निपुराण, मानसार तथा विष्णु धर्मोत्तर पुराणों में प्राप्त होता है।

जब वह पत्नी बनती है तो धर्म पत्नी कहलाती है और जब वह माँ बनती है तो पूजनीय बन जाती है। वह सद्योवधू के रूप में श्रेष्ठ संस्कारवान गृहिणी है, गृहस्थ होकर भी साध्वी है क्योंकि अपने संस्कारों, सद्‌गुणों से वह बच्चों को संस्कारवान बनाकर राष्ट्र के लिये संस्कारों से समृद्ध समाज को पोषित करती है मातृत्व निभाने में उसका पूरा जीवन लग जाता है।

यह सच है कि धर्म की स्थापना आचार्यों ने की पर उसे संभाले रखने का कार्य उसे विस्तारित करने का कार्य नारी ने ही किया है।

महर्षि गर्ग कहते हैं कि-

यद् गृहे रमे नारी लक्ष्मीस्तद् गृहवासिनी।
देवताः कोटिशो वत्स! न त्यजन्ति गृहं हितत्।।

जिस घर में सद्‌गुण सम्पन्न नारी सुख पूर्वक निवास करती है, उस घर को करोड़ों देवता भी नहीं छोड़ते।

विश्व में एक मात्र देश भारत है जहाँ अर्द्धनारीश्वर का आदर्श रहा है आज भी एक आदर्श नारी में तीनों देवियां एक रूप मे दिखाई देती है। ज्ञान देते समय वह सरस्वती के रूप में सामने आती है तो कुशलता पूर्वक गृह प्रबन्धन करते समय वह लक्ष्मी के रूप में प्रगट होती है और दुष्टों के अन्याय का प्रतिकार करते समय उसका दुर्गा रूप अभिव्यक्त होता है।

सच है नारी शक्ति है, निर्मात्री है, सृजनकर्त्ता है। वह सन्तान के जन्म के साथ ही

परिवार का निर्माण करती है और समाज की संरचना में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है। नारी संस्कार व संस्कृति की संवाहिका है। वह संस्कृति को जीवन प्रदान करती है। वह ब्रम्हवादिनी है क्योंकि वह पीढ़ी की पीढ़ी को संस्कारवान बनाती है, शिक्षित करती है। नैतिक मूल्यों का पाठ पढ़ाती है, रिश्तों की मर्यादा सिखाती है, जीवन में अनुशासन के साथ आगे बढ़ने की शिक्षा देती है। समय प्रबन्धन, गृह प्रबन्धन का पाठ उससे बेहतर कोई समझ नहीं सकता।

नारी शब्द ही अपने आप में इतनी उर्जा से समृद्ध है कि उसका उच्चारण ही सम्पूर्ण परिवेश को अलंकृत कर देता है। इसका पूर्ण स्वरूप मातृत्व में विकसित होता है। नारी मानव की नहीं अपितु मानवता की जन्मदात्री है, क्योंकि मानवता के आधार रूप में प्रतिष्ठित सम्पूर्ण गुणों की वह जननी है।

अंतरिक्ष हो या प्रशासनिक सेवा, शिक्षा हो या राजनीति, खेल हो या मीडिया समस्त विविध आयामों में अपनी गुणवत्ता सिद्ध कर कुशलता से प्रत्येक जिम्मेदारी का पद वह संभाल रही है। आज आवश्यकता यह समझने की है कि विकास का केन्द्र नारी है। नारी के बिना सुरक्षित, सुव्यवस्थित समाज की रचना नहीं हो सकती अतः मानव और मानवता दोनों को बनाए रखने के लिए नारी के गौरव को समझना होगा।

स्मृति ग्रन्थों में कहा गया है कि नारी के प्रति असम्मान गंभीर अपराध की श्रेणी में आता है। तुलसीदास जी रामचरित मानस में लिखते है-

अनुज वधू, भगिनी सुत नारी।
सुनु सठ कन्या सम ए चारी।।
इन्हहिं कुहपिट विलौकई जोई।
ताहि बधे कछु पाप न होई।।

अर्थात- छोटे भाई की पत्नी, बहिन, पुत्र की पत्नी कन्या के समान होती है। इन्हें कुदृष्टि से देखने वाले का वध कर देना कतई पाप नहीं है।

आज जितनी दूर तक और जितनी पास तक हमारी दृष्टि जाती है 4 माह की नन्हीं बच्ची से लेकर 70 वर्ष तक की बुजुर्ग महिला अपने समाज से शारीरिक मानसिक हिंसा का शिकार हो रही है। समाज चाहे नारी को कमतर आंके पर पितृसत्तात्मक समाज के अस्तित्व का आधार मातृ सत्ता ही है। **''माँ की कोख नहीं होगी तो पितृसत्तात्मक समाज का सृजन कैसे होगा।''**

भारतीय नारी देवी के रूप में इसलिए पूजी जाती है कि वह परिवार और समाज की केन्द्र बिंदु है। वह अपनी बेटी, पत्नी और माँ की भूमिका में निश्चित रूप से अपने

अस्तित्व से एक कदम आगे ही है।

अल्तेकर के अनुसार वैदिक काल में लगभग 20 नारियों के नाम गिनाये गए हैं जो मंत्र दृष्टा थी इनमें से प्रमुख लोपामुद्रा (ऋग्वेद का प्रथम मण्ड 179वां सूक्त), विश्वारा आत्रेयी (पंचम मडल का 28वां सूक्त), अपाला आत्रेयी (अष्टम मण्डल का 28वां सूक्त), घोषा काक्षीवती (दशम मण्डल का 39,40 वां सूक्त), शची पौलोमी (दशम मण्डल का 85वां सूक्त), अदिती, गाद्या, सरमा के सूक्तों द्वारा उनके राजनीतिक ज्ञान का परिचय मिलता है।

उपनिषदों में सुलमा, मैत्रेयी, वडवा, पार्थियेयी और गार्गी के नामों का ग्रन्थों में आना इस बात का प्रमाण है कि ज्ञान के क्षेत्र में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। ब्रह्मवादिनी नारियाँ उपनिषद युग की विशिष्टिता मानी जा सकती है। ये स्त्रियां ब्रह्म चिन्तन में तथा ब्रम्हा विषयक व्याख्या में अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत कर देती थी। वे ब्रह्म तत्व के व्याख्यान तथा परिष्कार में उस युग के महान दार्शनिकों से वाद-विवाद व शास्त्रार्थ करती थी। वृहदारण्यकोपनिषद ऐसी दो ब्रह्मवादिनी नारियों की विद्वता का परिचय बड़े विशद शब्दों में उल्लेखित करता है। उस युग के महान तत्वज्ञानी याज्ञवल्क्य ऋषि की धर्मपत्नी मैत्रेयी का नाम अमर है। साथ ही याज्ञवल्क्य से शास्त्रार्थ करने वाली नारी गार्गी का नाम आज भी सम्मान से लिया जाता है।

वैदिक काल में नारी धनुर्वेद और युद्धविद्या में भी पारंगत थी। ऋग्वेद के मण्डल के 102 वें सूक्त में राजा मुद्गल एवं मुद्गलानी की कथा वर्णित है मुद्गलानी राजा को युद्ध में विजय दिलाती है। इसी प्रकार शशीयसी तथा वृत्तासुर की माता दनु का वर्णन हैं जिसने इन्द्र के साथ युद्ध किया था।

महाकाव्य काल में ही कैकयी देवासुर संग्राम मे राजा दशरथ की सारथी बनकर रक्षा करती है। द्रोपदी के धर्म विषयक प्रश्न उसे विदूषी प्रमाणित करते है।

महाभारत में एक जगह उल्लेख मिलता है कि चित्रसेन गन्धर्व की ओर से श्री कृष्ण से अर्जुन को युद्ध करना पड़ा था जिसमें रथ का संचालन द्रौपदी ने किया था। प्राचीन भारतीय इतिहास की ये वे नारियां हैं जिन्होंने इतिहास की धारा को ही बदल दिया। बौद्ध धर्म ग्रंथ थेरी गाथा में लगभग 73 भिक्षुणियों की 522 गाथाओं का संग्रह किया गया है जो कि 16 भागों में विभक्त हैं। भिक्षुणियाँ निर्वाण की परम शक्ति का खुशी से वर्णन करती है।

''अहो सुखं ति सुखो झायामी''

थेरी शुक्ला द्वारा राजगृह निवासियों को धम्म उपदेश देना, थेरी नन्द उत्तरा द्वारा साधुओं के साथ तर्क करना, पराचारा भिक्षुणी द्वारा कुशलता से उपदेश देना भिक्षुणियों

का समाज में अग्रणी भूमिका निभाने के ठोस प्रमाण है।

जैन साहित्य से अनेक विदुषी स्त्रियों के बारे में पता चलता है। कौशाम्बी महाराज की बेटी जयन्ती ज्ञान और दर्शन में निपुण थी। ऋषभदेव ने अपनी पुत्रियों का लालन-पालन पुत्रों के समान ही किया था। ऐतिहासिक संदर्भों से ज्ञात होता है कि तक्षशिला की राजकुमारी अनुसूईया धर्नुविद्या तथा तलवार बाजी में प्रशिक्षित थी। उन्होंने राजनीतिक निर्णयों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। मौर्य काल में सम्राट बिन्दुसार की पत्नी सुभ्रदांगी न केवल धर्नुविद्या मे निपुण थी वरन् उन्हें वन्य औषधियों का भी समुचित ज्ञान था। विष्णु गुप्त चाणक्य अपने अर्थशास्त्र में ऐसी गणिकाओं का तथा विषकन्याओं का उल्लेख करते है जो समस्त कलाओं में पारंगत होने के साथ-साथ गुप्तचर का काम भी सफलता पूर्वक करती थी, साथ ही धनुर्विद्या व घुड़सवारी में भी निपुण होती थी। गुप्तकाल में प्रभावती गुप्त ने अपने पति वाकाटक नरेश की अकाल मृत्यु के पश्चात अपने अवयस्क पुत्रों की संरक्षिका वनकर एक लम्बे समय तक शासन किया। संयुक्ता कन्नौज के राजा जयचंद की बेटी थी जो तलवार बाजी ने निपुण थी। सल्तनत कालीन भारत के राजनैतिक इतिहास मे रजिया सुल्तान का नाम उल्लेखनीय है जो तमाम विरोधों के बावजूद अपने पिता के समर्थन से शासिका बनी और विपरीत परिस्थितियों के साथ शासन किया। युद्ध के मैदान में भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। रानी पद्मनी जानी जाती तो अपने जौहर के कारण है लेकिन इतिहास गवाह है कि वे युद्ध कला में भी पारंगत थी।

मीरा बाई एक राजकुमारी थी पर भक्ति आंदोलन की संत बनकर समाज का मार्गदर्शन करती हुई दिखाई देती है। रानी लक्ष्मीबाई की वीरता से इतिहास के पन्ने भरे हुए है। उनकी महिला तोपचियों की शृंखला लम्बी है। जूही, गोमती, झलकारी आदि। झलकारी तो रानी झलकारी के नाम से ही जानी जाती है। इसी क्रम में भारतीय इतिहास रानी दुर्गावती, रानी अवन्ति बाई का भी ऋणी है जिसने भारत के सम्मान में कमी नहीं आने दी।

कर्नाटक के चालुक्य वंश की रानी अक्का देवी अपने प्रशासकीय गुणों के कारण इतिहास में अपना स्थान बनाये रखने में सफल हुई। राजकुमारी नीलोफर का जन्म जरूर इस्तांबुल में हुआ था पर शादी हैदराबाद के आखिरी निजाम के दूसरे बेटे से हुई थी। वे समाज सेवा के क्षेत्र में अपने योगदान के कारण जानी जाती है। काशीपुर के राम के राजा की बेटी सीता देवी राजकुमारी कदम के नाम से भी जानी जाती है। उन्हें वोग पत्रिका द्वारा दुनिया की सबसे वेल ड्रेस्ड महिलाओं की सूची में शामिल किया गया था। उनका विवाह कपूरथला के सिख राजकुमार करमजीत सिंह के साथ हुआ था। राजनीतिक कार्यों में दक्षता उनकी विशेषता थी।

राजस्थान के मेवाड़ की रानी कर्णावती को कौन नहीं जानता। सिन्ध के राजा दाहिर की पत्नियों और पुत्रियों का बलिदान आज भी देश याद करता है। जैसलमेर नरेश महारावल रत्नसिंह ने जैसलमेर किले की रक्षा अपनी पुत्री रत्नावली को सौंप दी थी। राणाप्रताप की बेटी वीर बाला चम्पा अपनी दयालुता और आतिथ्य सत्कार के लिए इतिहास में अमर हो गई।

इतिहास में मस्तानी चाहे अपनी प्रेमगाथा के रूप में अति प्रसिद्ध हो पर इतिहास गवाह है इस बात का कि वे नृत्य, गायन मे जितनी दक्षता रखती थी, उतनी ही कुशलता से वे घुड़सवारी और तलवार बाजी किया करती थी वे सैनिक अभियानों में बाजीराव के साथ कंधे से कंधा मिलाकर तलवारबाजी किया करती थी। ताराबाई का स्वतंत्रता संग्राम आज भी जीवन्त है। यदि जीजाबाई नहीं होती तो छत्रपति शिवाजी नहीं होते।

1857 के स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास महिलाओं के योगदान के बिना अधूरा है। रानी लक्ष्मीबाई, रानी द्रोपदी, महारानी तपस्विनी, रानी ईश्वर कुमारी, निशानेबाज ऊदा देवी, चौहान रानी, रानी अवन्तिका बाई, वीरांगना अदादेवी, जालौर की रानी तेजबाई, कर्नाटक के कित्तूर की रानी चेन्नमा, बुंदेलखण्ड क्षेत्र के जैतपुर के राजा परीक्षित की रानी, कानपुर की नर्तकी अजीजन बेगम, बेगम हजरत महल आदि उल्लेखनीय नाम है। नागालैंड की रानी गाइदिन्ल्यू का नाम आज भी सम्मान से लिया जाता है।

मद्रास की महारानी सीतादेवी का विवाह बडौदा घराने के प्रिंस प्रताप सिंह गायकवाड़ से हुआ था। फैशन का उनका भारतीय अन्दाज पूरे विश्व में प्रसिद्ध हुआ। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत को ही नहीं भारतीय वेशभूषा को भी पहचान दिलाई। रानी विजया देवी का विवाह कोटड़ा संगानी के ठाकुर से हुआ था और ये प्रिंस कांतिराव नरसिम्हा राजा वडियार की बेटी थी। विदेश जाकर संगीत की शिक्षा ग्रहण की थी और संगीत के क्षेत्र में अपने को स्थापित किया था।

इतिहास की धारा के साथ-साथ महिलायें भारतीय इतिहास में अध्याय जोड़ती रही साहित्य के क्षेत्र में भी महिला लेखनी सशक्त होती रही। नारी के सम सामयिक कथा लेखन मे मूलतः नारी के विविध आधुनिक रूप और उनकी समस्याओं को व्यक्त करने की प्रक्रिया संचारित हो गई। यद्यपि इसका सूत्रपात 1922-23 में चांद, माधुरी एवं सरस्वती आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखिकाओं के माध्यम से हो चुका था, किन्तु वास्तविक गति साठोत्तरी कथा लेखन से मिलीं। समय के इसी कालखंड में नारी लेखन सामाजिक, सांस्कृतिक स्तर पर संघर्ष कर रहे पूरे नारी वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जिसका स्वयं भी वह एक सचेतन सदस्य है इसीलिए नारी लेखन के आज जो तेवर है उसे सामान्यतः पचा पाना हमारे समाज के लिए कठिन हो रहा है। ''सूरजमुखी

अंधेरे के'' (कृष्णा सोबती), ''चित्त कोबरा'' (मृदुला गर्ग), ''बेघर'' (ममता कालिया), ''रेत की मछली'' (कांता भारती), ''आपका बंटी'' (मन्नू भंडारी), ''तत-सम'' (राजी सेठ), ''अनारो'' (मंजुल भगत) आदि रचनाओं में जीर्णशीर्ष पारम्परिक मूल्यों को टूटते हुए देखकर समाज का वह वर्ग अवश्य विचलित है, जिसकी दृष्टि में नारी-जीवन की सहचरी या सहभागी नहीं बल्कि ''आँचल में दूध और ऑखों में पानी'' भरकर जीने वाली अबला है या फिर केवल ''श्रद्धा''। जिस समाज ने नारी को कथन में देवी कहकर छला और व्यवहार में ''दासी'' बनाकर निरंतर शोषण किया और कर रहा है वह एक स्वाधीन नारी के लिए लड़ने वाली लड़ाई के तेवर को कैसे बर्दास्त कर सकता है। आज का नारी-लेखन इसी मुक्ति संघर्ष का एक जीवन्त हिस्सा है, किंतु यहां भी पुरुषवाद का वर्चस्व दिखाई देता है। अधिकतर लेखकों के अनुसार स्त्री-लेखन की सीमा उसके स्त्री होने के कारण में ही निहित है। किंतु ईमानदारी यह नहीं है।

चित्रा मुद्गल के अनुसार सिद्धांत रूप से लेखन, लेखन होता है। नर-मादा नहीं उसे नर-मादा के सांचे में ढालकर देखने वाली दृष्टि पूर्वागृह से ग्रस्त है। समकालीन नारी वादी लेखन की पहली और सर्वाधिक बुनियादी समस्या इतिहास के वर्तमान दौर से जुड़ी है, इसे हम दि्क-काल संदर्भ का प्रश्न कह सकते है। समाजवाद के इस नये दौर ने न केवल हमारी अर्थव्यवस्था तथा राजनीति को बल्कि हमारे समाज की एक-एक कोशिका को पूरी सांस्कृतिक अधिरचनात्मक अट्टालिका को, बुनियादी तौर पर प्रभावित किया है। स्त्रियों की स्थिति भी इसका अपवाद नहीं है, नयी स्थिति ने भारतीय स्त्री के भौतिक-आत्मिक जीवन का एक नया संजटिल परिदृश्य निर्मित किया है और अव्यवस्थित ढंग से ही सही, लेकिन स्त्री प्रश्न पर एक नये विमर्श की शुरूआत हो चुकी है। आज स्त्री प्रतिवाद कर रही है और अपनी प्रभावी स्थिति भी दर्ज करा रही है। तमाम, पूँजीवाद सांस्कृतिक घटाटोपों के बावजूद न केवल सिनेमा में, न केवल पत्रकारिता में, बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में लिंग भेदी दृष्टिकोण पर प्रश्न-चिह्न उठाए जाने की शुरूआत भारत में चुकी है। मृदुला गर्ग, मैत्रेयी, पुष्पा, नासिरा शर्मा, मेहरूनिशा परवेज, ममता, कालिया, राजी सेठ, आदि के लेखन में यह आहट सुनी जा रही है। बांग्लादेशी लेखिका तसलीमा नसरीन के बहु-चर्चित उपन्यास लज्जा की घोर आलोचना हुई परंतु लेखिका बिना आलोचनाओं की परवाह किये कहती है ''मैं समाज की पीड़िता निग्रहित, दलित, वंचित नारी के लिये लिखती हूँ'।

स्त्री मुक्ति कामना के क्षितिज और आयाम उमा नेहरू, आशा पूर्णादेवी, मैत्रीयोदवी, धीरू बेन पटेल, महादेवी वर्मा और इस्मत चुगताई की पीढ़ियों से होते हुए क्रमशः शशिप्रभा शास्त्री, मन्नु भण्डारी, कृष्णा सोवती, महाश्वेतादेवी, ऊषा प्रियवंदा, सुधा अरोड़ा आदि तक और फिर मंजुल भव राजी सेठ, मृदुला गर्ग, ममता कालिया, सूर्यबाला

और मृणाल पाण्डे तथा उसके बाद मैत्रेयी पुष्पा, नासिरा शर्मा आदि के रचना जगत तक निरंतर विस्तारित होते गये है। हिन्दी जगत में सिमोन द बोउवा, बेट्टी फ्रिटम,जरमेन ग्रीयर, केट मिलेट आदि के लेखों-उद्धरणों की बाढ़ आ गयी है।

अहसास का धरातल गहरा और व्यापक हुआ है, साफगोई और साहस में वृद्धि हुई है, उग्रता बढ़ी हैं, विवेचना गहन हुई है और नये-नये आयाम उद्घाटित हुए हैं। लेकिन अभी प्रतिबाद के नये स्वर को मंच पर दाखिल होना है। नारी पराधीनता के विचार जिन सामाजिक-सांस्कृतिक संरचनाओं संस्थाओं और साहित्यिक कलात्मक अभिव्यक्तियों के माध्यम से संरक्षित-संधारित हो रहे हैं उनकी स्पष्ट पहचान अभी कायम की जाती है।

कलाकारों की कल्पना में कैद स्त्री ने अपने आस-पास गढ़े हुए मिथको की बेड़ियों को तोड़कर स्वयं रंग की तूली को जब अपने हाथ में लिया तो स्त्री के रंगो की दुनिया न जाने कितने आयामों के साथ कैनवास पर पूरी ताकत के साथ मुस्कुराने लगी। उसने कैनवास से अपने को मुक्त कर हाथ में तूली को पकड़कर नया इतिहास लिख डाला और स्त्री सशक्तिकरण की दिशा में चित्रकला के क्षेत्र मे भी अपनी उपस्थिति को पूरी ताकत के साथ स्थापित कर दिया। अमृता शेरगिल, अंजोली इलामेनन की परम्परा को 1970 के बाद समृद्ध करने वाली महिलाओं की श्रृंखला लम्बी है। एस.एम.बानू मुनाफ, डॉ. शुभा चंद, कामिनी बघेल, जिज्ञासा ओझा हूमा उल्लाह खान, अंजलि एस.अग्रवाल, अर्पिता सिंह, नीलिमा शेख, मुक्ता अवचट, ज्योति हत्तर आदि ऐसे नाम है जिन्होंने भारत की सीमा के बाहर भी अपनी पहचान को स्थापित किया है।

आने वाले समय में नारी का चेहरा पूरी तरह बदल गया है। विजय लक्ष्मीपंडित, इंदिरा गांधी, सरोजिनी नायडू, लता मंगेशकर, ऐश्वर्या राय, सुष्मिता सेन, चंदा कोचर, इंदिरा नूई जैसी शख्सियतों ने दुनिया में धाक जमाई। ऐसी महिलाएं भी है जिन्हें इनकी जैसी ख्याति नही मिली। लेकिन इनका योगदान किसी से कम नहीं है। आज वह सड़कों पर लड़ रही है। पुरुषों से कंधा मिलाकर नहीं उनसे आगे रहकर। आज की स्त्री प्रकृति प्रदत्त अपने कोमल अस्तित्व से आगे हैं।

एक कदम आगे

विपरीत हालात में दिखाई प्रतिभा

- होमई व्यारवाल 1913 में जन्मी पहली फोटो जर्नलिस्ट। 'डालडा-13' नाम में छपते थे फोटो।
- कॉर्नेलिया सारोबाजी देश की पहली वकील। डिग्री नहीं मिलती थी। पर्दे में रहकर दी दलीलें।

- पंडित रमाबाई ब्रिट्रिश राज में केसर-ए-हिंद का खिताब जीतने वाली पहली महिला।
- असीमा चटर्जी डॉक्टर ऑफ साइंस डिग्री लेने वाली पहली महिला।
- महादेवी वर्मा छायावाद कवियित्री। आधुनिक मीरा भी कहा जाता गया।
- सावित्रीबाई फुले पति का साथ देने को बनीं देश की पहली महिला शिक्षक।
- आनंदी जोशी देश की पहली महिला डॉक्टर। विदेश में हासिल की थी डिग्री।
- कमल रणदिये देश की पहली टिश्यू कल्चर लैबोटरी को अंजाम तक पहुंचाया
- सरला ठकराल 1936 में पायलट बनीं। लेकिन कर्मीशियल लाईसेंस नहीं ले सकीं।

लड़कर जीता बराबरी का अधिकार

- प्रिया झिंगन 1992 में सेना की पहली लेडी कैडेट। 1993 में कमीशन।
- पुनीता अरोरा 2004 में सेना में लेफ्टिनेंट जनरल के पद तक पहुंचने वाली पहली महिला।
- सीबी मुथम्मा 1948 में बनीं भारतीय विदेश सेवा की पहली अफसर।
- किरण वेदी 1972 में देश की पहली महिला आईपीएस अफसर।
- फातिमा बीवी 1989 में सुप्रीम कोर्ट की पहली महिला जज।
- कमला चट्टोपाध्याय 1966 में सामुदायिक नेतृत्व के लिए जीता मैग्सेसे पुरूस्कार।
- अन्ना चांडी 1959 में केरल हाईकोर्ट में पहली महिला जज बनीं।
- मिताली मधुमिता बहादुरी का सेना मेडल हासिल करने वाली पहली महिला।

अमृता पाटिल देश की पहली महिला ग्राफिक नॉवेलिस्ट।

हर क्षेत्र में महारत का दिखाया दम

“मौके मिले, लेकिन परंपरा ने बांध रखा था। पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए अलग पहचान बनाना मुश्किल था। लेकिन आगे बढ़ीं। सफल भी रही।”

- डॉ. कृति कारंत वाइल्डलाइफ कार्यकर्ता। नेशनल जियोग्राफिक ने चुना 10 हजार की ग्रांट के लिए।
- मुमताज काजी एशिया में डीजल इंजिन रेल की पहली ड्राइवर।
- मीनाक्षी वी. अगस्त 2003 में बनी देश की पहली फायर फाइटर।
- अर्चना सरदाना पहली व इकलौती मास्टर स्कूबा ड्राईविंग ट्रेनर।

- टेसी थॉमस अग्नि-5 मिशन का नेतृत्व किया। नाम मिला अग्नि-पुत्री।
- निवेदिता भसीन 26 वर्ष में फ्लाईट कमांड करने वाली दुनिया की सबसे युवा।
- बछेंद्रीपाल 1984 में सबसे ऊंची चोटी माउंट एवरेस्ट फतह की।
- आभा बनर्जी देश की पहली महिला मोटिवेशनल स्पीकर।
- शांति बलराम उत्तर प्रदेश में देश की पहली महिला ट्रक मैकेनिक।
- मेघा कावले पहली फीमेल डीजे। बॉलीवुड गाने को नया अंदाज दिया।
- कैरी ब्लेवेट गोवा के समुद्र तट पर तैनात देश की पहली महिला लाइफगार्ड।
- दिव्या मिघलानी कार रैलियों मे देश की पहली महिला ड्राइवर।
- बागेश्वरी 'शहनाई क्वीन' बागेश्वरी कमर देश की पहली महिला शहनाई वादक।

नये रास्ते पर साबित की काबिलियत

- तरण कौर देश की पहली महिला रैंप सिंगर। हार्ड कौर नाम से भी है पहचान।
- गीता गोपीनाथ हार्वर्ड में पहली भारतीय महिला स्थायी प्रोफेसर।
- सुचेता गोबी के रेगिस्तान को पैदल पार करने वाली पहली भारतीय।
- डॉ. टी के अनुराधा सैटेलाईट बनाने वाली देश की पहली महिला वैज्ञानिक।
- शैलजा कुमार शीत ओलिंपिक में भाग लेने वाली पहली महिला।
- रीना कौशल 2010 में दक्षिणी ध्रुव में स्कीइंग करने वाली पहली भारतीय महिला।
- मीरा शंकर विजयलक्ष्मी पंडिल के बाद यूएसमें दूसरी महिला राजदूत।
- तेजस्विनी सावंत निशानेबाजी में वर्ल्ड चैम्पियनशिप जीतने वाली पहली महिला।
- मोक्ष जेटली प्रोफेशनल बाइकर एडबेंचर टूर प्लानर ऑर्गेनाईजर।
- मोनिषा काल्टेनबोर्न फॉर्मूला वन टीम साउबर की टीम प्रिंसिपल यानी प्रमुख।
- सुनीता चौधरी देश की पहली महिला ऑटो चालक। राष्ट्रपति चुनाव में भी उतरी थी।
- इशिता मालवीय देश की पहली महिला सर्फर चलाती है सर्फिंग स्कूल।
- जमनाबेन 1975-76 में बनीं देश की पहली महिला बस ड्राईवर।

कुंभ में नई पहचान

- कुंभ में पहली बार महिला साध्वियों ने धर्मध्वजा फहराई। जूना अखाड़ा ने पहली

बार 20 महिला संतो को महामंडलेश्वर की पदवी से अलंकृत किया।

2.75 लाख इंजीनियर

- 2.75 लाख छात्राएं इंजीनियर। 10 साल मे 122 प्रतिशत बढ़ी इंजीनियरिंग में छात्राओं की भागीदारी। जो दुनिया मे सबसे ज्यादा है।

नेतृत्व का कमाल

- 11 प्रतिशत कंपनियों में महिला नेतृत्व है, जो फॉर्च्यून 500 कंपनियों के औसत से ज्यादा है। इन कंपनियों की कमाई में औसत 35 प्रतिशत तेजी।

सत्कार से आगे

- होटल इंडस्ट्री में 60-70 प्रतिशत भागीदारी महिलाओं की। लगभग 30 लाख के पार।

डॉ. बनने में भी पीछे नहीं

- पिछले 10 सालों में लगभग 5 लाख छात्रायें डाक्टर और समाज सेवा की डिग्री लेकर निकली।

एक किसान की अफसर बिटिया

देश की सबसे प्रतिष्ठित परीक्षा सिविल सेवा में सिलेक्ट होकर केरल की नर्स एनिस के जॉय ने एक नया इतिहास रचा है। इस परीक्षा के इतिहास मे यह पहली बार है जब कोई नर्स चयनित हुई हो। लेकिन केरल के छोटे से गांव पंपाकुडू की रहने वाली एनिस ने एक रिकॉर्ड कायम करते हुए सामान्य वर्ग में 85 सीटों मे 65वां स्थान हासिल किया है। एक ओर जहां बड़े शहरो और पढ़े-लिखे माता-पिता की संतानों ने कामयाबी पाई, वहीं दूसरी और किसान पिता ओर गृहिणी मां की बेटी एनिस ने साबित कर दिया कि कामयाबी भेदभाव नहीं मानती।

एनिस के आईएएस अफसर बनने का सपना उनके पिता जॉय ने दस साल पहले ही देखा था लेकिन उस समय स्कूल में पढ़ रही एनिस ने इस बात को बहुत गंभीरता से नहीं लिया। तिरूअतंतपुरम् में नर्सिंग में ग्रेजुएशन करने के दौरान एनिस ने इस बारें में काफी सोचा। पहले तो उन्हें लगा कि मेडिकल बैकग्राउंड वाले आईएएस की परीक्षा नहीं दे सकते है लेकिन वस्तुस्थिति पता चलने के बाद उन्होंने जमकर तैयारी शुरू कर दी। एनिस इस परीक्षा में पहले भी सफल हुई थीं और इंडियन सिविल अकाउंट्स सर्विस की ट्रेनिंग फरीदाबाद, हरियाणा में ले रहीं थीं। एनिस का लक्ष्य आईएएस अधिकारी बनना था। इसलिए उन्होंने साल 2013 में भी इम्तिहान दिया और सफल रहीं प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा की तैयारी एनिस ने केरल में ही की और इंटरव्यू की तैयारी के लिए

दिल्ली गई। एनिस को सबसे ज्यादा खुशी इस बात की है कि उन्होंने अपना सपना साकार कर ही दिया।

पहला तीर निशाने पर

यूँ तो फिल्ममेकिंग में पुरुषों के वर्चस्व को बहुत पहले ही महिलाओं की चुनौती मिल चुकी है लेकिन कम ही महिला निर्देशकों ने अपनी पहली फिल्म से वैसा प्रभाव छोड़ा। 'इंग्लिश विंग्लिश' की कहानी मुख्यधारा से हटकर थी, इसकी हीरोईन 'युवा' नहीं थी, कोई हीरो तो फिल्म में था ही नहीं। इसके बावजूद फिल्म बॉक्स ऑफिस पर कामयाब हुई। समीक्षकों ने तो उसकी जमकर प्रशंसा की ही। टोरंटो फिल्म फेस्टिवल में इसका वर्ल्ड प्रीमियर हुआ, जहां फिल्म खत्म होने पर दस मिनट तक तालियां बजती रहीं।

पुणे से मास कम्युनिकेशंस में डिग्री लेने वाली गौरी को हमेशा से फिल्मों की दीवानगी थीं। पहले उन्होंने विज्ञापन फिल्में बनाई और फिर उन्हें मौका मिला और अपनी पहली फिल्म निर्देशित की।

वायु सेना टुकड़ी का नेतृत्व - स्नेहा शेखावत

26 जनवरी 2012 में भारत ने अपना 63वां गणतंत्र दिवस मनाया और साथ-साथ एक ऐतिहासिक घटना का गवाह भी बना। भारतीय इतिहास में पहली बार ऐसा हुआ कि किसी महिला पायलट ने गणतंत्र दिवस परेड के दौरान वायुसेना टुकड़ी का नेतृत्व किया हो। राजस्थान के सीकर जिले की रहने वाली फ्लाइट लेफ्टिनेंट स्नेहा शेखावत ने टीम की अगुवाई करते हुए सलामी दी। उनके साथ फ्लाइंग ऑफिसर हीना पुरी, अनुपम चौधरी और पूजा नेगी ने एअर बैटल की धुन पर कदमताल करते हुए देश की महिलाओं का सिर गर्व से और भी ऊंचा कर दिया। इस बार थाईलैंड की प्रधानमंत्री येनलक शिनवात्रा मेहमान के तौर पर गणतंत्र दिवस समारोह में शरीक हुई थीं और भी पहली बार था कि थाईलैंड में कोई महिला प्रधानमंत्री बनी हो। स्नेहा हिंडन एअर बेस में आईएएफ स्क्वॉड्र के साथ पोस्टेड है। आत्म विश्वास से भरी स्नेहा ने 144 सदस्यों वाली इस वायुसेना टुकड़ी का नेतृत्व कर अपने जोशीले स्वर से पूरी टीम की हौंसला अफजाई की। स्नेहा कहती हैं कि कारगिल युद्ध के दौरान ही उन्होंने तय कर लिया था कि वे एअरफोर्स ज्वॉइन करेंगी। कई लोगों ने उन्हें डराया कि शादी के बाद वे यह जॉब नहीं कर पांएगी लेकिन उनकी शादी जिनसे हुई वे भी फ्लाइट लेफ्टिनेंट है। स्नेहा को हमेशा से ही चुनौतियां पसंद थी और उनके हार न मानने के जज्बे ने ही उन्हें इस मुकाम पर पहुंचाया।

कॉर्पोरेट शिखर पर नैना लाल किदवई

जब 15 दिसंबर 2012 को नैना लाल किदवई ने फिक्की की पहली महिला अध्यक्ष के रूप में कार्यभर संभाला, तो यह देश के वाणिज्य व उद्योग जगत में महिलाओं की सशक्त उपस्थिति के लिहाज से एक अहम पड़ाव था। मगर 55 वर्षीय नैना के लिए तो जैसे नए मुकाम हासिल करना और नए कीर्तिमान स्थापित करना एक आदत बन गई है। खास बात यह कि ये उपलब्धियां उन्होंने उस कॉर्पोरेट क्षेत्र में प्राप्त की हैं, जो सामान्यतः महिलाओं का मैदान ही नहीं माना जाता। आर्थिक-कॉर्पोरेट जगत में महिलाओं के 'स्टीरियोटाइप' का भंजन करने में नैना अग्रणी रही हैं। 1982 में जब उन्होंने हार्वर्ड बिजनेस स्कूल से एमबीए किया, तो वे इस विश्व प्रसिद्ध संस्थान से डिग्री प्राप्त करने वाली पहली भारतीय महिला बन गई थीं। एएनजेड ग्रिंडलेज में विभिन्न पदों पर काम करने के बाद वे जेएम मॉर्गन स्टैनली में भी रहीं और 2002 से एचएसबीसी के साथ है। फिलहाल वे ग्रुप जनरल मैनेजर तथा एचएसबीसी इंडिया की कंट्री हैड हैं। 'फॉर्च्यून' पत्रिका की 'टॉप' विमेन इन बिजनेस' की वैश्विक सूची में आना तो जैसे नैना के लिए 'रूटीन' बन गया है। 'टाइम' पत्रिका ने भी 2002 में उन्हें विश्व के 15 प्रभावशाली लोगों की सूची मे शामिल किया था। भारत सरकार उन्हें पदमश्री से अलंकृत कर चुकी है। नैना ने बचपन से ही अपनी कुशाग्रता से प्रभावित करना शुरू कर दिया था। उनकी बचपन की सखी प्रसिद्धफिल्म निर्देशक मीरा नायर के अनुसार, वह तो मानो स्कूल में ही एक किंवदंति बन चुकी थी। वह हर साल फर्स्ट आती थी, बेहतरीन डिबेटर थी और हर खेल में स्कूल का प्रतिनिधित्व करती थीं। मात्र 16 साल की उम्र में नैना तय कर चुकी थीं कि उन्हें विजनेस वर्ल्ड में अपना कैरियर बनाना है। अपने जुनून के चलते जल्द ही वे अपने इस सपने को साकार करने में सफल हो गई। इस क्षेत्र में आते ही उन्होंने कॉर्पोरेट जगत को अपनी दूरदृष्टि का कायल करना शुरूकर दिया। उभरते हुए संभावनाशील उद्योगों और कंपनियों की पहचान करने में उनकी नजर मानो अचूक रही। कॉर्पोरेट जगत की ऊंचाईयों को छूते हुए नैना अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों नहीं भूली हैं वे ग्रामीण महिलाओं के लिए रोजगार निर्माण के क्षेत्र में भी सक्रिय रही हैं। साथ ही पर्यावरण के लिए भी काम करती है।

पेट के लिए सैलून, पैशन के लिए रिंग

घर चलाने के लिए सुनीता पारंपरिक पेशा अपनाने मे जरा भी नहीं झिझकीं। आज सैलून मे पुरुषों की कटिंग बनाते हुए उनके हाथ उतने ही सधे होते है, जितने रिंग में मुक्केबाजी के दौरान। सुनीता मिसाल है उनके लिए जो हालात को सपनों से बड़ा मान लेते है।

कोंडागांव- जिले के चिपांवड गांव मे जहां सामान्य सुविधाएं भी बमुश्किल मिलेंगी,

19 वर्षीय सुनीता से मिलना चमकीले कल से साक्षात्कर करने जैसा ही है। चार भाई-बहनों में मंझली सुनीता पिताजी के कमजोर स्वास्थ्य के कारण सैलून में उस्तरा संभलते हुए कहती है। ईमानदारी की रोटी कमाने में भला शर्म कैसी......और इससे मेरे सपने नहीं मरते! कुछ साल पहले बॉक्सिग से जुड़ी सुनीता ने 2010 में राज्य स्तरीय शालेय खेल स्पर्धा में 60 किलोग्राम वर्ग के मुकाबले मे फायनल तक का सफर तय किया। वहीं साल 2011 में राज्यस्तरीय ओपन बॉक्सिग प्रतियोगिता में अपने प्रदर्शन से वाहवाही वटोरी। अब तक के छोटे से सफर मे भी वे अपने दमखम से चमत्कृत करती है। सुनीता का इस खेल में आना हालांकि एक संयोग रहा लेकिन अब वे इस खुद किस्मत द्वारा अपना पथ-प्रदर्शन मानती है। स्कूल में अच्छी वॉलीबाल खिलाड़ी रही सुनीता को शिक्षकों ने बॉक्सिंग में भी हाथ आजमाने को कहा और इसके बाद से उन्होंने सीमित संसाधनों में सफलता के नए आयाम रचे। उनका नाम पिछले दिनों सुर्खियों में आया, जब छत्तीसगढ़ के राज्योत्सव के दौरान ओलिंपिक विजेता मेरी कॉम से उनका मुकाबला तय किया गया। कठिन आर्थिक हालात के कारण सुनीता को 11वीं के बाद पढ़ाई छोड़नी पड़ी और उन्होंने पिता का सैलून संभालना शुरू कर दिया। वे यह काम इतनी सहजता से करती हैं कि ग्राहक भी उनहें इस तरह स्वीकार कर चुके हैं। 12वीं की परीक्षा स्वाध्यायी छात्रा के बतौर देने के लिए काम से वक्त निकालकर तैयारियां कर रही सुनीता साथ में राज्यस्तरीय खिलाड़ी रहे विधान पाठक से बॉक्सिंग का प्रशिक्षण ले रहीं है। कोच विधान का मानना है कि आर्थिक हालात के चलते सुनीता भले ही अभी मंजिल से दूर लगे लेकिन वह वक्त दूर नहीं जब बॉक्सिंग रिंग में उनके मुक्के मंजे हुए खिलाड़ियों के हौसले पस्त कर रहे होंगे।

ज्ञान की अलख पर्याय

दुर्ग जिले के अंतर्गत आने वाले ब्लॉक गुंडरदेही में शमशाद बेगम नाम का पर्याय हो गया है वो महिला जिसका मकसद है शिक्षा की अलख जगाना। एक अभियान के तहत महिलाओं में शिक्षा का प्रचार-प्रसार कर रही शमशाद को जल्द ही अहसास हुआ कि शिक्षा के साथ ही आर्थिक स्वावलंबन भी निहायत जरूरी है। इसका नतीजा है पूरे जिले में हजार से ज्यादा सेल्फ हेल्थ ग्रुप। 2012 में इन्हें पदमश्री मिली। 1990 में सरकार के साक्षरता अभियान से जुड़ी इस ग्रामीण महिला ने हर महिला की साक्षरता का बीड़ा उठाया। इस वक्त वे ब्लॉक में एक महिला संस्था मे कार्यरत थीं। ऐसे में महिलाओं के बीच खास प्रभाव तो दूर शुरूआत में उन्हें शिक्षा का औचित्य समझाने में वक्त लगा। इसके बाद बहुतों ने अक्षर ज्ञान से आग बढ़कर पांचवी तक की शिक्षा भी प्राप्त की। चुनिंदा घटनाओं के बीच शमशाद को लगा कि सिर्फ शिक्षित होना ही काफी नहीं, वरन इसकी सार्थकता आर्थिक स्वावलंबन मे है। ऐसे मे शमशाद की अपील

पर एसएसजी बने। सबसे पहले दो-दो रूपये के आर्थिक योगदान से इन महिलाओं ने मोमबत्तियां और मिटटी तेल आदि लेकर रात में पढ़ाई जारी रखने की शुरूआत की। इसके बाद अपनी सेविंग्स को बैंक में जमा करवाया ताकि वक्त जरूरत पैसे लिए जा सकें, जैसे बच्चों की पढ़ाई शादी-ब्याह और मेडिकल जरूरतें आदि। इनमें से कुछ महिलाओं ने बाकायदा बेनिफिशियल स्कीम्स की ट्रेनिंग भी ली ताकि समूह को और मजबूती दी जा सके। शमशाद समूह की महिलाओं के नाम के आगे कमांडर जोड़ते हुए कारण देना नहीं भूलती कि इनके आत्मबल ने ही शमशाद को ताकत दी कि वे शिक्षा और आत्मनिर्भरता के अपने मिशन को आगे ले जा सकें। वे वकालत करती हैं महिलाओं के आत्मरक्षा के तरीके सीखने का और कुछ समूह ऐसी ट्रेनिंग ले भी रहे हैं। नाबार्ड ने भी इनके 200 समूहों को लिंग-जांच के खिलाफ जागरूकता फैलाने के लिए प्रशिक्षित किया है।

बारह हजार समूहों की नेता

छत्तीसगढ़ का राजनंदगांव जिला अपने अविस्मरणीय अनुभव के लिये जाना जाता है, जहां गुलाबी साड़ी में महिलाओं का एक समूह सुनिश्चित करता दिखता है कि सभी बच्चे स्कूल जाएं, तो कोई समूह साइकल से दूरदराज जाकर भ्रूणहत्या और परदा-प्रथा के खिलाफ जागरूकता फैला रहा है। सात दर्जे तक पढ़ी फुलबासन बाई यादव ने अपनी कोशिशों से यह साबित कर दिया कि मकसद नेक और इरादे पक्के हो तो हर काम संभव है। पदमश्री उनकी कोशिशों पर मुहर है। बतौर सामाजिक कार्यकर्ता 42 वर्षीय फुलबासन बाई लगभग 2 लाख महिलाओं के 12 हजार सेल्फ हेल्थ ग्रुप (एसएचजी) का नेतृत्व कर रही हैं और कई क्रांतिकारी कामों को अंजाम दे चुकी है। मिसाल के तैर पर राजस्थान में भ्रूणहत्या रोकने के लिए एक बड़ी राशि दशक भर मे एसएचजी की हर सदस्य से हर सप्ताह दो-दो रूपए करके जमा की गई। इनके नेतृत्व मे जिले में 'शराबबंदी' की मुहिम ने ढाई सौ से ज्यादा शराब के ठेकों पर ताला जड़वाया। ग्राम सभाओं में जहां पहले महिलाओं की उपस्थिति नहीं के बराबर होती थी, उसकी जगह ले ली है मुखर महिलाओं ने, जो बहुमत में है और अपने मुद्दे बखूबी उठा रही है। 10 साल की उम्र मे इनकी शादी कर दी गई इसलिए बाल-विवाह की तकलीफ भी ये बखूबी जानती है। लिहाजा इसका विरोध भी चुनिंदा मुद्दों में से एक है।

पिछड़े माने जाने वाले जिले में समीकरण बदल रहे है। 'मां बमलेश्वरी जनहित करे' के नाम से इनकी संस्था न सिर्फ सरकारी संस्थानों पर कड़ी नजर रखे हुए है, बल्कि महिलाओं की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने के साथ-साथ उनके स्वास्थ्य, साफ-सफाई और कई अन्य गतिविधियों मे सक्रिय भूमिका निभा रही है। फुलबासन बाई स्वीकारती

है कि हर पुरस्कार के साथ जिम्मेदारी का परिणाम भी बढ़ता जाता है और यह जीवनदर्शन उनके कामों से भी झलकता है।

झारखंड की ''लेडी टार्जन''

झारखंड की चमी देवी मुर्मु को लंबा वक्त लगा साथी महिलाओं को सहमत करने में कि पेड़ो को काटना आने वाली पीढ़ी के लिए किस कदर भयावह हो सकता है। आज इनकी इको-ब्रिगेड एक मिलियन से ज्यादा पौधे लगा चुकी है। जंगल-माफिया और माओवादियों की भी परवाह न कर अपने मिशन में जुटे रहने के कारण आज ये झारखंड की 'लेडी टार्जन' भी कहलाती है। 42 वर्षीय चमी देवी बरिसाई गांव से हैं, जो सराईकेला खरसांवा जिले में आता है। यह जिला रेड कॉरिडोर यानी एक्सट्रीम नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में से है, जिसे मिनिस्ट्री ऑफ पंचायत ने देश के कुछ सबसे पिछड़े इलाकों में शामिल किया है। बहुत से ग्रामीण अशिक्षा और गरीबी के चलते आर्म्ड स्ट्रगल मे शामिल हो गए या जबर्दस्ती झोंक दिए गए। वहीं स्थानीय टिंबर माफिया के कारण दो दशक के भीतर झारखंड के संरक्षित 24 लाख हेक्टेयर जंगल का 50 प्रतिशत काट दिया गया, जो इन आदिवासियों के जीवनयापन का एकमात्र पारंपरिक स्त्रोत थे, चाहे फलों या फिर जलाऊ लकड़ी के रूप में।1988 के बाद से टिंबर माफिया के खौंफ को दरकिनार कर महिलाएं हर संभव कोशिश कर रही है कि जंगल का एक-एक पेड़ सुरक्षित रखा जाए और अब इस मुहिम मे तीन हजार से ज्यादा स्वयं सेवक हैं। ये ब्रिगेड सूंघ लेती है कि कब-कहां अवैध ढंग से पेड़ काटने की योजना बन रही है और तुरंत वहां पहुँच जाती है। साथ ही पौधारोपण भी हो रहा है। पौधारोपण की शुरूआत ऐसे पेड़ों से की गई जो जरूरत पूरी करते हैं। बबूल,नीम, साल, सागौन, शीशम, आम और अमरूद जैसे पेड़ बड़ी संख्या में लगाए गएहैं। वॉटरशेड की मदद से कई तरह की फसलें लगाई जा रही है, जो पहले सिंचाई के अभाव में कारगर नहीं थी। चमी देवी कहती है- संथाल बोली में झारखंड का अर्थ है सोने का टुकड़ा। जंगल के रूप में ईश्वर ने हमें सोने के टुकड़े से नवाजा है, जिसे संभालना हमारा फर्ज है।

आसमान से आगे

अगर कोई सुनीता विलियम्स से पूछे कि 2012 आपके लिए कैसा रहा, तो बहुत संभव है कि वे जवाब दें, ''आउट ऑफ दिस वर्ल्ड''। और वे गलत भी नहीं होंगी। क्योंकि इस साल के चार माह तो उन्होंने धरती से दूर अंतरिक्ष में गुजारे अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के स्पेस मिशन एक्सपेडिशन 33 की कामांडर सुनीता विलियम्स पर भारत को नाज है एक महिला अंतरिक्ष के रूप में 195 दिनों तक 2006-07 अंतरिक्ष में रहने का विश्व कीर्तिमान बनाने वाली सुनीता नासा के अभियान पर जाने वाली भारतीय मूल की दूसरी महिला है। 100 अरब डॉलर का अंतरिक्ष शोध अभियान दुनिया

के 15 देशों के सक्रिय सहयोग से चलाया जा रहा था। और सुनीता का इसकी सफलता में अहम योगदान है। 4 महिने तक अंतरिक्ष में रहने वाली सुनीता का यह दूसरा अंतरिक्ष दौरा था। कुल दो लम्बे मिशनों में सुनीता अंतरिक्ष में कुल 322 दिन बिता चुकी है। अंतरिक्ष में सबसे लंबे समय तक रहने के साथ ही सात बार में कुल 50 घंटे और 40 मिनट तक अंतरिक्ष में चहल कदमी करने का रिकार्ड भी सुनीता के नाम है। सुनीता का जन्म 19 सितंबर 1965 में अमेरिका के ओहायो मे हुआ था। उनके पिता दीपक पांडया अमेरिका में डॉक्टर है और मूलतः गुजरात से ताल्लुकात रखते है। सुनीता विलियम्स को 2008 में भारत सरकार विज्ञान और अभियांत्रिकी के क्षेत्र में पदम विभूषण से संम्मानित कर चुकी है।

भगवान की तलाश में

हमें लगातार सवाल करते रहने चाहिये कुल मिलाकर यही एक स्वस्थ्य समाज का लक्षण है। जरूरी नहीं कि हर सवाल का जबाव मौजूद हो लेकिन इनके जरिये आप अपने जबाव खुद खोज सकेंगे। यह कहना है अर्चना शर्मा का जो आज सर्न (यूरोपीय परमाणु अनुसंधान संगठन) में बतौर वैज्ञानिक लार्ज हेड्रॅान कोलाइडर एक्सपेरीमेंट यानी एलएचपी में अहम जिम्मेदारी निभा रही है।

जुलाई 1960 मे जन्मी अर्चना की स्कूली शिक्षा झांसी के सेंट फ्रांसिस स्कूल में हुई और उन्होंने ग्रेजुएशन तथा पोस्ट ग्रेजुएशन बनारस यूनिवर्सिटी से किया। हालांकि उस वक्त कम्प्यूटर साइंस और इलेक्ट्रानिक्स जैसे विषयों का क्रेज था लेकिन अर्चना ने न्यूक्लियर फिजिक्स का चुनाव किया और इसी विषय मे दिल्ली विश्वविद्यालय से पीएचडी की।

हालांकि गॉड पार्टिकल की खोज में जुटी टीम में आमतौर पर योरपियन नागरिकों को ही स्थायी नौकरी दी जाती है लेकिन भारत की अर्चना शर्मा की प्रतिभा ने परंपरा को उलट दिया। अर्चना शर्मा 2001 से ही यहां स्थायी स्टाफ मेंबर के बतौर तैनात हैं और पूरी शिददत से महाप्रयोग को पूरा करने में जुटी हुई हैं। ब्रह्मांड की उत्पत्ति और विकास के रहस्य से पर्दा उठाने के लिए सर्न द्वारा जेनेवा में यह महाप्रयोग जारी है। उम्मीद की जा रही है यह प्रयोग भौतिकी की कई बुनियादी नियमों का रहस्य खोलेगा।

महिलाओं ने राजनीति की दिशा भी तय की है। महिलाओं ने प्रधानमंत्री, विदेशमंत्री, पंच, सरपंच, बनकर कुशलता से अपने कामों को अंदाज दिया है। हर क्षेत्र मे महिलाओं ने अपनी उपस्थिति में अपने आपको सशक्त बनाया है।

पद्मावती बंदोपाध्याय

भारतीय वायुसेना की पहली महिला एयर मार्शल रहीं। 1968 में इंडियन एयर फोर्स

में शामिल रहीं। 1978 में डिफेंस स्टाफ कॉलेज कोर्स पूरा किया, ऐसा करने वाली पहली महिला अधिकारी बनी। ऐविएशन मेडिसिन विशेषज्ञ बनने वाली व नॉर्थ पोल पर वैज्ञानिक अनुसंधान का संचालन करने वाली पहली महिला। पहली महिला जिन्हें एयर वाइस मार्शल रैंक पर पदोन्नत किया गया। 1971 के भारत-पाक युद्ध के दौरान उन्हें मेधावी सेवा के लिए विश्व सेवा पदक से सम्मानित किया गया।

पुनीता अरोड़ा

सहारनपुर के एक पंजाबी परिवार में जन्मीं, पुनीता अरोड़ा पहली महिला हैं, जिन्होंने दूसरी सबसे बड़ी रैंक, भारतीय सशस्त्र बलों के लेफ्टिनेंट जनरल व भारतीय नौसेना की वाइस एडमिरल पद की उपाधि प्राप्त की। वे 2004 में सशस्त्र बल मेडिकल कॉलेज की कमांडेंट थीं, जो संस्थान के शीर्ष पद पर रही पहली महिला थीं। उन्होंने सशस्त्र बलों के लिए मेडिकल सर्विसेज (एएफएमएस) के अतिरिक्त महानिदेशक के रूप में चिकित्सा, अनुसंधान को-ऑर्डिनेशन भी किया। बाद में, वे सेना से नौसेना में चली गई।

सोफिया कुरैशी

सेना के सिग्नल दस्ते की लेफ्टिनेंट कर्नल सोफिया 2016 में आयोजित एशियन प्लस मल्टीनेशनल मिलिट्री एक्सरसाइज फोर्स 18 में भारतीय सेना के प्रशिक्षण दल का नेतृत्व करने वाली पहली महिला अधिकारी बनीं। ट्रेनिंग के लिए आए सभी सैन्य दलों के बीच वे सैन्य टुकड़ी की एकमात्र महिला कमांडर थी। उन्हें शांति व रख-रखाव प्रशिक्षकों के लिए भारतीय सेना का नेतृत्व करने के लिए चुना गया था।

दीपिका मिश्रा

वे हेलीकॉप्टर एरोबैटिक टीम सारंग के लिए ट्रेंड की गई पहली आईएएफ पायलट बनीं। 2006 में वायुसेना अकादमी से ग्रेजुएशन के बाद वे सूर्य किरण व सारंग जैसी एरोबैटिक टीमों में खुद की कल्पना करने लगी थीं। 2010 में आईएएफ ने सारंग के लिए वालेंटियर महिला पायलटों की खोज शुरू की तो वे सामने आईं। देश के उन्नत लाइट हेलीकॉप्टर दस्ते में शामिल होने वाली पहली महिला बनीं।

निवेदिता चौधरी

2009 में फ्लाइट लेफ्टिनेंट निवेदिता ने आगरा में वायुसेना की टुकड़ी ज्वॉइन की। फिर उन्हें माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने वाले आईएएफ महिला अधिकारियों के वालंटियर का मौका मिला। उनकी टीम की अन्य महिला दस्ते की प्रमुख निरूपमा पांडे व फ्लाइट लेफ्टिनेंट राजिका शर्मा 5 दिन बाद इस चोटी पर पहुंच चुकी थी। ये उपलब्धि हासिल

करने वाली वह राजस्थान की पहली महिला बनीं। साथ ही इस ऊंचाई पर पहुंची एयरफोर्स में पहली महिला।

प्रिया झिंगम

21 सितम्बर 1992 को प्रिया झिंगन के रूप में नामांकित भारतीय सेना में शामिल होने वाली पहली महिला कैडेट बनीं। वकालत की पढ़ाई पूरी कर चुकी झिंगन की ख्वाहिश हमेशा सेना में जाने की थी। 1992 में उन्होंने सेना प्रमुख को एक पत्र लिखा और महिलाओं को सेना में शामिल करने के लिए कहा। एक साल बाद झिंगन व अन्य 24 युवा महिलाओं ने सेना में भर्ती होकर अपनी नई यात्रा शुरू की। जब वे सेवानिवृत्त हुई, उन्होंने कहा यह एक सपना है जिसे में आज भी हर दिन जीती हूँ।

दिव्या अजीथ कुमार

21 साल की उम्र में दिव्या अजीथ कुमार ने सर्वश्रेष्ठ ऑलराउंड कैडेट पुरस्कार जीतने के लिए 244 साथी कैडेट (पुरुष और महिला दोनों) को हराया और प्रतिष्ठित 'स्वोर्ड ऑफ ऑनर' प्राप्त किया जो अधिकारी प्रशिक्षण अकादमी द्वारा कैडेट को दिया गया उच्चतम पुरस्कार है। 'स्वोर्ड ऑफ ऑनर' प्राप्त करने के लिए योग्यता सूची में जीतना आवश्यक होता है, जिसमें फिजिकल ट्रेनिंग स्विमंग, क्षेत्र प्रशिक्षण, सेवा विषयों, बाधा, प्रशिक्षण, डि ्ल परीक्षण आदि शामिल हैं। भारतीय सेना के इतिहास में इस सम्मान को जीतने वाली पहली महिला कप्तान दिव्या अजीथ कुमार ने 2015 में गणतंत्र दिवस परेड के दौरान 154 महिला अधिकारियों और कैडेट के एक महिला दल का नेतृत्व किया।

मिताली मधुमिता

लेफ्टिनेंट कर्नल मिताली मधुमिता वीरता के लिए सेना पदक प्राप्त करने वाली पहली महिला अधिकारी हैं। 2010 में अफगानिस्तान के काबुल में भारतीय दूतावास पर हुए हमले के दौरान दिखाए गए अनुकरणीय साहस के लिए उन्हें यह मेडल दिया गया था। वे काबुल में भारतीय दूतावास पहुंची व कई नागरिकों और आर्मी जवानों को निकाल अस्पताल पहुंचाया। उन्होंने जम्मू-कश्मीर व पूर्वोत्तर में ऑपरेशन के दौरान अनुकरणीय साहस का परिचय दिया था।

इन सभी महिलाओं ने समाज में स्थापित पुरुष वर्चस्व वाले क्षेत्रों की दीवार को भेदा ही नहीं बल्कि रक्षा क्षेत्रों में सबसे अहम ओहदे व विशिष्टता भी हासिल की। उन्हें ये मौके केवल इसलिए नहीं दिये गये कि वे महिलाएं थीं बल्कि उनमें योग्यता थी और अपने सुदृढ़ कन्धों पर नेतृत्व लेने की क्षमता थी। सशक्तिकरण की यह यात्रा अभी जारी है। सभी वीर महिलाओं को नमन।

2.

आत्मनिर्भर होती नारी और स्वसहायता समूह

डॉ.(श्रीमती) असुन्ता कुजूर
प्राध्यापक इतिहास
शासकीय महाविद्यालय, सिराली
जिला-हरदा

गाँव में सामाजिकता पर गौर करे तो पाते है कि किसी भी कार्य में मदद लेने और देने की परम्परा सदियों से चली आ रही है। जैसे- सामुदायिकता की भावना आदिवासी समाज की सबसे बड़ी विशेषता है और यह इसके सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक पहलुओं के तार से भी जुड़ी हुई है। परन्तु आज के पैसा-बाजार प्रतियोगिता पूर्ण युग में मे इसका फैलाव, विकास की प्रक्रिया में सुसंगठित होकर नहीं किया गया। इसके बावजूद सामुदायिकता गरीब व सामाजिक तौर से पिछड़े वर्गों में आज भी किसी न किसी रूप में विद्यमान है।

स्वयं सहायता समूह का इतिहास देखने पर यह पता चलता है कि मुख्य रूप से इसकी शुरूआत देश की प्रतिष्ठित स्वैछिक संस्थाएं जैसे सेल्फ एम्पलाइड वीमन एशोसिएशन अहमदाबाद मयराडा, बंगलौर आदि के माध्यम से हुई थी। मयराडा, (बंगलौर) के इतिहास को देखा जाये तो इस संस्था ने वर्ष 1968 से ही सामाजिक कार्य के प्रति अपनी भूमिका निभानी शुरू कर दी थी। शुरूआत में मयराडा ने मुख्य रूप से चीन युद्ध के पश्चात तिब्बत से आये तिब्बतियों को पुनर्स्थापित करने का कार्य शुरू किया। दूसरे दौर में इस प्रकार वर्ष 2000 तक लाखों लोगों को सुविधाऐं देकर उनके जीवन स्तर को उठाने का लक्ष्य बनाया।

उपयुक्त कार्यक्रम में स्वयं सहायता के सन्दर्भ में मुख्य रूप से मयराडा ने निम्न मुद्दों पर विशेष जोर दिया। जैसे -

- सामुदायिक क्रियाशील समूह के माध्यम से जीवन पद्धति।

- महिलाओं को संगठित करना जिससे स्वयं सहायता समूहों को बढ़ावा दिया जा सके।

इस प्रकार अनुभव के आधार पर निम्नलिखित बाते सीखने की दृष्टि से उभर कर आयी।

1. समुदाय जिनकी आर्थिक एवं सामाजिक पहलुओं में समानता हो एक छोटे समूह के माध्यम से अपनी-अपनी आवश्यकताओं, समस्याओं, भावनाओं, अपेक्षाओं आदि उम्मीदों को लेकर निरंतर प्रयास करते है। अतः अपनी-अपनी प्रक्रिया में उनके उत्साह को निरंतर जागृत करना एक महत्वपूर्ण अंग है।
2. समान स्तर के सदस्य वही सीखने का प्रयास करते है जो उन्हें रूचिकर लगता है।
3. इस समान स्तरीय समूहों के सदस्यगण अपने-अपने ज्ञान के प्रति जागरूकता का स्वयं के अंदर की क्षमता को विकसित कर अपने व्यवहार में लाने के प्रति उत्साहित रहते है।
4. यह सदस्य-समूह मुख्य रूप से अपने समूह के द्वारा स्वचालित होकर अग्रसर होने का प्रयास करते है।
5. यह समान स्तर के समूह के सदस्यों के साथ-साथ दूसरों को भी विकास की और लाना चाहते है।

स्वयं सहायता समूह का औचित्य

गाँव में कुल आबादी का 75 प्रतिशत से भी अधिक आबादी का प्रमुख आधार खेती है। ऐसे ग्रामीणों की अनेक समस्याएं हैं। पहली यह कि खेती के अतिरिक्त अन्य आय का साधन इनके पास नहीं होते है। दूसरा यह कि खेती में 5 से 6 माह तक काम मिलता है, इसलिए बचे ग्रामीणों को आय के लिए प्रयत्न करना पड़ना है और आवश्यता पड़ने पर इन्हें अपनी जमीन व गहनों को गिरवी रखनी पड़ती है, और परिस्थिति से मजबूर होकर इसे छुड़ा भी नहीं पाते हैं। इसी बीच यदि अन्य समस्याएं (बीमारी, मृत्यु, पर्व आदि) आ जाये तो बंधक रखने की सीमाएं बढ़ जाती हैं। बैंक, शाखाओं की वृहद नेटवर्क होते हुए भी ग्रामीणों की पहुंच वहां तक नहीं है। चूँकि निर्धनों की जरूरतें छोटे ऋणों से संबंधित होती है, साथ ही उनकी आवश्यकताएं उपयोग और उत्पादन दोनों उद्‌दश्यों से जुड़ी है, बैंक वाले इसे खतरा मानते है और उधार देने से हिचकते हैं। इन समस्याओं से उबरने के लिए एक अकेला व्यक्ति तो सम्भवतः कुछ नहीं कर सकता है। परन्तु कुछ लोग मिलकर अपनी छोटी आय से थोड़ी-थोड़ी बचत करते-करते एक पूँजी जमा कर सकते है। इसी पूँजी से वे एक दूसरे की मदद करते है और इसका उपयोग करके धीरे-धीरे जमीन छुड़ाते हैं। इस प्रक्रिया में काफी समय लग जाता है।

परन्तु कार्यसेवी संस्थाओं की मदद से कुछ हद तक अपनी समस्याओं का समाधान करते हैं।

स्वयं सहायता समूह समान सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि वाले 10-20 सदस्यों का एक स्वैच्छिक समूह है जो :-

- नियमित रूप से अपनी आमदनी से थोड़ी-थोड़ी बचत करते हैं।
- व्यक्तिगत राशि को सामूहिक विधि में योगदान के लिए परस्पर सहमत रहते हैं।
- सामूहिक निर्णय लेते हैं।
- सामूहिक नेतृत्व के द्वारा आपसी मतभेद का सामाधान करते हैं।
- समूह द्वारा तय किये गए नियमों एवं शर्तों पर ऋण उपलब्ध कराता है।

भारत में स्वयं सहायता समूह अपेक्षाकृत नया प्रयोग है लेकिन पिछले लगभग एक दशक से देश भर में, विशेषकर दक्षिणी राज्यों में स्वयं सहायता समूहों (सेल्फ हेल्प ग्रुप) की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है और इसे ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण का नया कारगार औजार माना जाने लगा है। सबसे अधिक स्वयं सहायता समूह आन्ध्र प्रदेश में चल रहे हैं। स्वयं सहायता समूह वास्तव में महिलाओं का एक अनौपचारिक समूह है जो अपनी बचत तथा बैंकों से लघु ऋण लेकर अपनी सदस्याओं की पारिवारिक जरूरतें पूरी करते हैं और विकास गतिविधियाँ चलाकर गांव में गरीबी दूर करने और महिला सशक्तिकरण में योगदान देते हैं।

ये समूह आपसी एकजुटता, स्वयं सहायता और सामूहिक जिम्मेदारी की धारणा को लेकर चलते हैं इसलिए इनमें प्रायः एक जैसी आर्थिक और सामाजिक स्थिति के लोग एक साथ आते हैं। इससे उनमें ऊँच-नीच की भावना नहीं रहती और छोटी से छोटी बचत जमा करने में भी उन्हें संकोच नहीं होता। सारी व्यवस्था क्योंकि आपसी भरोसे पर टिकी है इसलिए कर्ज वापिस लेने में विशेष कठिनाई नहीं होती है। इससे समूह की सदस्याओं में यह आत्म विश्वास भी पैदा हो जाता है कि वे इतनी सक्षम है कि कर्ज लेकर उसे लौटा भी सकती है। मोटे तौर पर कह सकते हैं कि स्वयं सहायता समूह का मुख्य उद्‌देश्य महिलाओं को बचत और ऋण उपलब्ध कराना है।

गरीबी दूर करने में स्वयं सहायता समूहों का योगदान

बांग्लादेश के चर्चित ग्रामीण बैंक की उपलब्धियों की ख्याति के बाद यह बात भारत में भी महसूस की जा रही है कि लघु वित्त के जरिये लोग, विशेषकर निर्धन ग्रामीण महिलाएं अपनी और अपने परिवार की उन्नति कर सकती है। भारत में यूं तो स्वयं सहायता समूहों की शुरूआत 1952 में राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक

''नाबार्ड'' की योजना 'एस एस जी बैंक लिकेंज प्रोग्राम' के रूप में हुई थी किन्तु इस अवधारणा को व्यवहारिक लोकप्रियता पिछले एक दशक में मिली है। विभिन्न रिपोर्टों से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार देश में करीब 25 लाख समूह बने हुऐ हैं, जिसमें 7.8 करोड़ परिवारों के लाभान्वित होने का अनुमान है, इनमें 90 प्रतिशत से अधिक समूह महिलाओं के हैं। केन्द्रीय महिला और बाल कल्याण मंत्रालय की महिला सशक्तिकरण की चर्चित योजना स्वयंसिद्धा तो पूरी तरह इन्हीं महिला समूहों के माध्यम से ही लागू की गई है। वास्तव में इन समूहों की अवधारणा के पीछे यही तथ्य है कि हमारे देश में अत्यधिक गरीब लोगों में 60-65 प्रतिशत संख्या महिलाओं की ही है। महिलाएं और उनमें भी ग्रामीण महिलाएं हमारे समाज का सबसे अधिक उपेक्षित ओर दुर्बल वर्ग है। इसीलिए महिलाओं की गरीबी दूर करने तथा उनमें वित्तीय दृढ़ता लाकर उनके सशक्तिरण के उद्देश्य से स्वयं सहायता समूहों को बढ़ावा दिया जा सकता है।

स्वयं सहायता समूहों की उपयोगिता ग्रामीण परिवारों की गरीबी दूर करने से अधिक महिलाओं के सशक्तिकरण में सिद्ध हुई है। इस सच्चाई से इन्कार नहीं किया जा सकता कि महिलाओं की आर्थिक और सामाजिक स्थिति में सुधार लाये बिना समाज की उन्नति का सपना पूरा नहीं हो सकता। स्वयं सहायता समूहों में मुख्य रूप से महिलाएं ही भागीदारी कर रही हैं इसलिए परिवार के उत्थान में उनकी भूमिका बढ़ रही है। हालांकि हमारी सामाजिक व पारिवारिक परिस्थितियाँ महिलाओं को ज्यादा बढ़-चढ़कर काम करने की अनुमति नहीं देती लेकिन जब महिलाएं परिवार के हित के लिए काम करती हैं तो पितृ सत्तात्मक व्यवस्था उनके श्रम व कौशल को मान्यता देती है और स्वयं महिलाओं में आत्म विश्वास और आत्म सम्मान का भाव सुदृढ़ होता है। उनका सम्मान बढ़ने से परिवार में लड़कियों के प्रति भेदभाव व उपेक्षा कम होती है इस प्रकार समूहों की बदौलत धीरे-धीरे ग्रामीण महिलाओं का सामाजिक व आर्थिक रूतवा बढ़ रहा है। जो घर के आर्थिक फैसलों में प्रायः महिलाओं की राय को ज्यादा महत्व नहीं दिया जाता किन्तु जब वे अपनी क्षमता और कौशल के विकास से न केवल बच्चों की पढ़ाई व दुख-सुख के मौके पर परिवार की वित्तीय जरूरतें पूरी करने के लायक बन रही हैं तो निर्णय लेने के स्तर पर भी उनकी राय को महत्व मिलने लगा हैं। बचत का पैसा जमा हो जाने से लघु ऋण की सुविधा मिलने से महिलाएं अपनी व्यक्गित जरूरतें भी पूरी कर सकती हैं जिससे वे अपने स्वास्थ्य और रहन-सहन का स्तर बेहतर बना सकती हैं।

महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में स्वयं सहायता समूहों का योगदान

महिला सशक्तिकरण के लिए स्वयं सहायता समूहों को अधिक सार्थक व उपयोगी बनाने के लिए जरूरी है कि महिलाओं की क्षमताएँ एवं कौशल बढ़ाने की दिशा में कदम

उठाये जायें। जैसा कि पहले भी कहा गया है कि समाज में परम्परागत रूप से खेती व पशु पालन को छोड़कर बाहर के कामों में लड़कियों की भागीदारी को हतोत्साहित किया जाता है। उन्हें स्वतंत्र रूप से कोई काम नहीं करने दिया जाता। स्वयं सहायता समूह से ऋण लेने, बैठकों में जाने और व्यवसायिक गतिविधियों में धन लगाने जैसे कामों के सिलसिले में औरतों को बाहर जाना होता है। और कुछ औपचारिकताऐं पूरी करनी होती हैं। ये सभी काम वे तभी कुशलता के साथ कर सकती हैं जब उन्हें प्रशिक्षण देकर इन गतिविधियों को चलाने के तौर-तरीके सिखाये जायें।

सत्ता प्रतिष्ठानों तथा बैंकों में स्वयं समूहों के प्रति उपेक्षा का मुख्य कारण यह प्रतीत होता है कि यह समूह मुख्यतः महिलाओं द्वारा चलाये जाते हैं। महिलाओं को गम्भीरता से न लेने और उन्हें दुर्बल मानने की सदियों पुरानी मनोवृत्ति ही इस उपेक्षा व भेदभाव के लिए जिम्मेदार है। प्रशिक्षण और चेतना पैदा करने से इस प्रवृत्ति पर भी अंकुश लगया जा सकता है। जाहिर है कि स्वयं सहायता समूह व्यवस्था गांव में गरीबी दूर करने और महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है जो समय के साथ-साथ अपनी कमजोरियों पर काबू पाते हुए आगे बढ़ता जायेगा। सरकार, स्वयं सेवी संगठन, बैंक, पंचायतें तथा गांव के लोग इस नई अवधारणा को सफल बनाने में अपनी-अपनी भूमिका ईमानदारी से निभाऐगें तो निःसंदेह ग्रामीण महिलाओं का यह छोटा सा प्रयास एक बड़े अभियान का रूप धारण कर लेगा और देश के सभी राज्यों में इसका विस्तार हो सकेगा।

महिला-पुरुष समानता लाने में स्वयं सहायता समूहों का योगदान

महिला एवं पुरुष श्रमिक समान मजदूरी के हकदार हैं कुछ लाभार्थियों में से एक तिहाई महिलाओं का होना अनिवार्य है, तथा महिलाओं को गांव में ही कार्य दिया जाऐगा। भारतीय नारीवाद का अर्थ है सामाजिक स्वीकार्यता के साथ स्वाधीनता, और अर्ध-सामंती खांचे-ढांचे के भीतर स्वायत्तता लेकिन बहुसंख्य आबादी के लिए इसका कोई अर्थ नहीं।

स्वयं सहायता समूह व्यवस्था का विकास व अन्य समुचित एजेन्सियों से जुड़ाव नहीं हो पाया है, वे एक अलग ईकाई के रूप में कार्य करते हैं जिससे कोई बड़ी या महत्वपूर्ण गतिविधियों को हाथ में नहीं ले पाते। इसका परिणाम यह होता है कि उनमें उत्साह नहीं रहता और निष्क्रिय होने लगते हैं। यदि इन समूहों को सरकारी परियोजनाओं या पंचायत के कार्यों से जोड़ दिया जाये, तो इनकी उपयोगिता निश्चित रूप से बढ़ जायेगी। पंचायतें ग्रामीण क्षेत्र की स्थानीय संस्थाएं हैं जिनमें महिलाओं की भागीदारी अवश्य होनी चाहिए। पंचायतों से जुड़कर स्वयं सहायता समूह स्थानीय स्वशासन में हिस्सेदारी कर सकते हैं और साथ ही राज्य सरकार के विभिन्न

परियोजनाओं के बारे में सुझाव भी दे सकते हैं।

ये महिलाएं आज इस मुकाम पर इसलिए है क्योंकि वे जिस समाज में रह रहीं हैं वह नारी की पूजा करने की बात तो करता है लेकिन सच से मुँह चुराता है। वे कारोबार खड़ा करने से लेकर आन्दोलन तक संगठित कर रहीं हैं।

भारत में स्व सहायता समूह बैंक लिंकेज कार्यक्रम की उत्पत्ति और अवधारणा

औपचारिक ऋण प्रणाली के लचीलेपन, सुग्रहिता, अनुक्रियाशीलता जैसे गुणों को औपचरिक ऋण संस्थाओं की तकनीकी क्षमताओं और वित्तीय संसाधनों के साथ संयोजित करने पर ऋण वितरण प्रणाली में सकारात्मक नवीनतायें लाने की दृष्टि से राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) ने फरवरी 1992 में स्वयं सहायता समूहों को वाणिज्य बैंकों जोड़ने केलिये पायलट परियोजना शुरू की थी। जिसमें (बाद में) सहकारी बैंकों और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों को भी शामिल कर लिया गया। यह जुड़ाव इस विचार में भी था कि औपचारिक और अनौपचारिक ऋण प्रणाली के अच्छे गुणों को समायोजित कर सकें।

स्वयं सहायता समूह के औपचारिक एवं अनौपचारिक ऋण व्यवस्था के गुणों का समायोजन :-

अनौपचारिक (महाजन, पड़ोसी		**औपचारिक (बैंक)**	
दोष	**गुण**	**दोष**	**गुण**
	स्थानीय एवं परिचित	छोटा कर्ज	शोषण नहीं
	समय और ऋण	ज्यादा खर्च और लम्बी प्रक्रिया	ब्याज कम
	कर्ज लेने एवं देने वाले के बीच व्यक्तिगत सम्पर्क एवं संलग्नता	सोच है कि गरीब कर्ज लायक नहीं है।	खुशामद नहीं।
		व्यक्ति सम्पर्क का अभाव	सशक्तिकरण (अपनी इच्छा निर्णय शक्ति पर)
	दुबारा कर्ज	कर्ज वापसी में वातावरण की कमी। उत्पादन के लिए मात्र	

	कर्ज (मिश्रित उद्देश्य)
पर्याप्त कर्ज	जमानत की जरूरत
कम कागजात	
आसान और शोध	

कुछ चयनित गैर सरकारी संस्थाओं एवं बैंकों की मदद से ही से ही पायलट परियोजना का कार्यान्वयन हुआ। वर्ष 1992-93 में स्वयं सहायता समूह को विभिन्न बैंकों से जोड़ा गया। पायलट परियोजना में मात्र 500 स्वयं सहायता समूह जोड़ने का लक्ष्य रखा गया था। जबकि वर्ष 1993-94 में 650 समूहों को जोड़ा गया। जबकि वर्ष 1994-95 में या लिंकेज की संख्या 2212 हुई जिसमें बैंक कर्ज रू. 224.5 लाख थी। इस प्रायोगिक खंड का स्वयं सहायता समूह बैंक लिंकेज कार्यक्रम की सफलता से आकर्षित होकर भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर ने एक कार्यकारी समूह का गठन किया जिसमें प्रसिद्ध गैर सरकारी एकेडमशियन (प्रबुद्ध शिक्षा विद), बैंक पदाधिकारीगण इत्यादि थे और नाबार्ड के प्रबंध निदेशक श्री एम. के. कालिया की अध्यक्षता में इस टीम ने पूर्ण अध्ययन किया। इस टीम ने स्वयं सहायता समूह को बैंक लिंकेज कार्यक्रम की एक सफल एवं प्रभावी पूरक ऋण वितरण प्रणाली पाया और भारतीय रिजर्व बैंक को अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। भारतीय रिजर्व बैंक ने इस कार्यकारी दल के दौर में स्वयं सहायता समूह बैंक लिकेज कार्यक्रम को लाया गया।

स्वयं सहायता समूह द्वारा बैंक में मात्र बचत खाता योजना लिंकेज नहीं माना गया है, यह एक परिचय मात्र है। लिंकेज का पूर्ण स्वरूप है बैंक से न केवल कर्ज का लेन-देन हो बल्कि दोनों के बीच व्यवहारिक सम्बन्ध स्थापित हो।

इस प्रकार वर्ष 1995 में इस कार्यक्रम का प्रायोगिक दौर समाप्त हो गया। भारतीय रिजर्व बैंक ने दिनांक 2 अप्रैल 1996 को अपने परिपत्र के जरिये स्वयं सहायता समूहों को दिए गए ऋण में प्राथिमकता क्षेत्र अग्रिमों के तहत शामिल किये जाने का निर्देश दिया। यह एक ऐतिहासिक कदम है। स्वयं सहायता समूह रिजर्व बैंक के हासिल दिशा निर्देशों की मुख्य विशेताऐं

स्वयं सहायता समूहों को ऋण देना बैंकों की ऋण गति-विधियों की मुख्यधारा का भाग होगा।

1. बैंकों को अपनी कार्पोरेटरणनीति, योजना, अपने अधिकारियों व कर्मियों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में स्वयं सहायता समूहों के अनुबंधों/सम्पर्क को शामिल करेंगें।
2. स्वयं सहायता समूहों की ऋण अदाएगी अभिप्राय चाहे तो भी उन्हें प्राथमिकता के आधार पर अग्रिम भुगतान मद में शामिल किया जाना है।

3. स्वयं सहायता समूह ऋण भुगतान को बैंकों द्वारा अपने सेवा क्षेत्र योजना में शामिल करना है। शाखाएँ स्वयं समूहों को ऋण भुगतान हेतु अपना कार्यक्रम तय कर सकती है।
4. गैर सरकारी सस्थाएं/स्वयं सहायता समूह स्वविवेक में सेवा क्षेत्र की शाखाओं से सेवाए प्राप्त कर सकती है, यदि ऐसी शाखाओं के प्रति वे अधिक आश्वस्त हैं और उन्हें भरोसेमंद समझती है।
5. स्वयं सहायता समूह अग्रिम अदायगी को एल.बी.आर. प्रतिवेदन प्रणाली में शामिल किया जाना चाहिए और उनका पुनर्मूल्याकंन होना चाहिए।
6. बैंकों को अनौपचारिक समूहों, जैसे स्वयं सहायता समूहों का बचत खाता खोलना है।
7. मार्गदर्शी योजना के अंतर्गत (आर. बी.आई.परिपत्र, दिनांक 24 जुलाई 1991) अतिरिक्त राशि, प्रतिभूति मानदंडो आदि से सम्बन्धित लचीलेपन की जो छूट है उसे जारी रखा जाएगा।
8. समय-समय पर बैंक स्वयं सहायता समूहों पर गैर सरकारी संस्थाओं से ब्याज अधिकार लगा सकती है जैसा नाबार्ड द्वारा निर्धारित है।
9. बैंक स्वयं सहायता समूहों के ऋण भुगतान के लिए सामान्य दस्तावेजकरण निर्धारित कर सकते हैं। आर.बी.आई. द्वारा विहित मानक प्रपत्र अपनाएं जा सकते है।
10. स्वयं सहायता समूह अपने कुछ बाकीदारों के साथ भी बैंकों से वित्तीय सहायता प्राप्त कर सकते है बशर्ते बैंक द्वारा प्रदत्त राशि का उपयोग समूह द्वारा बाकीदारों को वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए न किया जाए।
11. नाबार्ड द्वारा प्रकाशित परिचालन निर्देशों का प्रचलन जारी रहेगा।

लिंकेज परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य है-

1. गरीबों की ऋण जरूरतों को पूरा करने के लिए पूरक ऋण नीतियों का विकास करना है।
2. बैंकों एवं ग्रामीणों गरीब जनता के बीच परस्पर विश्वास/भरोसा पैदा करना।
3. ग्रामीण गरीब जनता में बचत व ऋण दोनों तरह के बैकिंग कार्यकलापों को प्रोत्साहित करना।

स्वयं सहायता समूह बैंक लिंकेज कार्यक्रम का प्रमुख तर्क

1. गरीबों में बचत करने की क्षमता होती है।
2. गरीबों को बैंक के द्वारा सुविधा दी जा सकती है।
3. गैर सरकारी संस्था एक सहयोगी के रूप में कार्य करता है।
4. समूह को बैंक से कर्ज मिल सकता है।
5. कर्ज सम्बन्धी निर्णय समूह के अपने नियम के अनुसार हो सकता है।
6. समूहों में सामान्य गति से उन्नति की प्रवृत्ति रहती हे।
7. समूह को आकस्मिक स्थिति में भी हमेशा कर्ज प्राप्त होती रहती है।

स्वयं सहायता समूह बैंक लिंकेज कार्यक्रम से लाभ

बैंक के लिए :

1. ऋण चक्र में मूल्यांकन, निर्गत, निरीक्षण एवं भुगतान प्रक्रिया में होने वाली लागत में कमी।
2. बड़े स्तर पर छोटी बचत का जमा गतिमान होना।
3. सुनिश्चित एवं समय पर भुगतान होने के कारण कोश का तेजी से पुनः चक्रीय होना।
4. गरीब वर्ग को समाहित करने के साथ-साथ व्यापार में विस्तार करने का अवसर।
5. दूरदर्शिता ग्राहक आधारित भविष्य तैयार करना।

स्वयं सहायता समूह के लिए

1. गरीबों के बीच बचत आदत विकास करने का माध्यम।
2. वृहत पैमाने पर संसाधन की उपलब्धता।
3. एक स्थान से बेहतर तकनीकी एवं बौद्धिक ज्ञान वर्द्धन की सुविधा।
4. अपने क्षेत्र में ही आपातकालीन उपयोग एवं उत्पादन कार्य हेतु कर्ज की उपलब्धता।
5. विभिन्न प्रकार का प्रोत्साहन सहायता का उपलब्ध होना।
6. स्वतंत्रता, समानता, आत्मनिर्भरता और सशक्तिकरण सुनिश्चित होना।
7. महिला और कमजोर वर्गों का सशक्तिकरण।

लिंकेज कार्यक्रम में बैंक की भूमिका

1. स्वयं सहायता समूह को बचत खाता संचालन की सुविधा देना।
2. समूह को ऋण देने में लचीलापन रूख रखना।
3. ऋण के समय जमानत ओर मार्जिन राशि पर छूट देना।
4. गैर सरकारी संस्था एवं समूह के साथ सम्बन्ध बनाना और समूह के स्वस्थ संचालन/मधुर लिंकेज पर ध्यान देना।
5. मार्गदर्शन एवं लगातार सम्बन्ध रखने की प्रक्रिया के द्वारा ऋण लेन-देन कार्य-कलाप के बारे में गैर सरकारी/संस्था/समूह को विश्वास में लाना।
6. समूह को बैंक के योग्य योजनाओं/कार्यकलापों का विवरण उपलब्ध कराना।
7. यदि अपने क्षेत्र में गैर सरकारी संस्था कार्य न करती हो तो बैंक को समूह सहायता प्रोत्साहन संस्थान के रूप में कार्य करना।

स्वयंसेवी संस्थाओं की भूमिका

1. ग्रामीणों को उत्प्रेरित और संगठित करके स्वयं सहायता समूह में लाना।
2. बचत की भावना का प्रोत्साहित करते हुए संस्थागत और व्यक्तिगत विकास की ओर ले जाना।
3. समूह के सदस्यों को खाता-वही के रख-रखाव बैठक संचालन और कोष प्रबंधन पर शिक्षण प्रशिक्षण का आयोजन करना।
4. आवश्यक पूंजी की सहायता देने हर समूह के प्रारंभिक स्तर की संसाधन उपलब्धता को प्रगति प्रदान करना।
5. बैंक के.......सहबद्ध एनजीओ एकफेसिलिटेटर के रूप में कार्य करें।
6. संसाधन का अधिकतम उपयोग करते हुए समूह सदस्यों को तकनीकी और बौद्धिक क्षमता का विकास करें।
7. समूह का एक मित्र, दार्शनिक और मार्गदर्शक के रूप में कार्य करें।

उपरोक्त तमाम बिन्दुओं पर गौर करने पर पाते है प्रमुख स्वयंसेवी संस्थओं (SEWA -अहमदाबाद, मयराडा, बंगलौर) ने अपने कार्यों के द्वारा सरकारी नीति को प्रभावित किया है और विकास के आयामों को जमीनी स्तर पर खड़ा करने का प्रयास किया है। साथ ही यह भी स्पष्ट है कि समस्या की व्यापकता को देखते हुए सरकारी ओर गैर सरकारी संस्थाओं को कंधे-से-कंधा मिलाकार चलना होगा। परन्तु प्रश्न है कि

अच्छी तरह से पनपी/उभरी हुई इन स्वयंसेवी और सरकारी (प्रखंड में राज्य, राज्य से केन्द्र तक) के नेटवर्क को क्या कार्यान्वयन के स्तर पर आज तक व्यावहारिक स्वरूप दिया जा सका है।

स्वयं सहातया समूह-बैंक लिकेंज-नीति निर्देशिका

स्वयं सहायता समूह का निर्माण एक चरणबद्ध प्रक्रिया है जो सह-लीकेज तरीके से आगे बढ़ता है। ऐसा देखा गया है कि समूह के सदस्य शुरूआत में उपयोग कार्य (ग्रामीण, शादी, शिक्षा इत्यादि) में ज्यादा खर्च करते है। कुछ समय उपरांत खर्च उत्पादन कार्य की ओर बढ़ता है ओर जैसे-जैसे समूह पुराना होता हो, उसके कर्ज धारणा की क्षमता भी बढ़ती है। उम्मीद रहता है कि अब समूह अनुभवी हो चुका है ओर सभी प्रकार का कर्ज प्रबंधन क्षमता प्राप्त कर चुका है। इसी वक्त समूह का पर्याप्त कोष की आवश्यकता होती है ओर इस हेतु किसी स्थानीय वित्तीय संस्था से सहबद्ध किया जाता है। जिसे निम्न शर्तो व प्रक्रियाओं की आवश्यकता होती है।

स्वयं सहायता समूह बैंक के चयन हेतु मापदंड

1. समूह के सदस्यी की संख्या 10 से 20 के बीच होनी चाहिए।
2. समूह निबंधित भी हो सकता है और नही भी
3. समूह को अपने लिए एक आचार संहिता बनानी चाहिए जो सभी को बांध सके।
4. आंतरिक बचत प्रक्रिया समूह की मूल है अतः यह होना चाहिए।
5. समूह को तय है कि कर्ज किस उद्देश्य से अपने सदस्य को दिया है।
6. सदस्यों को दी जाने वाली ऋण और बचत का सूद दर उनके द्वारा ही तय किया जाना चाहिए।
7. समूह को लोकतांत्रिक ढंग से कार्य करना चाहिए जिसमें सदस्यों को विचारों के आदान-प्रदान व सहभागिता की छूट हो।
8. समूह को सामान्य रिकार्ड रखना चाहिए।
9. समूह कम से कम छः माह से सक्रिय रूप से अस्तित्व में हो और दूसरे बैंक का डीफाल्ट न हो।
10. समूह की स्थापना के औचित्य तथा इसके उ्देश्यों के प्रति बैंक संतुष्ट होना चाहिए।

स्वयंसेवी संस्थाओं के चयन के लिए नाबार्ड की कुछ को शर्त है जो निम्न हैः

1. स्वैच्छिक संस्था/एजेंसी का पिछला रिकार्ड अच्छा होना चाहिए।

2. संस्था में पिछले 3 वर्षों का बही खाता सुव्यवस्थित ढंग से किया गया हो। उसकी बैलेस सीट भी आडिट की गई है।
3. वित्तीय प्रबंध की क्षमता होना चाहिए।
4. संस्था समाज के गरीब वर्गों के समूहों के साथ उनके विकास के लिए कार्य कर रही है।

इसी तरह स्वयं सहायता को बैंक के साथ जोड़ने की भी शर्तें हैं-

1. पिछले 6 महिनों से समूहों सक्रिय भूमिका निभा रहा हो।
2. समूह बचत एवं उधार की प्रक्रिया स्वयं के संसाधनों से सफलतापूर्वक चला रहा है।
3. समूह निर्माण की प्रक्रिया में समूह के सदस्यों के बीच परस्पर मदद करने तथा मिलकर काम करने की भावना नजर आनी चाहिए।

स्वयं सहायता समूह का बैंक में बचत खोलना

क. बचत खाता कब और कहाँ खुलवायें?

समूह गठन के बाद सदस्यों के बीच आपसी लेन-देन (बचत-ऋण) की प्रक्रिया शुरू हो जानी चाहिए।

समूह के पदाधिकारी को (सक्रिय सदस्यों के साथ) नजदीकी बैंक के प्रबंधक व पदाधिकारियों से सम्पर्क करना चाहिए और समूह उद्देश्यों से परिचित करवाना एवं बैठकों में आने का आमंत्रण देना चाहिए।

भारतीय रिजर्व बैंक के निर्देशों के अनुसार स्वयं सहायता समूहों के लिए सेवा क्षेत्र के बैंक शाखा के अलावा अन्य शाखा में भी बचत खाता खेल सकते है।

ख. बैंक में खाता खुलवाने के लिए निम्न कागजात की जरूरत है

समूह का प्रस्ताव जिसमें समूह पदाधिकारियों (अध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष) को बचत खोलने व खाता संचालन का अधिकार हो।

- समूह अध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष के दो-दो फोटो
- परिचय हेतु बैंक खाताधारी का फार्म पर हस्ताक्षर। यह कार्य स्वयं सेवी संस्था भी कर सकती है।
- समूह की मोहर।

मध्य प्रदेश में 2017 तक लगभग 16 हजार 261 महिला स्व-सहायता समूहों का

गठन हो चुका है। इन समूहों से जुड़कर 2 लाख 05 हजार 644 महिलाएं लाभ पा रही है। कार्यक्रम के तहत अनेक जिलों में प्रत्येक ग्राम में चार से पाँच स्व-सहायता समूहों को मिलाकर एक ग्राम स्तरीय समितियां भी गठित की गई है। लगभग सभी जिलों में वर्ष 2016-17 तक 2.682 गाँवों में कुल 2.629 ग्राम स्तरीय समितियां कार्यरत हैं।

स्व-सहायता समूहों की शीर्ष संस्थाओं के रूप में साठ स्थानों पर साठ फेडरेशन (परिसंघ) भी गठित किये गये है। प्रत्येक फेडरेशन में तीन से साढ़े तीन हजार तक महिला सदस्य है। फेडरेशन स्वतंत्र रूप से सहायता समूहों के गठन, सुदृढ़ीकरण और ग्रेडिंग का कार्य कर रहे है। फेडरेशन के सदस्यों को इसके लिए विधिवत प्रशिक्षित किया जाता है।

संयुक्त राष्ट्र सघ में गूंजा स्व सहायता समूह

डिण्डोरी जिले में कोटो-कुटकी जैसे मोटे अनाज के स्व-सहायता के माध्यम से विपणन के प्रभावी प्रबंधन से जनजातीय आबादी वाले इलाकों में जीविकोपार्जन का जो नवाचार तेजस्विनी योजना से आरम्भ हुआ था उसकी व्यापक चर्चा रही। महिला सशक्तिकरण पर संयुक्त राष्ट्र संघ मुख्यालय न्यूयॉर्क में जब वैश्विक समागत हुआ तो डिण्डोरी की तेजस्विनी स्व-सहायता समूह की श्रीमती रेखा पन्द्राम को न्यूयॉर्क आमंत्रित किया गया। संयुक्त राष्ट्र संघ की इस प्रस्तुति से तेजस्विनी स्व-सहायता समूह को अन्तर्राष्ट्रीय पहचान मिली।

महिलाओं को स्वसहायता समूह एक ऐसा माध्यम बनकर उभरा है जिसके जरिऐ महिलायें अपने समय का समुचित प्रयोग कर आर्थिक और मानसिक रूप से स्वाबलम्बी बन रही है।

ऐसे समूहों के साथ प्रत्यक्ष बातचीत और काम के आकलन और पुनरावलोकन के दौरान अनके मिली जुली बातें सामने आई। बचत वाले इन स्व सहायता समूहों ने महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ाया है। उनकी बचत ने गांवों में महाजन पर उनकी निर्भरता घटाई है तथा समाज और परिवार में सम्मान की वृद्धि की है। अब काम के लिये बाहर निकलती है, मिलती-जुलती है और बैंकों में खाते खोलने के लिये हस्ताक्षर करती है। बहुत ही आसानी से मोबाइल आपरेट करती है, कम्प्यूटर चलाती है। आर्थिक स्वाबलम्बन के लिये बने इन समूहों ने महिलाओं को निर्भीकता भी दी है।

स्वसहायता समूह से जुड़े कुछ मुद्दे भी है। इन्हें अधिक सार्थ व उपयोगी बनाने के लिये जरूरी है कि महिलाओं की क्षमताओं का विकास किया जाये। उन्हें प्रशिक्षण देकर उनके कौशल में वृद्धि की जाये। स्वसहायता समूह के माध्यम से महिलायें स्वाबलम्बन की ओर अग्रसर है। और साथ ही आगे हैं अपने अस्तित्व से एक कदम।

सतपुड़ा और विन्ध्याचल के नैसर्गिक सौन्दर्य से समृद्ध नर्मदा के किनारे बसा होशंगाबाद अंचल अपनी परम्परागत सांस्कृतिक परम्पराओं के कारण प्रसिद्ध है। इस क्षेत्र में आदिवासियों की भी समृद्ध परम्परा रही है। यह क्षेत्र महिला सशक्तिकरण में भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। होशंगाबाद ओर बैतूल की 9 हजार 773 महिलाओं का समूह म.प्र. का सबसे बड़ा महिला समूह है। केसला विकासखंड की महिला नर्मदा संघ से जुड़ी आदिवासी महिलाओं ने एकजुटता की एक बेहतरीन मिसाल प्रस्तुत की है। इस संघ से जुड़ी महिलायें 2014 में करीब 3 करोड़ 9 लाख 48 हजार रूपये की मालकिन बन गई है। जबकि समूह से जुड़ी महिलाओं ने बचत का यह सिलसिला 3 रूपये प्रति सप्ताह से शुरू किया था। महिलाओं ने समूह से जुड़कर न केवल आर्थिक समस्याओं का हल ढूंढ लिया है। बल्कि सामाजिक बदलाब के क्षेत्र मे भी महत्वपूर्ण कार्य कर रही है।

सर्वेक्षण के आधार पर 2017-18 में होशंगाबाद में समानान्तर रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में गठित स्वसहायता समूह की कुल संख्या 1281 तथा शहरी क्षेत्र में 87 है। ये वे महिला स्वसहायता समूह है जो सरकार की स्कूलों की मध्यान्ह भोजन व्यवस्था से जुड़कर अपने आपको आर्थिक रूप से सशक्त कर रहे है। क्षेत्र में प्राथमिक स्कूलों की संख्या 1107 है तथा 1073 से स्वसहायता समूहों के संबंध है। इसी तरह माध्यमिक शाला 526 है जिसमें से 511 स्कूलों का संबंध महिला स्वसहायता समूहों से है।

सन्दर्भ सूची

1. कुरूक्षेत्र जून -2001
2. शर्मा प्रज्ञा : महिला विकास और सशक्तिकरण 2001, अविष्कार पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, (जयपुर राजस्थान)
3. अन्सारी एम.ए. : राष्ट्रीय महिला आयोग ओर भारतीय नारी 2003, द्वितीय संस्करण ज्योति प्रकाशन
4. इण्डिया टुडे महिला विशेषांक - 2005
5. दी टाइम्स् ऑफ इण्डिया, मार्च 2009
6. प्रतियोगिता दर्पण, मार्च, 2009
7. कुरूक्षेत्र, जनवरी 2009
8. सम्पादन- यादव वीरेन्द्र सिंह- नई सहस्त्रावदी का महिला सशक्तिकरण 2010 आलेख।
9. पुण्ढीर राजेश कुमार, अवस्थी सीमा- महिला सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूहों का योगदान ओमेगा प्रकाशन, नई दिल्ली।
10. लेखिका का स्वयं का सर्वेक्षण एवं अध्ययन।

3.

महिलायें घरेलू प्रबंध व्यवस्था से उद्यमिता की ओर

डॉ. (श्रीमती) मीना कीर
सहा. प्राध्यापक, वाणिज्य
शासकीय नर्मदा महाविद्यालय,
होशंगाबाद (म.प्र.)

नारी के अंदर ही सृजन, पालन और प्रलय की शक्तियाँ निहित है इसलिये विद्या का आदर्श सरस्वती में, धन का लक्ष्मी में, पराक्रम का दुर्गा में माना गया है। इसी आदर्श को लक्ष्य कर जवाहरलाल नेहरू ने कहा था ''आप किसी भी देश की हालत का अंदाजा लगाना चाहते हैं तो वहाँ की स्त्रियों की दशा देखकर लगा सकते हैं।'' ऋग्वेद में कहा गया है कि नर और नारी एक-दूसरे के पूरक है हमारे वेद, पुराणों एवं हमारे देश के इतिहास में नारियों का एक ऐसा समूह दृश्यमान होता है, जो मातृत्व शक्ति लोक कल्याण स्वरूपा एवं शक्तिदायिनी के रूप में है। इस प्रकार प्राचीन भारत में स्त्रियों को पुरुषों के समान महत्व दिया गया था।

कोई राष्ट्र तभी सशक्त बन सकता है जब उसका हर नागरिक सशक्त हो जिसमें महिलाओं की भूमिका सबसे अग्रणी है। परिवार में माँ के रूप में वह अपनी भूमिका अदा करती है, राष्ट्र निर्माण में महिलाओं का योगदान अतुलनीय है। भारतीय महिलाओं ने प्रबंध के क्षेत्र में भी अपना लोहा मनवा लिया है। विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर महिलाओं ने उच्चस्तरीय प्रदर्शन किया है।

रोजगार के हर क्षेत्र में महिलायें पुरुषों से पीछे नहीं है। महिलाओं ने घरेलू प्रबंध व्यवस्था से निकलकर उद्यमिता की ओर सशक्त रूप से अपने कदम बढ़ा दिये है। आज के दौर में महिलाएं शिक्षा, पत्रकारिता, कानून, चिकित्सा, इंजीनियरिंग के क्षेत्र

में उल्लेखनीय सेवाएँ दे रही हैं। पुलिस और सेना में भी वे जिम्मेदारी निभा रही है, बदलते समय ने महिलाओं को आर्थिक, शैक्षणिक और सामाजिक रूप से सशक्त किया है जिससे उनकी हैसियत एवं सम्मान में वृद्धि हुई है।

समाज एक परिवर्तनशील व्यवस्था है, आज प्रत्येक क्षेत्र में सतत् बदलाव हो रहा है। इसी आधार पर विकास की प्रक्रिया मानव-जीवन में परिवर्तन या बदलाव की ऐसी पद्धति है जो सतत् गतिमान रहती है। किसी देश का विकास तब तक नहीं हो सकता जब तक दुनिया की जनसंख्या का आधा भाग महिलायें विकास में अपना पूर्ण योगदान प्रदान नहीं करती। यह सर्वविदित है कि सृष्टि के प्रारंभ में महिलायें मानव पूँजी निर्माण में प्रमुख योगदान दे रही है। यद्यपि महिलायें लंबे समय तक एक घरेलू क्रियाओं से ही सम्बद्ध रही हैं, फिर भी परिवर्तन एवं विकास की प्रक्रिया के साथ-साथ उसने उद्यम की स्थापना के कार्य में योगदान देना प्रारंभ कर दिया है।

महिला प्रबंधक के रूप में

प्रबंध मानव में प्रत्येक पहलू से जुड़ा है। वास्तव में प्रबंध मानवीय प्रयासों के नियोजन, संगठन, समन्वय, निर्देशन एवं नियंत्रण द्वारा उपलब्ध संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग करना है, जिससे निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके। महिलायें प्रबंध की अवधारणा की हर कसौटी पर पूर्ण रूपेण उतरती हैं। आज महिलाओं ने विश्व भर में अपनी प्रबंध क्षमता का लोहा मनवा लिया है। आज महिलायें घरेलू प्रबंध व्यवस्था से लेकर देश के आर्थिक प्रबंध व्यवस्था तक में सक्रिय भूमिका निभा रही है।

महिला उद्यमिता की अवधारणा

भारत में परम्परा से स्त्री का सम्मान, गौरव विषय रहा है, परन्तु घरेलू कामों में लगे होने के कारण महिलाओं को उनके द्वारा किये गये श्रम को मान्यता प्राप्त नहीं थी। समय के साथ समाज के नजरिये में बदलाव व स्त्री के बढ़ते आत्मविश्वास ने उनके लिये आत्म सम्मान और तरक्की के अगिनत दरवाजे खोल दिये हैं।

महिला उद्यमी से आशय महिला जनसंख्या के उस भाग से है जो औद्योगिक क्रियाओं के साहसिक कार्य में संलग्न है। महिलाओं का ऐसा समूह जो किसी व्यवसायिक उपक्रम की स्थापना उसका संगठन या संचालन करती है, महिला उद्यमी के नाम से पहचाना जाता है।

उद्यमी महिला किसी नये आर्थिक कार्य का प्रवर्तन कर सकती है या उसकी नकल कर सकती है जो महिला किसी भी प्रकार की सेवा या वस्तु का उत्पादन करती हैं, उसे महिला उद्यमी कहते हैं। वर्तमान में जो महिलायें किसी उद्योग की स्थापना कर स्वयं उसमें पूँजी विनियोजित कर या ऋण लेकर उद्योग की स्थापना व संचालन का कार्य

करती है, उन्हें महिला उद्यमी कहा जाता है।

महिलाओं को स्वावलंबी बनाने हेतु निम्न कार्यक्रमों को समाज द्वारा, समाज सेवी संस्थाओं के द्वारा, सरकार के द्वारा या स्वयं महिलाओं के द्वारा जो प्रयास किये जाते हैं, उन्हें महिला उद्यमिता के नाम से जाना जाता है।

भारत सरकार के विकास आयुक्त द्वारा महिला उद्यमी को दी गई विशेषतायें निम्न हैं -

1. वह उपक्रम महिला उद्यमी के स्वामित्व का हो- जिस उपक्रम का स्वामित्व महिला उद्यमी के पास होगा वही उपक्रम महिला उद्यमी की श्रेणी में रखा जायेगा। स्वामित्व में 51-प्रतिशत या उससे अधिक की हिस्सेदारी महिला उद्यमी के पास होनी चाहिए।
2. वह उपक्रम महिला द्वारा संचालित हो- महिला उद्यमी को ही उक्त उपक्रम की संचालक होना आवश्यक है। अर्थात संस्था का नियोजन, नियंत्रण, समन्वयन, संगठन, निर्देशन महिला उद्यमी के द्वारा किया जाना चाहिये।
3. इस उपक्रम में कार्यरत कर्मचारियों में 50-प्रतिशत महिलायें हो- महिला उद्यमिता को प्रोत्साहित करने के लिये महिला कर्मचारी की संख्या 50-प्रतिशत होनी चाहिये।

महिला उद्यमियों में निहित गुण

1. **समझदार-** महिलायें बहुत ही संवेदनशील ढंग से परिस्थितियों को बारीकी से समझने की सूझबूझ वाली होती हैं।
2. **प्रभावपूर्ण कार्य-** महिलायें प्रभावी रूप से कार्य पूर्ण करने में विश्वास करती हैं।
3. **ईमानदार-** महिलायें कार्य के प्रति ईमानदार होती है, वे अधिक कर्त्तव्यनिष्ठा से कार्य करती हैं।
4. **सृजनात्मकता-** महिलायें सृजनात्मक होती है, वे कार्य को सृजनात्मक तरीके से करती हैं।
5. **मितव्ययिता-** महिलायें मितव्ययी होती हैं, वे कम खर्च में अधिक उत्पादन करने की योग्यता रखती हैं।
6. **आशावादी दृष्टिकोण-** महिलायें आशावादी दृष्टिकोण की होती है, वे परिणाम के प्रति अधिक आशावान होती हैं।
7. **उत्साहवर्द्धक-** महिलायें विपरीत परिस्थिति में भी उत्साहपूर्वक कार्य करने में सक्षम होती हैं।

उपरोक्त सभी गुण एक अच्छे उद्यमी में होते हैं। महिलाओं को यदि समानता के अवसर प्रदान किये जाये तो महिलायें पुरुषों के समान सफलता अर्जित कर सकती है। वह समाज में कंधे से कंधा मिलाकर भारत के सकल घरेलू उत्पाद को बढ़ाने में सहायक हो सकती है।

भारत में महिला शक्ति का पूर्णरूपेण इस्तेमाल नहीं हो पा रहा है, यदि महिला शक्ति को बराबरी का मौका दिया जाये तो वह दिन दूर नहीं जब भारत विकसित राष्ट्र की श्रेणी में आकर विश्व सिरमौर बन उभर सकता है।

महिला उद्यमिता की संभावनायें

सामान्यतया उद्यमिता लिंग के आधार पर पुरुष और महिला में कोई भेद नहीं करती है। फिर भी पुरुषों की तुलना में महिलाओं को उद्यमिता के क्षेत्र में अनेक प्रकार की कठिनाईयों को सहने व बाधाओं से जूझने के बाद महिलायें पहले से अधिक सशक्त व जागरूक हुई है, जिसके परिणामस्वरूप उद्यमिता के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है और सफलता की दृष्टि से महिला उद्यमियों की संख्या में निरंतर वृद्धि हुई है जो केवल महानगरों या नगरों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसकी झलक देश के कस्बों और ग्रामीण अंचलों में भी दिखाई देने लगी है। इससे महिला उद्यमियों के उज्जवल भविष्य की असीम संभावनायें दृष्टिगोचर हो रही हैं।

महिलायें परिवार, समाज व देश की प्रगति की नींव है। नींव के सशक्त व मजबूत होने पर भव्य इमारत की कल्पना को साकार किया जा सकता है। रंग-मंच, पत्रकारिता, टेलीविजन, सिनेमा, विज्ञान आदि क्षेत्रों में नये कीर्तिमान स्थापित करती महिलाओं ने शिक्षा, नौकरी और व्यवसाय सहित हर क्षेत्र में अपनी योग्यता सिद्ध की है। आज महिलाओं का रूझान तकनीकी शिक्षा व व्यवसायिक शिक्षा की ओर अग्रेषित हो रहा है। जैसे- मेडिकल, इंजीनियरिंग, प्रबंधन, चार्टड अकाउंटेट आदि।

आज कम्प्यूटर कोर्स विज्ञापन एवं जनसंपर्क, फेशन डिजाइनिंग आदि अनेक राहें महिला उद्यमिता के लिये खुल चुकी है।

महिला उद्यमियों द्वारा विभिन्न प्रकार की उपभोक्ता वस्तुओं के निर्माण की इकाईयाँ स्थापित की जा सकती है। जैसे- आचार, चटनी, पापड़, बड़ी, जूस, जैम, जैली, साबुन आदि इकाईयाँ शामिल की जा सकती है। साथ ही महिला विभिन्न सेवायें जैसे- हेल्थ क्लब, फिटनेश सेंटर, पेटिंग क्लासेस, कुकिंग क्लासेस, कोचिंग, डेकोरेशन, समारोह प्रबंधन, कम्प्यूटर ट्रेनिंग आदि प्रदान की जा सकती है। साथ ही रेडीमेड कपड़े, होजरी, स्वेटर निर्माण आदि इकाईयाँ शामिल हैं। इनका संचालन महिला उद्यमियों द्वारा सफलतापूर्वक किया जा सकता है। ब्यूटी पार्लर, फैशन डिजाइनिंग, शार्टहैण्ड, फोटोकॉपी,

स्क्रीन प्रिटिंग इंटरनेट कैफे, टी.वी. रिपेयरिंग, टेलीफोन एवं मोबाइल रिपेयरिंग आदि का संचालन भी महिला उद्यमी कर सकती हैं।

महिलायें, कृषि आधारित उद्योग में ग्रामीण क्षेत्र में सफलता की बुनियाद रख चुकी हैं, जिसमें मुर्गी पालन, पशुपालन, फलोद्यान आदि प्रमुख हैं, जिसके लिये बैंक सरलता पूर्वक ऋण प्रदान करता है।

बंधेज करना शहरी व ग्रामीण रोजगार का श्रेष्ठ साधन बन सकता है। बैंकिंग के क्षेत्र में महिला नागरिक सहकारी बैंक महत्वपूर्ण कड़ी है। स्वसहायता समूह कार्यक्रम ग्रामीण व शहरी अर्थव्यवस्था का अभिन्न अंग बनकर ग्रामीण व शहरी महिला उद्यमियों के लिये वरदान साबित हो रहा है। स्वसहायता समूह के जरिये लघुवित्त प्राप्त करके गरीबी, बेरोजगारी व निरक्षरता के चक्रव्यूह से निकलकर महिला सशक्तिकरण की दिशा में कदम बढ़ा रही है।

महिला उद्यमी एवं श्रमिक कानून

महिला उद्यमियों एवं श्रमिकों की बढ़ती सहभागिता के कारण समाज में इन्हें मुख्यधारा से जोड़ने एवं संरक्षण प्रदान करने के लिये विविध सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों ने प्रयास किये एवं कानून बनाये गये जिसमें समाज सुधारकों एवं समाजिक कार्यकर्ताओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। महिला श्रमिकों के कल्याण एवं विकास हेतु विविध संवैधानिक एवं कानूनी प्रावधान किये जाने से महिला श्रमिकों को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

श्रम कानून

1. कारखाना अधिनियम 1948
2. कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम 1948
3. प्रसूति लाभ अधिनियम, 1961
4. समान पारिश्रमिक अधिनियम, 1976
5. बगान श्रम अधिनियम, 1951

आदि प्रमुख श्रम कानून है। माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा महिला श्रमिकों के यौन शोषण रोकने हेतु भी प्रयास किये गये हैं। महिला श्रमिकों में जागरूकता की कमी के कारण वे शोषित हो रही है, जिसके लिये आवश्यक है कि महिला श्रमिकों को संविधान कानून प्रदत्त लाभों की जानकारी के प्रति जागरूकता लाने का प्रयास किया जाना चाहिये, जिससे इनका लाभ उठाकर महिला श्रमिक शक्ति संपन्न बन सकें।

महिला उद्यमियों की समस्यायें

महिला उद्यमियों को जिन प्रमुख समस्याओं का सामना करना पड़ता है उनमें प्रमुख इस प्रकार है :-

1. विपणन संबंधी समस्या- अपने उत्पादों के विपणन के संबंध में आर्डर प्राप्त करने हेतु आने जाने में कठिनाई होती है।
2. गतिशीलता की समस्या।
3. स्वयं निर्णय लेने की क्षमता का अभाव।
4. वर्तमान व्यवस्थाओं के साथ समायोजन न कर पाना।
5. पुरुषों की दोहरी मानसिकता।
6. नवप्रवर्तन एवं समय प्रबंधन की समस्या।
7. समय का अभाव।
8. शिक्षा एवं स्वास्थ्य संबंधी जानकारी का अभाव।
9. घर के अन्य सदस्यों से तालमेल की समस्या।
10. उधारी वसूली की समस्या।
11. असफलता का डर।
12. शारीरिक रूप से ज्यादा मजबूत न होना।
13. तकनीकी ज्ञान की कमी।
14. वित्त संबंधी समस्या।
15. आत्मविश्वास की कमी।
16. करियर अभिमुखी व्यक्तित्व की कमी।
17. सामाजिक प्रतिबंध।
18. उद्यमिता अभिवृत्ति की कमी।
19. कानूनी दावपेंचों की कमी।

उक्त समस्याओं को बताने का मूल उददेश्य महिलाओं की उन समस्याओं का पूर्वाभास कराना है, जिनमें उद्यमियों या व्यवसायिक जीवन अपनाने की दशा में उनके सामने आने की संभावना है, क्योंकि अधिकांश महिला उद्यमियों की स्थिति लगभग एक जैसी है। अतः यह महिला उद्यमियों के विशेष हित में होगा कि इस वस्तुस्थिति से

निपटने के लिये पहले से ही मानसिक रूप से तैयार रहें।

महिला उद्यमिता संबंधी चुनौतियों हेतु समाधान

महिलाओं को उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए, इन कदमों को उठाने की जरूरत है-

1. कौशल विकास में वृद्धि और नरम कौशल के लिए क्षमता निर्माण प्रक्रियाओं, प्रौद्योगिकी और प्रबंधन कौशल प्रदान करने की जरूरत।
2. कारोबार करना आसान सक्षम करने से बाहरी उद्यमशीलता पारिस्थितिकी तंत्र को आसान बनाना, ऋण सुविधाओं के लिए आसान पहुँच सहित प्रदान करना जैसे-बैंकों, वित्तीय संस्थाओं और एमएफआई से जमानत मुक्त ऋण।
3. परामर्शक बढ़ाएँ और बाजार महिलाओं उद्यमी संघों की तरह नेटवर्क के माध्यम से महिलाओं के स्वामित्व वाले उद्यमों के लिए समर्थन करने के लिए जोड़ना। साथ ही ज्ञान संसाधनों और दस्तावेज को साझा करें।
4. सरकारी योजना पात्रता मानदंड के बारे में महिलाओं के बीच जागरूकता बढ़ाना, प्रलेखन और निकासी तंत्र उच्चतर प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में, महिलाओं को लाना, बेहतर अंतर्विभागीय समन्वय सरल, तेज, पारदर्शी और प्रभावी सेवा महिलाओं के स्टार्टअप्स के लिए सक्षम करने देना।
5. बच्चे की देखभाल और परिवार के समर्थन की तरह महिलाओं की समर्थन प्रणाली में बढ़ोतरी।
6. एकल खिड़की प्रणाली द्वारा महिला उद्यमियों को एक ही स्थान पर सभी सुविधाएँ उपलब्ध करायी जानी चाहिये।
7. समय-समय पर औद्योगिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए।

महिला उद्यमी प्रोत्साहन हेतु शासकीय प्रयास

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात से ही महिला उद्यमिता के विकास हेतु शासन द्वारा विभिन्न योजनाएँ लागू की गयी जिनमें से प्रमुख इस प्रकार है -

- आई.आर.डी.पी. योजना 1980 में भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा प्रारंभ की गयी थी जिसमें ग्रामीण रोजगार उपलब्ध कराने हेतु बैंक वित्त एवं अनुदान उपलब्ध कराया जाता था।
- आवास की कमी को दूर करने हेतु इंदिरा आवास योजना मई 1985 में प्रारंभ की गयी। वर्तमान में बी.पी.एल. परिवारों को इस योजना से लाभांवित किया जा रहा

है।

- कपार्ट- गाँवों में खुशहाली बढ़ाने हेतु नई प्राद्योगिकियों के इस्तेमाल पर ध्यान केंद्रित करने के लिये ग्रामीण विकास में स्वेच्छिक गतिविधियों को सहयोग, प्रोत्साहन और बढ़ावा देने के उद्देश्य से सरकार ने सितम्बर 1986 में ग्रामीण विकास मंत्रालय में एक स्वयत्त संस्था 'जन सहयोग और ग्रामीण प्रोद्योगिकी विकास परिषद्' (कपार्ट) की स्थापना की। कपार्ठ की 9 प्रादेशिक समितियां/केन्द्र हैं जो जयपुर, लखनऊ, अहमदाबाद, भुवनेश्वर, पटना, चंडीगढ़, हैदराबाद, गोहाटी और धारवाड़ में स्थित है।
- भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान- यह देश के उद्यमिता विकास के लिये विशिष्ट दायित्व से युक्त एक प्रमुख संस्थान है। संस्थान ने स्त्रियों के लिये एक विशिष्ट विकास कार्यक्रम बनाया है जिसका प्रथम कार्यक्रम सितम्बर, 1988 में आयोजित किया गया यह संस्थान ग्रामीण क्षेत्रों को प्रगति के लिये प्रयासरत है। जिला ग्रामीण विकास एजेंसी (डीआरडीए) जिला ग्रामीण विकास एजेंसियों को मजबूती प्रदान करने और उन्हें अपने काम-काज में अधिक व्यावसायिक बनाने के उद्देश्य से 1 अप्रैल, 1999 को केन्द्र प्रायोजित योजना के रूप में इस कार्यक्रम का शुरू किया गया।
- अप्रैल 1999 में ग्रामीण स्वर्ण जयंती स्वरोजगार योजना लागू की गई।
- 25 दिसम्बर 2000 को प्रधानमंत्री सड़क योजना शुरू की गई।
- जिला उद्योग केन्द्र- कुटीर एवं हस्तशिल्प उद्योग को बढ़ावा देने के लिये जिला उद्योग केन्द्र स्थापित किया गया।
- औद्योगिक क्षेत्रों एवं बस्तियों का निर्माण- उद्योगों को बढ़ावा देने के लिये सरकार ने कई क्षेत्रों को औद्योगिक क्षेत्र घोषित करके वहॉ औद्योगिक बस्तियों का निर्माण कराया है।
- म.प्र. महिला आर्थिक (वित्त) विकास निगम- इस विभाग की स्थापना महिलाओं को आर्थिक रूप से सबल बनाने के लिये की गयी।
- ग्राम्या योजना- इस योजना के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को लघु व्यवसायी के रूप में सहायता प्रदान की जाती है।
- समर्थ योजना- इस योजना का उद्देश्य विधवा, तलाकशुदा, निराश्रित महिलाओं के जीवन-यापन के लिये विभिन्न व्यवसायों में प्रशिक्षण देकर आत्मनिर्भर बनाना है।
- महिला फोटोकापी योजना- इस योजना में विधवा, तलाकशुदा, निराश्रित महिलाओं

को प्राथमिका दी जाती है।

- कौशल उन्नयन कार्यक्रम- म.प्र. में निवासरत आर्थिक रूप से कमजोर महिलाओं के कौशन उन्नयन हेतु यह कार्यक्रम चलाया गया है।
- ममत्व मेला- स्वसहायता समूहों, विभिन्न महिला समूहों द्वारा बनायी गयी सामग्रियों के प्रदर्शन एवं विक्रय के लिये इस प्रकार के मेलों का आयोजन किया जाता है।
- महिला स्वसहायता समूह- स्वसहायता समूह 15-20 महिलाओं का वह समूह है जो स्वेच्छा से आर्थिक विकास व समस्याओं को सामूहिक प्रयास से हल करती है।
- शासन द्वारा महिला उद्यमियों के लिये किये गये उक्त प्रयासों एवं योजनाओं के फलस्वरूप महिला उद्यमी व्यापार के प्रत्येक क्षेत्र में अपना नाम रोशन कर रही है।

निष्कर्ष

आज महिलायें उद्यम के माध्यम से समाज व राष्ट्र की आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक उन्नति में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार विकासशील देशों में 70-80 प्रतिशत लघु उद्योग महिलाओं द्वारा संचालित किये जाते हैं। अधिकांश महिलायें कम आय वाले कार्यों में तथा असंगठित क्षेत्रों में कार्यरत् हैं। समान कार्य समान वेतन अधिनियम 1976 लागू होने के बाद भी स्त्री पुरुषों की मजदूरी में 27.6 प्रतिशत अंतर पाया गया है।

महिलाओं के अधिकांश कार्यों का आज भी आर्थिक मूल्यांकन नहीं किया जाता है। यानि शहरी क्षेत्रों में 88-प्रतिशत तथा ग्रामीण क्षेत्रों में 68 प्रतिशत महिलायें आर्थिक दृष्टि से उत्पादक हैं। किसी भी उद्यम की सफलता शासन की सहायता व प्रोत्साहन के बिना संदिग्ध है। अतः आवश्यक है कि विकास कार्यक्रमों का आयोजन हर क्षेत्र में किया जाये। लोगों में जागृति लाने से पहले महिलाओं का जागृत करना आवश्यक है। महिलाओं के आगे बढ़ने से परिवार आगे बढ़ेगा, गाँव बढ़ेगा और राष्ट्र भी बढ़ेगा। महिला उद्यमिता के क्षेत्र में कई प्रेरणादायी उदाहरण है जैसे- श्रीमती काबेरी कला निधि, सी.ई.ओ. चंदा कोचर, शिखा शर्मा, सावित्री जिंदल, आकांक्षा राठी, विद्या मनोहर, शबाना आजमी, किरण राव आदि महिलायें लगभग प्रत्येक क्षेत्र में एक सफल उद्यमी के रूप में अपनी पहचान बना चुकी हैं।

संदर्भ सूची

1. उद्यमिता विकास- डॉ. वी.के. अग्रवाल, अभय पाठक
2. जड़िया डॉ. प्रभावती- हिन्दू नारी कार्यशीलता के बदलते प्रभाव
3. महिला उद्यमिता का ग्रामीण विकास में योगदान- डॉ. राजारानी खुराना, डॉ. प्रभा अग्रवाल
4. उद्यमिता- म.प्र. ग्रंथ अकादमी, भोपाल
5. गाँवों में रोजगार के साधन- त्रिपाठी मधुसूदन
6. शोध समीक्षा एवं मूल्यांकन- जर्नल V01 III अंक 26 फरवरी, 2007
7. उद्यमिता- उद्यमिता विकास केन्द्र म.प्र. (सेडमैप) भोपाल
8. दैनिक भास्कर- समाचार पत्र

4.

मानव अधिकारों से सशक्त होती महिलाएं

डॉ.(श्रीमती) रश्मि तिवारी
प्राध्यापक, गणित
शासकीय नर्मदा महाविद्यालय
होशंगाबाद

स्वास्थ्य के संरक्षण का अधिकार महिलाओं का अहम मानवाधिकार है। 2003 में हुए अनुसंधान में यह पाया गया है कि ग्रामीण निम्न स्तर से प्रभावित है। हर वर्ष प्रशिक्षित डाक्टरों में से 1/3 ही डाक्टर क्षेत्रों में सेवाएं प्रदान करते हैं एक ग्रामीण महिला प्रतिदिन 13 घंटे कार्यकरती है जबकि पुरुष 8 घंटे का कार्य करता है। शहरों में 66 प्रतिशत कामकाजी महिलाएं है जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में 88 प्रतिशत महिलाएं है। ग्रामीण क्षेत्रों में 25 प्रतिशत महिलाएं अपना 15वां जन्मदिन नही देख पाती है।

जवाहर लाल नेहरू ने ग्रामीण महिलाओं के निम्न स्वास्थ्य स्तर पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा था, ''चाहे कितना भी एक मां अपने बच्चों से प्रेम करती हो, उसके लिए यह असम्भव है कि वह अपने बच्चों का उच्च कोटि से लालन-पालन कर सके। यदि वह गरीब, अशिक्षित, रक्तहीनता से ग्रसित एवं अस्वस्थ है....और उसे समाज का सहयोग या स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध नहीं है।

ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के साथ प्रत्येक 26वें मिनट में महिला छेड़छाड़ का शिकार होती है, 34वें मिनट में बलात्कार का 42वें मिनट में यौन शोषण का, 43वें मिनट में अपहरण का 93वें मिनट में दहेज हत्या का शिकार होती है।

महिलाओं के मानवाधिकार

ऐतिहासिक अवलोकन किया जाय तो न्याय, समानता एवं अधिकारों के लिए ''प्रथम महिला अधिकार'' सम्मेलन वर्ष 1848 में अमेरिका में ही सम्पन्न हुआ, यद्यपि इसके पूर्व गर्भपात निरोधक अधिनियम (1803 ब्रिटेन) सती प्रथा का समापन (1829,

भारत) विधवाओं का पुनर्विवाह (1856 भारत) जैसे प्रयास किए ज चुके थे, किन्तु प्रयासों में समाज सुधारकों एवं जन आन्दोंलनों का प्रत्यक्ष प्रभाव था, न कि स्वयं महिलाओं का।

वर्ष 1840 में ब्रिटेन एवं अमेरिका में मताधिकार हेतु महिलाओं के आन्दोलन की परिणति नेशनल वुमेन, सफरेज एसोसिएशन (1869 अमेरिका) के रूप में हुई जिसका विश्वव्यापी प्रभाव यह रहा कि महिलाओं को प्रथम बार मताधिकार का अधिकार (न्यूजीलैण्ड 1893, अमेरिका-1920, ब्रिटेन-1928) प्राप्त हुआ। वस्तुतः औद्योगिक क्रांति और दो विश्व युद्धों में महिलाओं की दयनीय स्थिति से विश्व समुदाय का भी मन व्यथित हुआ, अतः संयुक्त राष्ट्र संघ की (1945) स्थापना के साथ महिलाओं के लिए क्रांतिकारी प्रयास भी प्रारम्भ हुए। यह संयुक्त राष्ट्र संघ ही था, जिसने सर्वप्रथम महिलाओं की दयनीय स्थिति में सुधार के लिए महिला आयोग (कमीशन ऑन द स्टेटस आफ वूमेन 1946) की स्थापना की। संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार घोषणापत्र 1948 के अनुच्छेद 1, 2, 3, 4, 5, 7, 9 विशेषतः महिला अधिकारों का व्यापक और सशक्त बनाते हैं।

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने दिसम्बर 1952 में महिलाओं की राजनीतिक अधिकार सम्बन्धी अभिसमय अंगीकार किया जिस पर विश्व के 40 देशों ने अपनी सहमति व्यक्त की पुनः विवाहित महिलाओं की राष्ट्रीयता संबंधी अभिसमय महासभा द्वारा अंगीकृत किया गया जो 11 अगस्त 1958 से प्रभावी भी हो गया है। महिलाओं से संबंधी अब तक किए गए प्रयासों के अनुरूपी तथा पूर्व प्रस्तावों को समेकित करते हुये महासभा ने एक व्यापक और विस्तृत दस्तावेज नारी 18 दिसम्बर 1979 को अंगीकृत किया, जो 3 सितम्बर 1981 से प्रभावी है। यह दस्तावेज नारी अधिकारों उसके सम्मान और न्याय के लिए जाना जाता है। ''महिला के प्रति प्रकार के विभेदों का प्रतिषेध अभिमय'' 1979 को अंगीकृत किया। संयुक्त राष्ट्र संघ ने प्रथम बार महिलाओं के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और व्यक्तिगत अधिकारों को संहिताबद्ध किया, पुनः 20 दिसम्बर 1993 को महासभा ने महिलाओं के प्रति हिंसा दूर करने संबंधी घोषणा पत्र पारित किया गया अपितु उसके व्यापक अधिकारों को भी सुनिश्चित किया गया। घोषणा के अनुच्छेद 1 के अनुसार महिलाओं के प्रति हिंसा में लिंगभेद पर आधारित उन सभी कृत्यों को शामिल कर लिया गया है जिनसे महिलाओं को शारीरिक, मानसिक या यौन संबंधी प्रताड़ना सहनी पड़ती है। पुनः अनुच्छेद 2 के अंतर्गत इन कृत्यों को क्षेत्रीय विस्तार देती हुए घर के अन्दर या बाहर या सार्वजनिक स्थलों या यात्रा के दौरान या सरकारी कर्मचारियों के अभिरक्षा के दौरान किए गए कृत्यों को शामिल किया गया है, पुनः अनुच्छेद 3 के में यह उसकी सुरक्षा का अधिकार होगा जिसमें निम्नलिखित

समिम्तलित है-

1. जीवन का अधिकार
2. समानता का अधिकार
3. स्वतंत्रता का व्यक्तिगत सुरक्षा का अधिकार।

प्रथमतः राजनीति अधिकारों (नागरिक अधिकारों) का अवलोकन किया जाय तो इनका प्रारम्भ महिलाओं के मताधिकार आन्दोलन (1849) से माना जा सकता है, अब विश्व के प्रायः सभी देशों, आपवादिक स्थिति में कुछ मुस्लिम राष्ट्रों को छोड़कर, ने महिलाओं के राजनीतिक अधिकारों का स्वीकार कर लिया है। विश्व की प्रथम महिला प्रधानमंत्री श्रीमती भंडारनायके (1960) की राजनीतिक यात्रा का अनुसरण करते हुए भारत, इजरायल, ब्रिटेन, फिलीपीन्स, कनाड़ा, फ्रांस, आयरलैण्ड आदि देशों में महिलाएं या तो प्रधानमंत्री या राष्ट्राध्यक्ष चुनी गई। यहां तक कि संयुक्त राष्ट्र संघ में भी महिलाएं अनेक पदों पर कार्यरत हैं।

इस संदर्भ में भारतीय राजनीतिक परिदृश्य की चर्चा समीचीन होगी, जहां महिलाओं को राजनीति में 33 प्रतिशत आरक्षण संबंधी विधेयक संसद में पेश किए जाने का प्रयास गत कई वर्षों से हो रहा है। यद्यपि विश्व के किसी भी देश में इस तरह का प्रावधान नही है। भारत ने इसका श्रीगणेश 73वां एवं 74वां संविधान संशोधन 1992 के द्वारा पंचायतों एवं नगर निगमों के चुनाव में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देकर कर दिया है। इस आरक्षण का प्रभाव यह हुआ है कि पूरे देश में आज लाखों महिलाएं पंचायत या नगर निगम (राजनीति की पहली सीढ़ी) में सफलतापूर्वक चुनकर कार्य कर रही है। इससे उनकी न केवल आत्मशक्ति अपितु उनके राजनीति व्यक्तित्व का भी बेहतर प्रदर्शन देखने को मिला है। अब इस प्रयोग को राज्य की विधान सभाओं एवं संसद में भी दोहराए जाने की मांग की जा रही है। यदि यह व्यवस्था स्थापित हो जाती है तो यह भारतीय महिलाओं के राजनीतिक अधिकार का एक दृष्टान्मूलक प्रावधान होगा। महिलाओं की राजनीतिक यात्रा एक चुनौती भरा कदम है, और कदम-कदम पर उन्हें पुरुष-प्रधान समाज की गतिरोधों का सामाना करना पड़ा है। इस संदर्भ में बहुत कुछ किया जाना शेष है।

द्वितीयतः महिलाओं के सामाजिक अधिकार ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण और चुनौतीपूर्ण है। संयुक्त राष्ट्र अभिसमय 1979 के अनुच्छेद 11 के अंतर्गत कहा गया है कि महिलाओं और पुरुषों की समानता सुनिश्चित करने के लिए राज्यों को निम्नलिखित अधिकारों/कार्यों को अपनी विधिक व्यवस्था में स्थान देकर उन्हें क्रियान्वित करना होगा-

- काम करने का अधिकार
- रोजगार के समान अवसरों का अधिकार
- व्यवसाय या नौकरी के स्वतंत्र चुनाव का अधिकार
- समान कार्य के लिए समान पारिश्रमिक प्राप्त करने का अधिकार
- सेवानिवृत्ति, वृद्धावस्था, बीमारी आदि की स्थिति मेंसामाजिक सुरक्षा का अधिकार
- स्वास्थ्य के संरक्षण का अधिकार

इसके पूर्व संयुक्त राष्ट्र इसके पूर्व संयुक्त राष्ट्र संघ मानवधिकार घोषणा पत्र 1948 के अंतर्गत महिलाओं को निम्नलिखित अधिकार प्रदत्त किया जाना एक अनिवार्य आवश्यकता माना गया है :

- गरिमा, जीवन, स्वतंत्रत और सुरक्षा (अनुच्छेद-1 एवं 3)
- विधिक समानता (अनु.-1,6,7)
- विभेदकारी प्रावधानों से सुरक्षा(अनु.-2)
- पारिवारिक व्यवस्था व राज्य तथा समाज से सुरक्षा (अनु.-16(3))
- व्यक्तिगत जीवन परिवार, घर, पत्राचार, आदि की एकान्तता का अधिकार (अनु.-12)

इस प्रकार आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक अधिकारों की घोषणा, 16 दिसम्बर 1966 के द्वारा महिलाओं के पक्ष में निम्नलिखित प्रावधान किए गए है-

- रोजगार का अधिकार (अनु.-4)
- समान कार्य के लिए समान वेतन (अनु.-5)
- सामाजिक सुरक्षा(अनु.-10)
- शिशु मृत्यु दर में कमी तथ बच्चों का स्वास्थ्य विकास (अनु.-13)
- प्राथमिक शिक्षा की निःशुल्क व्यवस्था (अनु.-16)

पुनः नागरिक तथा राजनीतिक अधिकारों की घोषणा, 16 दिसम्बर 1966 के अंतर्गत भी महिलाओं के लिए निम्नलिखित अधिकारों को प्रदत्त किया जाना विधिक व्यवस्था का एक अंग घोषित किया गयाः

- जीवन का प्राकृतिक अधिकार (अनु.-3)
- यातना का अमानवीय व्यवहार से संरक्षण

- निजत्व की संरक्षण व (अनु.-13)

भारतीय संविधान और महिलाएं

अनुच्छेद 15(3) के ही प्रावधानों का सहारा लेकर संसद ने 1990 में राष्ट्रीय महिला आयोग अधिनियम पारित किया।

भारत के संविधान का अनुच्छेद 42 महिलाओं के लिये प्रसूति सहायता की व्यवस्था करता है। इस अनुच्छेद के अनुसार राज्य काम की न्यायसंगत और मानवोचित दशाओं को सुनिश्चित करने के लिये प्रसूति सहायता के लिए उपबंध करेगा। राज्य के इस नीति निर्देशक तत्व को क्रियान्वित करने के लिये संसद ने प्रसूति प्रसुविधा अधिनियम 1961 पारित किया। यह अधिनियम कतिपय स्थापना में शिशु जन्म से पूर्व और पश्चात् भी कतिपय कालवधियों में महिलाओं के नियोजन को विनियमित करने तथा प्रसूति प्रसुविधा और कतिपय अन्य प्रसुविधाओं का उपबंध करने के लिए पारित किया गया। इस अधिनियम में इस प्रकार की सुविधाओं की व्यवस्था है,जैसे किसी स्त्री की मृत्यु की दिशा में प्रसूति प्रसुविधा का संदाय चिकित्सीय बोनस का संदाय, गर्भपात आदि की दशा में छुट्टी बध्याकरण आपरेशन के लिये मजदूरी के साथ छुट्टी गर्भावस्था, प्रसव, समयपूर्व शिशु जन्म या गर्भपात से पैदा होने वाली रूग्णता के लिये छुट्टी तथा पोषणार्थ विराम आदि।

संविधान का अनुच्छेद 43, कामगारों के लिये निर्वाह मजदूरी का प्रावधान करता है। निश्चय ही इसमें महिलाएं भी शामिल है। निर्वाह मजदूरी तो नहीं इस अनुच्छेद के निर्देश के अनुपालन में न्यूनतम मजदूरी अधिनियम 1948 पारित किया गया है। यह अधिनियम कतिपय नियोजनों में मजदूरी की न्यूनतम दरों को नियत करने लिये अधिनियमित किया गया है। न्यूनतम मजदूरी क्या है, यह अधिनियम के अंतर्गत परिभाषित नही किया गया है। किन्तु इस अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार जो न्यूनतम मजदूरी नियत कर दी जाए, उसे प्रत्येक उस नियोजक की आर्थिक स्थिति इसे देने लायक हो न हो।

संविधान का अनुच्छेद 39(घ) पुरुषों और स्त्रियों दोनो के लिये समान वेतन दिये जाने का उपबंध करता है। इस अनुच्छेद के निर्देशों के अनुपालन में संसद ने समान पारिश्रमिक अधिनियम 1976 पारित किया।

सांविधनिक प्रावधानों की कड़ी में संविधान का 73वां और 74वां संशोधन जो 1992 में किया गया है। इसके माध्यम से जहां तक महिलाओं के अधिकार का प्रश्न पंचायतों और नगरपालिकाओं के लिये सीटों का आरक्षण किया गया है। संविधान का अनुच्छेद 51(क),(ड़) जो मूलतऋ कर्तव्यों से संबंधित है, भारत के प्रत्येक नागरिक पर यह कर्तव्य

अधिरोपित करता है कि वे ऐसी प्रथाओं का त्याग करें जो स्त्रियों के सम्मान के विरूद्ध है।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर 1945 से प्रारंभ मानवधिकार एवं महिला आन्दोलनों ने लिंग भेदभाव एवं असमानता के प्रश्नों को अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय मंचों पर राजनैतिक मुद्दों के रूप में प्रस्थापित किया। संयुक्त राष्ट्रीय संघ ने शान्ति स्थापना एवं विकास मात्रा में महिलाओं की भूमिका के महत्व को भी रेखांकित किया। संघ ने अनेक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन बनाए जिसमें महिलाओं को पुरुष के समान उत्थान का अधिकार दिया। इस प्रक्रिया में संयुक्त राष्ट्रीय मानवाधिकार घोषणा से पूर्व 1946 में महिला प्रस्थिति के अध ययन के लिए गठित समिति की घोषणा महत्वपूर्ण रही जिसकों कमीशन ऑन द स्टेटस ऑफ वूमेन का नाम दिया गया। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा चतुर्थ विशालतम सम्मेलन बीजिंग में 1995 आयोजित किया गया था। इसका नारा था ''दुनिया को महिलाओं की दृष्टि से देखा।'' दो दशक बाद महिलाओं की स्थिति पर इस सम्मेलन का कितना असर हुआ, इसी को दृष्टिगत रखते हुये संयुक्त राष्ट्र सांख्यिकी डिविजन के आर्थिक एवं सामाजिक संबंध विभाग द्वारा विश्व महिलाएँ-2015 प्रवृत्ति एवं सांख्यिकी रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। यह रिपोर्ट आठ बिन्दुओं पर केन्द्रित की गई जिनकी घोषणा 1995 के बीजिंग सम्मेलन में की गई थी।

महिलाओं पर चौथा विश्व सम्मेलन बीजिंग (चीन) में 4 सितम्बर 1995 तक हुआ था। महिलाओं पर संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रायोजित विश्व सम्मेलनों की श्रृंखला में यह चौथा सम्मेलन है। इन सम्मेलनों ने महिलाओं (जिनकी जनसंख्या विश्व की जनसंख्या की आधी है) के मानव अधिकरों की नींव या आधार शिला रखने का कार्य किया है। महिलाओं पर प्रथम विश्व सम्मेलन मैक्सिको शहर में 1975 में हुआ था। इस सम्मेलन में ''समानता विकास तथा शांति'' पर और अधिक बल दिया गया। महिलाओं पर द्वितीय विश्व सम्मेलन कोपेनहेगेन में 1980 में हुआ था। इस सम्मेलन में उपर्युक्त मुख्य विषयों के तीन उप-विषय ''शिक्षा, नियोजन एवं स्वास्थ्य'' जोड़े गये। महिलाओं पर तृतीय विश्व सम्मेलन नैरोबी में 1985 में हुआ था। इस सम्मेलन में उपरोक्त तीन विषयों को महिलाओं की उन्नति के लिए 2000 तक की नैरोबी अग्रिम-मुखी रचना-कौशल महिलाओं पर चौथा विश्व सम्मेलन बीजिंग (चीन) में 4 से 15 सितम्बर 1995 तक हुआ तथा इसमें ''समानता, विकास एवं शांति'' के विषयों को और आगे बढ़ाया गया।

महिलाओं की उन्नति के लिए 2000 तक की अग्रिम मुखी रचना-कौशल में सभी स्तरों पर महिलाओं को अधिकार देने तथा उनके मानव-अधिकार को सुनिश्चित करने की कार्यवाही का एक ढाँचा है। रचना-कौशल के लक्ष्यों को 2000 तक पूरा होना है।

इसमें महिलाओं के समान अधिकार, दासता एवं वेश्यावृत्ति की समाप्ति, विवाह के लिये विधिक न्यूनतम आयु, निर्धारित करना, शिशु-हत्या के लिये दंडित करना आदि सम्मिलित किया गया था।

पूर्व उपलब्धियाँ 2015 की रिपोर्ट एवं महिलाओं के चौथे विश्व सम्मेलन की उपलब्धियों पर विचार करने के पहले महिलाओं के मानव अधिकारों के क्षेत्र, 1945 से महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार प्रदान करने के क्षेत्र में पूर्व उपलब्धियों का उल्लेख करना वांछनीय होगा। इस संबंध में पूर्व उपलब्धियाँ निम्नलिखित हैं -

- महिलाओं के राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक अधिकारों की प्रोन्नति हेतु 1946 महिलाओं की प्रास्थिति पर कमीशन की स्थापना।
- महासभा द्वारा 1949 में व्यक्तियों के अवैध व्यापार पर रोक एवं अन्य लोगों की वेश्यावृत्ति द्वारा शोषण पर अभिसमय।
- अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संस्था द्वारा 1951 में पुरुषों एवं महिला कर्मकारों के समान मूल्य के कार्य के लये समान वेतनपर अभिसमय।
- महासभा द्वारा 1952 में मतदान के अधिकार समेत महिलाओं के राजनीतिक अधिकारों पर अभिसमय।
- अपने पतियों के कार्यों के बावजूद अपनी राष्ट्रीयता धारित किये रहने या परिवर्तन करने के अधिकार पर अभिसमय 1957
- नियोजन एवं उपजीविका से संबंधित भेदभाव पर अभिसमय, 1960
- 1962 में महासभा द्वारा अंगीकार किया गया विवाह हेतु सम्मति, विवाह के लिये न्यूनतम आयु तथा विवाहों के पंजीकरण पर अभिसमय
- महिलाओं के विरूद्ध भेदभाव की समाप्ति पर घोषणा 1967
- महिलाओं पर विश्व सम्मेलन, मेक्सिको सिटी 1975 द्वारा समानता, विकास एवं शांति विषयों पर प्रथम विश्व कार्यवाही योजना तथा महिलाओं के लये प्रथम विश्व दशक को स्वीकार किय जाना।
- 1976 में महासभा द्वारा महिलाओं के संयुक्त राष्ट्र दशक के लिये स्वेच्छिक फंड तथा महिलाओं की उन्नति के लिये संयुक्त राष्ट्र शोध संस्था की स्थापना।
- महासभा द्वारा 1979 में महिलाओं के विरूद्ध सभी प्रकार के भेदभावों की समाप्ति को स्वीकार किया जाना।
- 1980 में कोपेनहेगेन में महिलाओं पर द्वितीय विश्व सम्मेलन

- 1985 में नैरोबी में महिलाओं पर तृतीय विश्व सम्मेलन हुआ जिसमें वर्ष 2000 तक के लिये महिलाओं की उन्नति हेतु अग्रिम-मुखी रचना कौशल स्वीकार किया गया तथा महिलाओं के संयुक्त राष्ट्र दशक स्वेच्छिक फंड को महिलाओं के लिये संयुक्त राष्ट्र विकास फंड कर दिया गया जो संयुक्त राष्ट्र विकास प्रोग्राम के अंतर्गत एक स्वायत्त संस्था है।
- 1986 में विकास में महिलाओं की भूमिका पर प्रथम विश्व सर्वेक्षण प्रकाशित किया गया।
- 1991 में महिलाओं की विश्व स्थितियों पर विश्व की महिलायें : प्रवृत्तियाँ एवं सांख्यिकी क प्रकाशन हुआ।
- 1992 में रिओ डि जेनोरो में हुये पर्यावरण एवं विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में पोषणीय विकास में महिलाओं की प्रधान भूमिका को स्वीकार किया गया।
- 1993 में महासभा ने महिलाओं के विरूद्ध हिंसा की समाप्ति पर घोषणा पारित किया।
- 1994 में कैरो में हुये जनसंख्या एवं विकास पर हुये अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन सर्वप्रथम महिलाओं को अधिकार दिये जाने को विकास का अभिन्न भाग माना गया।
- अंत में 1995 में बीजिंग (चीन) में हुये महिलाओं पर चतुर्थ विश्व सम्मेलन में चिंता के नाजुक क्षेत्रों का पुनरीक्षण किया गया तथा बहस आदि के पश्चात् कार्यवाही के एक प्रस्तावित मंच को अंगीकार किया गया।

बीजिंग सम्मेलन में तैयारी, विचार विमर्श एवं अंतिम वार्ता आदि के लिये महिलाओं की प्रास्थिति पर संयुक्त राष्ट्र कमीशन ने कार्यवाही का मंच का एक प्रारूप जारी किया जिसमें 12 चिंता के नाजुक क्षेत्रों की महिलाओं की उन्नति के लिये बाधा के रूप में पहचान की गई। यह 12 चिंता के क्षेत्र निम्नलिखित है-

1. गरीबी
2. शिक्षा
3. स्वास्थ्य
4. हिंसा
5. संभव संघर्ष,
6. आर्थिक असमानता
7. शक्ति में हिस्सेदारी

8. संस्थायें
9. मानव अधिकारों की अन्तर्राष्ट्रीय संधियों के अनुसमर्थन प्रोत्साहन तथा उनके कार्यान्वयन की प्रोन्नति।
10. सूचना एवं माध्यम में समानता के आधार पर महिलाओं की पहुँच या अभिगमन।
11. निर्णय लेने में महिलाओं क अन्तर्ग्रस्त होना।
12. सभी प्रकर के भेदभाव एवं बालिकाओं के प्रति नकारात्मक संकीर्ण दृष्टिकोण एंव अभ्यासों की समाप्ति।

अतः 21वीं शताब्दी में प्रवेश की ओर अग्रसर होने के साथ-साथ महिलाओं के अधिकारों के आन्दोलन ने तीव्र गति प्राप्त कर ली है तथा पूर्ण विश्व में इसने शक्तिशाली गति ग्रहण कर ली है। 1925 में मेक्सिको सिटी में हुये महिलाओं पर प्रथम विश्व सम्मेलन से लेकर दो दशकों की महिलाओं के लिये पुरुषों के समान अधिकारों के आन्दोलन से महत्वपूर्ण परिवर्तन तथा उन्नति हुई है। इस दौरान अनेक अन्तर्राष्ट्रीय संधियाँ हुई है। तथा राज्य सरकारों ने अनेक कानून पारित किये हैं। एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह उठता है कि महिलाओं के लिये उठाये उपरोक्त उन्नति के लिये कदमों से क्या महिलाओं के प्रतिदिन जीवन में कोई सुधार हुआ है। इसका प्रत्यक्ष उत्तर सम्भव नहीं है। यद्यपि इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि यह निश्चित है कि सुधार हुआ है परन्तु इसके साथ यह भी सत्य है कि लाखों महिलाओं के साथ सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में भेदभाव होता है। अतः स्थिति मिश्रित है। 1993 में पूर्ण विश्व में केवल 6 महिलायें राज्याध्यक्ष थीं तथा 1995 में संयुक्त राष्ट्र में सदस्य राज्यों के 185 स्थायी प्रतिनिधियों में केवल 6 महिलायें थीं। कुछ क्षेत्र में स्थिति बड़ी ही गम्भीर है। एक अनुमान के अनुसार, विश्व की दो-तिहाई महिलायें अशिक्षित हैं तथा शिक्षा के क्षेत्र में उनकी प्रगति पुरुषों की अपेक्षा काफी मन्द है। औसतन पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं के वेतन समान कार्य के लिए 30 से 40 प्रतिशत कम हैं। प्रतिवर्ष लगभग आधी महिलाओं की मृत्यु बच्चों को जन्म देने में हो जाती है। इसके अतिरिक्त प्रतिवर्ष एक लाख महिलाओं की मृत्यु असुरक्षित गर्भपात के कारण हो जाती है। महिलाओं के विरूद्ध हिंसा सर्वत्र व्याप्त है- अमेरिका, जहाँ प्रत्येक 18 मिनट में एक महिला पीटी जाती है या उस पर प्रहार होता है, से लेकर भारत में जहाँ प्रतिदिन 5 महिलायें दहेज संबंधी विवादों में जलायी जाती है।

पिछले दो दशकों में हुयी प्रगति तथा कमियों या असफलताओं का मूल्यांकन करने हेतु तथा अगली शताब्दी में की जाने वाली कार्यवाही की पहचान करने के लिये बीजिंग (चीन) में 4 से 15 सितम्बर, 1995 तक महिलाओं पर विश्व सम्मेलन हुआ। इसमें

कार्यवाही के लिये मंच को अंगीकार किया गया। इसमें उन प्रधान मसलों की पहचान की गई जो पूर्ण विश्व में महिलाओं की उन्नति में अंगीकार किया गया। इसमें उन प्रधान मसलों की पहचान की गई जो पूर्ण विश्व में महिलाओं की उन्नति में बाधक हैं। सम्मेलन में भी निर्धारित किया गया कि 1996 तथा 2001 के बीच महिलाओं की उन्नति हेतु संयुक्त राष्ट्र तथा अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय कौन-कौन सी कार्यवाही वरीयता के आधार पर करेंगे। सम्मेलन ने दोनों नीति निर्माण एवं निम्न स्तरों पर महिलाओं एवं पुरुषों को उद्देश्य की प्राप्ति के लिये संगठित किया। समय के साथ-साथ संविधान में निहित मानव अधिकारों से महिलायें सशक्त हो रही हैं।

संदर्भ सूची

1. कपूर के.एस. (डॉ.) 2001 मानव अधिकार, सेन्ट्रल लॉ एजेन्सी इलाहाबाद,
2. बाबेल बसन्ती लाल (डॉ.) 1999 महिला एवं बाल कानून, सेन्ट्रल लॉ एजेन्सी, इलाहाबाद,
3. www.ssgcp.com
4. www.vivace.panorama.com
5. https://books.google.co.in
6. यादव वीरेन्द्र सिंह 2010 महिला सशक्तिकरण (तीन भाग) ओमेगा पब्लिकेशन, नई दिल्ली,
7. सिन्हा वी.सी. एवं सिन्हा पुष्पा, 1995 जनांकिकी के सिद्वान्त, मयूर पेपर बैक्स, नई दिल्ली,
8. कुरूक्षेत्र, मार्च 2005 (आलेख-सोना दीक्षित, अरूण कुमार दीक्षित) पृ.-10-11

5.

आर्थिक विकास एवं महिला सशक्तिकरण

डॉ.(श्रीमती) सविता गुप्ता
प्राध्यापक, अर्थशास्त्र
शासकीय नर्मदा महाविद्यालय
होशंगाबाद

आधुनिक युग, महिला सशक्तिकरण का युग हैं। महिला सशक्तिकरण न केवल भारत बल्कि संपूर्ण विश्व की राजनीति के साथ सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक मुद्दा बना हुआ है। जिसका सूत्रपात संयुक्त राष्ट्र संघ में 08 मार्च 1975 को अंतराष्ट्रीय महिला दिवस के साथ हुआ। भारत में महिला सशक्तिकरण के प्रयास स्वतंत्रता से पूर्व प्रारंभ हो गये थे। स्वतंत्रता के बाद संविधान में समान अधिकार, अवसर की समानता, समान कार्य के लिए समान वेतन का प्रावधान रखा गया। पंचवर्षीय योजनाओं में भी महिला विकास पर ध्यान दिया गया। 1985 में नैरोवी में सम्पन्न अंतराष्ट्रीय महिला सम्मेलन में सर्वप्रथम महिला सशक्तिकरण को परिभाषित किया गया। महिला सशक्तिकरण से तात्पर्य महिलाओं को पुरुषों के बराबर वैधानिक, राजनीतिक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आर्थिक क्षेत्रों में उनके परिवार समुदाय, समाज एवं राष्ट्र की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में निर्णय लेने की स्वायत्तता है। महिला सशक्तिकरण एक, बहुआयामी प्रक्रिया है।

अर्मत्य सेन ने कहा है, ''भारत की जनसंख्या समस्या का केवल एक मात्र समाधान यह है कि लिंग की समानता को ध्यान में रखकर सामाजिक विकास किया जाय, क्योंकि जन्म दर गिराने का एक मात्र उपाय महिलाओं की शिक्षा सामाजिक जागरूकता, और उत्थान हैं।''

महिलाओं से जुड़े सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और विधायी मुद्दों पर संवेदनापूर्ण सरोकार दृष्टि से चिंतन और अभिव्यक्ति ही महिला सशक्तिकरण है।

समाज की परंपरावादी पितृसत्तात्मक सोच के प्रति महिलाओं को जागरूक करना और वैश्विक स्तर पर विभिन्न स्त्रीवादी आंदोलनों संस्थाओं और अधिकारों की जानकारी महिलाओं को प्रदान कर महिलाओं को सशक्त बनाना ही महिला सशक्तिकरण का आधार है। महिलाओं को भौतिक, अध्यात्मिक, शारीरिक, मानसिक, आदि सभी स्तरों पर आत्मविश्वास पैदा कर सशक्त बनाने की प्रक्रिया ही महिला सशक्तिकरण है।

महिला सशक्तिकरण समानता पर आधारित एक विचार हैं, जो समाज में लैगिंग समानता की अपेक्षा करता है। महिला सशक्तिकरण के 5 स्तर हैं।

- कल्याण स्तर
- संसाधनों तक पहुँच स्तर
- प्रत्यक्षीकरण स्तर
- सहभागिता स्तर
- नियंत्रण स्तर

विभिन्न अध्ययनों में महिला सशक्तिकरण के जो सूचक तय किये गये हैं वे इस प्रकार हैं-

- आवश्यक सुविधाओं की पूर्ति
- संसाधनों तक पहुँच
- स्वास्थ्य सुरक्षा
- शिक्षा
- निर्णय प्रक्रिया में सहभागिता
- आर्थिक स्वतंत्रता
- जनसहभागिता
- गतिशीलता की स्वतंत्रता
- शासकीय सहायता

इन आधारों पर अनुकूलता महिला सशक्तिकरण का प्रयास हैं।

पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम के शब्दों में, अच्छे राष्ट्र को बचाने के लिए महिला सशक्तिकरण एक आवश्यक पूर्व दशा हैं, क्योंकि जब एक महिला सशक्त होती है तो समाज में स्थायित्व सुनिश्चित होता है। महिला सशक्तिकरण इसलिए आवश्यक हैं क्योंकि उनके विचार एवं मूल्य एक अच्छें परिवार, अच्छे समाज एवं अंततः एक अच्छे

राष्ट्र के विकास की अगुवाई करते हैं।

महिला सशक्तिकरण की संपूर्ण अवधारणा महिलाओं को समुचित अवसर प्रदान करने में है। भारत में महिला सशक्तिकरण का मुख्य उद्देश्य महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक दशा में सुधार करना हैं। महिला सशक्तिकरण के दो पहलू हैं, महिलाओं में सामाजिक स्तर पर स्वाभिमान एवं आत्म निर्भरता की भावना जागृत करना, दूसरा आर्थिक मोर्चों पर महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना।

आर्थिक क्षेत्र में महिला सशक्तिकरण का अर्थ महिलाओं की अर्थ उपार्जन में भागीदारी बढ़ सके जब हम सशक्तिकरण की बात करते हैं तो महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता का प्रश्न पैदा होता है। अर्थात जब तक महिला आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नहीं होगी तब तक सशक्त कैसे बन सकती है।

भारत में महिलाओं की वर्तमान स्थिति

प्राचीनकाल से ही महिलायें परिवार तथा देश की आर्थिक उन्नति में किसी न किसी रूप में अपना योगदान देती रही है। मानव की प्रगति के साथ महिलाओं का कार्य क्षेत्र बढ़ता गया, हालाकि महिलाओं की उत्पादक गतिविधियों में भागीदारी बढ़ी हैं लेकिन गतिविधियों को मापने के सटीक तरीके न होने के कारण महिलाओं के राष्ट्रीय आय में योगदान को समझ पाना मुश्किल हैं। भारतीय महिला ग्रामीण अर्थव्यवस्था की आधारशिला हैं। कृषि प्रधान देश होने के कारण ग्रामीण महिलाओं की भूमिका हमेशा ग्रामीण क्षेत्रों में हस्तकला कृषि लघुउद्योग क्षेत्रों में रोजगार प्राप्त करने की रही हैं। औद्योगिकरण के कारण दबाव बढ़ा है। परिवार की सीमित आय में वृद्धि के लिए महिलाओं ने उत्पादकीय भूमिका निभाना शुरू किया है। लगभग ग्रामीण क्षेत्रों में 90 प्रतिशत गरीब निरक्षर महिलाएं कृषि से संबंधित कार्य खनन भवन निर्माण सड़क निर्माण आदि कार्यों में संलग्न रहती है। कृषि कार्य के अंतर्गत फसल कटाई से लेकर खेत की रखवाली तक का कार्य करती हैं। कृषि भूमि के सीमित होने मौसम की अनिश्चितता, आदिवासी क्षेत्रों में वनसंपदा में कमी, पुरुष वर्ग द्वारा काम की तलाश में शहरों में पलायन से ग्रामीण आदिवासी पिछड़े क्षेत्रों में महिलाओ का प्रतिशत बढ़ गया है।

आर्थिक विकास के प्रति बढ़ती जागरूकता, बदलता सामाजिक परिवेश, बदलती संस्कृति और आधुनिक सभ्यता ने विश्व के समाजों को प्रभावित किया हैं, भारतीय समाज भी इससे अछूता नही हैं। महिलाओं ने विभिन्न कार्य क्षेत्रों की चुनौतियों को स्वीकार कर अपनी उपयोगिता स्थापित की है। अगर महिलाओं की स्थिति की बात की जाये तो उनकी स्थिति बेहतर हो रही हैं लेकिन इस बदलाव की गति काफी धीमी

है। वर्ल्ड, इकोनामिक फोरम की ग्लोबल जेंडर गेप रिपोर्ट के अनुसार आज महिलाओं की स्थिति ऐसी हैं कि जेंडर गेप को पूरा करनें में 217 साल लग जायेगें। इस स्थिति को देखते हुए दुनिया भर में माना जा रहा हैं, कि महिलाओं को आगे बढ़ाने के लिए अब प्रयत्न करना सबसे जरूरी हो गया है।

भारत में कार्य सहभागिता दर 2011

	कुल	ग्रामीण	शहरी
व्यक्ति	39.8	41.8	35.3
पुरुष	53.3	53.0	53.8
महिला	25.5	30.0	15.4

महिलाओं में श्रम भागीदारी दर 1981 में 19.67 प्रतिशत 1991 में 22.27 प्रतिशत एवं 2001 में 25.63 प्रशित थी।

भारत में पिछले एक दशक में सार्वजनिक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बड़ी है, हालाकि कार्यक्षेत्र में भेदभाव और पुरुष वर्चस्व की मानसिकता के कारण ही महिलाओं को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। हाल ही में एक वैश्विक सर्वे के अनुसार प्रत्येक 4 में से 1 भारतीय पुरुष का मानना है कि महिलाओं को घर से बाहर काम करने नहीं जाना चाहिए।

पिछले कुछ वर्षों में आर्थिक बदलाव के बावजूद भी भारतीय महिलाओं की स्थिति में अभी सुधार की बड़ी जरूरत है। पीस एन्ड सिक्योरिटी इन्डेक्स में भारतीय महिलाओं की पिछड़ी स्थिति के कारण भारत को 131 वें स्थान पर रखा गया है। सर्वे के परिणाम स्पष्ट करते हैं कि भारत में आर्थिक और सामाजिक स्तर पर महिलाओं को भेदभाव का सामना करना पड़ता है देश की महिलाओं की आर्थिक और सामाजिक भागीदारी भी फिलहाल विकसित देशों से काफी कम हैं। यह इंडेक्स विश्व भर की महिलाओं की संवृद्धि और मानसिक शांति के विश्लेषण के आधार पर तैयार किये गये हैं।

भारत के लिए लिंगानुपात की विषम स्थिति भी एक गंभीर समस्या बनी हुई है इस संबंध में सरकारी प्रयास भी कारगर सिद्ध नही हो रहे हैं क्योंकि सामाजिक, वातावरण एवं समाज की मानसिकता में आवश्यक बदलाव नही आया है।

भारत में लिंगानुपात तालिका

प्रति 1000 पुरुषों पर महिलायें

जनगणना वर्ष	महिलायें	जनगणना वर्ष	महिलायें में
1901	972	1961	941
1911	964	1971	930
1921	955	1981	934
1931	950	1991	927
1941	945	2001	933
1951	946	2011	943

स्रोत-विभिन्न जनगणना आंकड़े

विश्व आर्थिक मंच द्वारा वैश्विक लैगिंक अंतराल रिपोर्ट तैयार की गयी है, वैश्विक लैंगिक अंतराल सूचकांक 2014 में भारत का प्रदर्शन निराशाजनक रहा है। सूचकांक में शामिल 142 देशों में भारत की रैकिंग 114 थी। यह सूचकांक आर्थिक सामाजिक राजनैतिक, शैक्षिक और स्वास्थ्य कारकों में राष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं की भागीदारी के आधार पर तैयार किया जाता है। विभिन्न मानकों पर भारत की रैकिंग

वर्ष	ओवर आल	आर्थिक भागीदारी	शैक्षिक उपलब्धि	स्वास्थ्य एवं उत्तर जीविकता	राजनीतिक सशक्तिकरण
2014	114	134	126	141	15
2013	101	124	120	135	09
2012	105	123	121	134	17
2006	98	110	102	103	20

इसके अंतर्गत 4 आयाम शैक्षणिक उपलब्धि, आर्थिक भागीदारी, स्वास्थ्य एवं अस्तित्व तथा राजनीतिक सशक्तिकरण है। भारत ने 2 प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से लैगिंक अंतराल को कम किया है। आर्थिक भागीदारी एवं अवसर के क्षेत्र में तथा स्वास्थ्य एवं अस्तित्व के क्षेत्र में चुनौती हैं। राजनीतिक भागीदारी एवं शैक्षणिक उपलब्धियों में भारत का प्रदर्शन अपेक्षाकृत सही रहा है। वैश्वीकरण के प्रभाव स्वरूप महिलाओं की भूमिका का विस्तार हुआ है। दोहरी भूमिका ने महिलाओं के समक्ष

चुनौती प्रस्तुत की है। आज भारत भारतीय महिला संक्रमणकाल से गुजर रही है उसका एक पैर घर के बाहर तो दूसरा घर की चौखट के अंदर है।

भूमण्डलीकरण एवं उदारीकरण के दौर में चाहे बैंकिग हो या वित्त, राजनीति हो या होटल व्यवसाय, वाहन उत्पादन से दवा उत्पादन तक, उर्जा और पर्यावरण इंजीनियरिंग सभी क्षेत्रों में महिलाएं आगे बढ़कर कंपनी या संस्थान की कमान संभाल रही है। और अभिनव प्रयोगों से अपनी प्रतिभा के झंडें फहरा रही है। युवा महिलाएं अपने कैरियर को मुकाम तक पहुँचा रही हैं। जीविकोपार्जन और नये कैरियर की खातिर वह चढ़ कर काम कर रही हैं।

भारत की कृषि अर्थव्यवस्था में महिलाओं मुख्य कार्यबल है। संगठित क्षेत्रों में केवल 13 प्रतिशत महिलायें कार्यरत है। कार्यकारी महिलाओं की सबसे अधिक संख्या असंगठित क्षेत्रों में है। प्रत्येक दस में से नौ महिलाएं असंगठित क्षेत्रों में कार्यरत है। रोजगार में महिलाओं की भागीदारी गिर रही है। जनगणना के आकड़े बताते है कि यदि रोजगार उपलबध हो तो घर पर रहने वाली एक तिहाई महिलाएं काम करना चाहेगी। सरकार की रोजगार योजनाऐं भी महिलाओं को पुरुषों की अपेक्षा अधिक आकर्षित करती हैं। इससे रोजगार की समस्या रेखांकित होती है। मशीनीकरण से कृषि क्षेत्र में रोजगार घटता है। जहाँ अधिकांश महिलायें काम करती है।

पिछले वर्षों में मध्यम और उच्च वर्ग की महिलाएं ने तकनीकी विकास में तेजी से कदम रखा हैं। यद्धपि आकड़े उत्साहवर्धक नहीं हैं। निजी एवं प्रशासनिक क्षेत्रों में पदार्पण इनकी आर्थिक दृढ़ता को बढ़ाता है। आर्थिक विकास सामाजिक संरचना से प्रभावित होता है। समाज की संरचना में महिलाओं का योगदान आंरभ से ही उल्लेखनीय होने के बावजूद उनके उचित मूल्यांकन का सर्वथा अभाव रहा है। महिलाओं की आर्थिक भागीदारी युगीन आवश्यकता है अतः इस क्षेत्र में पुरुष ने ना चाहते हुए भी स्वीकार कर लिया हैं। किन्तु अन्य क्षेत्रों में अभी भी संकोच होता है।

सूचना, संचार, तकनीकी का विकास, शिक्षा का सार्वभौमिकरण, स्वास्थ सेवाएं, राजनीतिक सबलीकरण के प्रयास के कारण महिलाओं की स्थिति में सुधार होना प्रारंभ हुआ है।

महिलाओं को उचित अवसर की आवश्यकता है। इसे प्राप्त होते ही वे अपनी असीम शक्ति को समाज में प्रदर्शित कर सकती है। वैश्वीकरण बाजार और मीडिया ने पूरे विश्व की स्त्री विकास के मानक चिन्हों को लगभग एक कर दिया है। अवसरों की मांग लैगिंक पूर्वाग्रह का विरोध स्त्री के विकास के लिए आर्थिक सामाजिक शैक्षिक, एवं राजनीतिक समानता की मांग प्रमुख मानक चिन्ह हैं। आजकल इन क्षेत्रों में भी

महिलाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है- कुली, ईमाम, बाडी विल्डर कमाण्डो ट्रेनर, माइनिंग इंजीनियर, फाइटर पायलेट, मिशाईल डेवलपर, रैसिंग ड्राइवर, लाइसेंस्ड फिशर वूमेन, लोको पायलेट, महिला रक्षा मंत्री, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, विदेश मंत्री, आदि। देश में 1200 से अधिक महिलायें कमर्शियल पायलट हैं इंडियन एयरलाइंस में 12 प्रतिशत महिलाओं कार्यरत है, जबकि वैश्विक औसत 5 प्रतिशत से भी कम हैं। भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप हब हैं लेकिन 9 प्रतिशत ही महिलाओं के हैं। देश की कंपनियों में 2015 में 11.2 प्रतिशत महिलाओं बोर्ड मेम्बर हैं, 14 प्रतिशत महिलायें व्यवसाय चला रही है 26 प्रतिशत इंजीनियरिंग क्षेत्र में 34 प्रतिशत आई.टी. क्षेत्र में कार्यरत है। फोर्ब्स के अनुसार महिलाओं के लिए सबसे अच्छे देश।

देश का नाम		विश्व में स्थान
आइसलैंड	-	01
नार्वे	-	02
फिनलैंड	-	03
स्वीडन	-	04
रवांडा	-	05

यू.एन. के अनुसार दुनिया के खुशहाल देश

देश का नाम		विश्व में स्थान
नार्वे	-	01
डेनमार्क	-	02
आइसलैंड	-	03
स्विजरलैंड	-	04
फिनलैंड	-	05

भारत में महिला सशक्तिकरण के सरकारी प्रयास

महिलाओं में आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, जागरूकता उत्पन्न करने एवं उन्हें आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाने, उनकी आय बढ़ाने हेतु सरकार द्वारा महिलाओं के लिए कई कल्याणकारी योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है। महिलाओं को आर्थिक सहायता रोजगार, एवं प्रशिक्षण पर बल दिया जा रहा है। भारत सरकार द्वारा महिलाओं को कानूनी संरक्षण प्रदान करने के लिए भी कई अधिनियम बनाये गये है। 1990 में राष्ट्रीय महिला आयोग का गठन, 1993 में राष्ट्रीय महिला कोष का गठन, वर्ष 2001

को महिला सशक्तिकरण के रूप में वर्ष 2011 को महिला अधिकारिता वर्ष के रूप में घोषित किया गया है।

महिलाओं के विकास से संबंधित योजनाओं को 04 भागों में बाँटा जा सकता है।

- आर्थिक विकास से संबंधित कार्यक्रम
- सामाजिक विकास हेतु कार्यक्रम
- स्वास्थ्य में सुधार कार्यक्रम
- महिला उत्थान एवं कल्याण कार्यक्रम

इन नीतियों एवं कार्यक्रमों का मुख्य लक्ष्य महिलाओं की गरिमापूर्ण भागीदारी सुनिश्चित करना, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सुरक्षा, महिलाओं की समग्र समताओं का विकास, महिलाओं से संबंधित नीतियों एवं विधियों का परिणाम मूलक क्रियान्वयन। केन्द्र सरकार द्वारा महिलाओं के विकास के लिए सुकन्या समृद्धि योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान, प्रधानमंत्री मातृवंदना योजना, किलकारी मातृत्व अवकाश, उज्जवला योजना, बालिका शिक्षा पर विशेष जोर, मुद्रा योजना, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन इत्यादि संचालित है।

मध्य प्रदेश शासन द्वारा महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए 2012 में पृथक से महिला सशक्तिकरण विभाग की स्थापना की गयी। राज्य सरकार द्वारा निरंतर प्रयास किया जा रहा हैं, कि हर क्षेत्र में महिला वर्ग को उचित स्थान मिले। नारी शक्ति को अपनी क्षमता के पूरे अवसर मिलें। राज्य में उषा किरण योजना, किशोरी शक्ति योजना, मुख्यमंत्री महिला सशक्तिकरण योजना, गाँव की बेटी योजना, मुख्यमंत्री कन्यादान योजना, लाड़ली लक्ष्मी योजना, महिला जागृति शिविर, महिला आश्रय गृह, सौर्या दल, स्वाधार योजना, जननी सुरक्षा योजना, महिला स्वास्थ्य शिविर, बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं, तेजस्वनी ग्रामीण महिला सशक्तिकरण इत्यादि योजनाऐं संचालित की जा रही है। मध्यप्रदेश महिला एंव बाल विकास द्वारा महिला वित्त विकास निगम के अंतर्गत स्टेट रिसोर्स सेन्टर फार वूमेन की स्थापना की गई है। मध्यप्रदेश के देश के 05 राज्यों में हैं जहाँ जेंडर रिस्पोन्सिव बजट तैयार किया जाता है। जेंडर बजट अलग से कोई बजट नही है बल्कि एक सामान्य सरकारी बजट में एक विश्लेषणात्मक उपकरण है जो सरकार को अपनी नीतियों को महिलाओं की दृष्टि से तैयार करने में मदद करता है।

विभिन्न क्षेत्रों से आँकड़े, महिलाओं की भागीदारी एवं उनके विभिन्न सामाजिक, आर्थिक पहलुओं पर अध्ययन एवं चिंतन के पश्चात् यह ज्ञात होता है कि अभी भी वास्तविक स्थिति संतोषजनक नहीं है। मात्र कुछ महिलाओं का उदाहरण देकर हम सशक्तिकरण की बात नही कर सकते, जब तक महिलाओं में साक्षरता पूरी तौर पर

ना आ जाये। आज देश की आधी जनसंख्या को स्वयं ही जानना होगा और स्वयं को इस रूप में तैयार करना होगा कि देश के विकास में भागीदार बने। सुधारवादी आंदोलनों तथा सरकारी प्रयासों से महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन हुए हैं। सशक्तिकरण कार्यक्रम महिलाओं की समुचित साझेदारी के बिना समग्र सामाजिक एवं आर्थिक विकास की कल्पना अधूरी होगी। महिलाओं के हितों के अनेक कानून होने के बावजूद इस दिशा में बहुत कुछ किया जाना शेष है। हम महिलाओं के सशक्तिकरण की बात करें न कि सिर्फ महिला सुरक्षा की।

भारत में आर्थिक क्षेत्र में महिला सशक्तिकरण हेतु सुझाव

- महिलाओं को अच्छी शिक्षा, स्वास्थ्य एवं आत्मनिर्भरता दी जाये।
- महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया में और अधिक तेजी लाने में सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया जा सकता है।
- स्वसहायता समूहों की सहायता से उद्यमशीलता की भावना का विकास किया जा सकता है।
- आर्थिक क्षेत्र में हो रहे महिलाओं के कार्यों में अवमूलयन को रोकने आर्थिक, संसाधनों पर उनके अधिकारों का संचार करने तथा रोजगार उन्मुख कार्यों का प्रशिक्षण प्रदान करने जैसे मानदंडों पर क्रांति की आवश्यकता है।
- कृषि क्षेत्र में महिला कामगारों को लाभ पहुँचाने विभिन्न योजना जैसे भूसंरक्षण, सामाजिक वानिकी, डेयरी, विकास, कृषि से जुड़े व्यवसाय मछली पालन, रेशम कीड़े पालन आदि का प्रशिक्षण दिया जाये।
- विकास प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए महिला अनुकूल कार्मिक नीतियों तैयार की जाये।
- अधिकांश विकास कार्यक्रमों में महिलाओं के कल्याण पर जोर दिया जाता है लेकिन उनकी उत्पादकीय सहभागिता में वृद्धि करने के लिए कोई प्रयास एवं नीति निर्माण नहीं होता। अतः प्रशिक्षण एवं रोजगार के समान अवसर मिले, ताकि विकास कार्यक्रमों में उनका योगदान महत्वूपर्ण हो सके।
- महिलाओं के लिए कानून एवं नियमों का सरलीकरण किया जाये जो महिलाओं को उनका अधिकार दिलवा सके।
- प्रत्येक परिवार समाज एवं राष्ट्र की उन्नति का मूलाधार महिला ही है अतः महिला को उच्च शिक्षा देना आवश्यक है।
- महिला सशक्तिकरण के सभी क्षेत्रों में अन्तराष्ट्रीय दायित्वों एवं वचनवद्धताओं को

क्रियान्वित किाय जाये।

- जेंडर बजट महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक प्रभावी उपकरण हैं।
- सभी महिलाओं से संबंधित क्षेत्रों में महिलाओं के हस्तक्षेप द्वारा पूरक स्वास्थ्य शिक्षा, रोजगार प्रशिक्षण विभिन्न क्षेत्रों में माइक्रों क्रेडिट के प्रावधान हो।
- महिला प्रौढ़ शिक्षा समितियों का गठन एन.जी.ओ. तथा सरकार के माध्यम से किया जाये।
- दहेज प्रथा, निरक्षरता बाल विवाह, भ्रूण हत्या जैसी कुरीतियों का डटकर मुकाबला करने के लिए एवं अपने अधिकारों के लिए महिलाएं जागरूक एवं संगठित है।

योजनाओं एवं कानूनों के बावजूद महिला सशक्तिकरण एक चुनौती है। दुनिया भर के देशों द्वारा माना जा रहा है कि अब महिलाओं की प्रगति में टालमटोल का रवैया नही अपनाया जा सकता। लैंगिक भेद को कम करने के लिए इस पर कार्यवाही की आवश्यकता है। महिलाओं को आर्थिक विकास की मुख्य धारा में उनके सामाजिक एवं आर्थिक विकास के साथ सम्मिलित किया जाये।

आज विभिन्न आर्थिक, सामाजिक कार्यक्षेत्रों में महिलाओं ने सफलता हासिल कर यह सिद्ध कर दिया है कि वे परंपराओं से हटकर एक नवीन समाज की रचना कर सकती है। महिलाओं का विकास करने के लिए आर्थिक स्वावलंबन आवश्यक हैं। खेतिहर मजदूर महिलायें एवं रोजमर्रा मजदूरी करने वाली महिलायें प्रचुर मात्रा में विद्यमान हैं। कानूनों को व्यवहारिक बनाने के साथ-साथ सामाजिक ढ़ांचे में परिवर्तन की आवश्यकता है। दुनिया में ऐसा कोई देश नही है जहाँ महिलाओं को हासियें पर रखकर विकास संभव हुआ हो। महिलाओं को विकास की मुख्यधारा से जोड़े बिना किसी समाज एवं देश के आर्थिक सामाजिक एवं राजनीतिक विकास की कल्पना नही की जा सकती है। समाज को निसंदेह अपने प्रयासों से सामाजिक आर्थिक, राजनीतिक समस्याओं से जूझते हुए महिलाओं ने चौखट की देहलीज से अंतरिक्ष तक का रास्ता बनाया है अब जरूरत है समाज के लिए आदर्श बन चुकी कुछ महिलाओं को सामान्य जीवन का सच बनाया जाये।

संदर्भ सूची

1. दुबे माधवी लता समाजशास्त्रीय निबंध म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी
2. मिश्र दिनेश कुमार जनसंख्या पर्यावरण एवं विकास

3. सिन्हा वी.सी. श्रम अर्थशास्त्र
4. सक्सेना एम.सी. श्रम समस्यायें एवं सामाजिक सुरक्षा
5. सिन्हा बी.सी. भारतीय अर्थव्यवस्था
6. शर्मा वीरेन्द्र प्रकाश भारतीय सामाजिक मुद्‌दे एवं समस्यायें
7. आहूजा श्रीराम सामाजिक समस्यायें
8. मिश्रा जे.पी. जनांकिकी
9. वघेल डॉ. डी. एस. सामाजिक परिवर्तन एवं विकास
10. क्रान्तिकल दिसम्बर 2014
11. दैनिक भास्कर समाचार पत्र
12. प्रतियोगिता दर्पण विभिन्न अंक
13. जनगणना आंकड़े 2001-2011
14. भारतीय अर्थ व्यवस्था विशेषांक 2017 उपकार प्रकाशन आगरा
15. भारत का आर्थिक सर्वेक्षण 2014-15

6.

महिला विकास के राजनैतिक दृष्टिकोण

डॉ. नीता चौबे
प्राध्यापक, राजनीति शास्त्र
माखन लाल चतुर्वेदी शासकीय महाविद्यालय
बाबई (होशंगाबाद)

नारी ईश्वर की अनुपम कृति है। नारी के अभाव में सृष्टि की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। नारी का त्याग और बलिदान भारतीय संस्कृति की अमूल्यनिधि है। वैदिक काल के अध्ययन से पता चलता है कि उस युग में नारी को समुचित आदर प्राप्त था। धीरे-धीरे बाद के काल में पुरुषप्रधान समाज के निर्माण के कारण महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन आने लगा।

पश्चिमी देश जिन्होंने अपनी संस्कृति की आधुनिकता एवं प्रगतिशीलता की दुहाई देकर तीसरी दुनिया की तथाकथित हीन सभ्यताओं पर लंबे समय तक शासन किया, वे भी प्रथम विश्वयुद्ध का दंश झेलने के बाद ही महिलाओं को मताधिकार दे पाये। पाश्चात्य राजनैतिक दर्शन में भी महिलाओं को समुचित सम्मान नहीं मिला। प्लेटो पहला दार्शनिक है जो महिलाओं के शिक्षा के अधिकार का समर्थन करता है एवं उन्हें दार्शनिक राजा बनने के योग्य समझता है। इसके बाद जे.एस.मिल के पहले तक ना ही प्राचीन और ना ही मध्यकालीन विचारकों ने राजनीति में महिलाओं के दृष्टिकोण को महत्व दिया। जे.एस. मिल अपने निबंध द सबसेक्शन ऑफ वुमन में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी का पुरजोर समर्थन करते हैं। वह कहते हैं कि महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता से न केवल महिला सशक्तिकरण होता है अपितु समाज का फायदा भी होता है। मिल तर्क देते हैं कि महिलाओं की राजनैतिक भागीदारी से पुरुष सभ्यतापूर्वक व्यवहार करते है एवं महिलाओं से जुड़ी नकारात्मकता का अंत होता है जो समाज को प्रगतिशील बनाता है। इन विचारों से प्रभावित हो कर महिलाओं ने

राजनैतिक एवं नागरिक अधिकारों की मांग करते है जिसमें वे पुरुष के समान स्थान प्राप्त करने का मार्ग समझते है, पर समाजवाद की बढ़ती लोकप्रियता ने बढ़ाई।

एंजिल्स ने अपनी पुस्तक ''दी ओरिजन ऑफ फेमिली प्राइवेट प्रापर्टी एंड स्टेट'' में महिलाओं को साम्यवादी क्रांति में हिस्सा ले कर सशक्तिकरण की ओर बढ़ने को प्रेरित किया! ''रेडिकल फेमेनिष्ट'' सुस्पष्ट एवं निर्भीकता से महिला विकास के राजनीतिक दृष्टिकोणों का विश्लेषण करते है। केरोल तानिश नारा देती है ''दी पर्सनल इज पॉलिटिकल'' अर्थात राजनीतिक निर्णयों का प्रभाव महिलाओं के निजी जीवन पड़ता है अतः महिलाओं का राजनीति में प्रवेश न्यायसंगत है।

भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी एवं अधिकारों की प्राप्ति के लिये संघर्ष 20 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता प्राप्त करने से प्रारम्भ होता है। उन्होंने 'गृहशासन' (1916) आंदोलन में भाग लिया तथा बाद में महात्मा गांधी द्वारा चलाये गये असहयोग आंदोलन एवं सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लिया। एनी बिसेन्ट, सरोजनी नायडू, राजकुमारी अमृत कौर, अरूणा आसफ अली, कमला देवी चट्टोपाध्याय आदि ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका का निर्वाह किया।

विमेन्स इंडियन एसोसियेशन, ऑल इंडिया विमेन कान्फ्रेन्स एवं नेशनल काउन्सिल ऑफ विमेन इन इंडिया जैसे महिला संगठनों ने 1932 के द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में ज्ञापन देकर वयस्क मताधिकार तथा सामान्य निर्वाचकों की व्यवस्था करने की बात कही तथा महिलाओं के आरक्षण एवं मनोनयन के सुझाव को अस्वीकार करते हुये पूरी समानता की माँग की थी।[1]

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व महिलाओं के हित में एक महत्वपूर्ण अभिलेख, जो कि ''नियोजित अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भूमिका'' पर उपसमिति की रिपोर्ट है, जिसमें कहा गया है कि महिलाओं को व्यक्ति के रूप में देखा जायें तथा उन्हें भी राजनीतिक, नागरिक एवं कानूनी अधिकार, सामाजिक समानता तथा आर्थिक स्वतंत्रता एवं विकास में पुरुषों के समान हिस्सेदारी होनी चाहिये। पुरुष के समान स्थान पाने का मार्ग समझते है।

1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् लैगिंग समानता का सिद्धांत, भारतीय संविधान की प्रस्तावना, मौलिक अधिकारों, मौलिक कर्तव्यों और नीति निर्देशक तत्व सिद्धांत है। प्रमुख रूप से उल्लेखित है। संविधान महिलाओं को न केवल समानता का दर्जा प्रदान करता है अपितु राज्य को महिलाओं के पक्ष में सकारात्मक भेदभाव के उपाय करने की शान्ति भी प्रदान करता है।

भारत का संविधान सभी भारतीय महिलाओं को समान अधिकार, (अनुच्छेद 14) राज्य द्वारा कोई भेदभाव नहीं करने, (अनुच्छेद 15) अवसर की समानता, (अनुच्छेद 16) समान कार्य के लिये समान वेतन (अनुच्छेद 39 (घ)) की गारंटी देता है। इसके अलावा यह महिलाओं और बच्चों के पक्ष में राज्य द्वारा विशेष प्रावधान किये जाने की अनुमति प्रदान करता है (अनुच्छेद 15 (3)) तथा काम की उचित एवं मानवीय परिस्थितियों सुरक्षित करने और प्रसूति सहायता के लिये राज्य द्वारा प्रावधानों को तैयार करने की अनुमति देता है (अनुच्छेद 42)।[2]

1950 तथा 1960 के दशक में धर्म निरपेक्ष, बहुलवादी, तथा सांस्कृतिक विभिन्तता से समन्वित राजनीतिक व्यवस्था को बढ़ावा दिया गया। इस राजनीतिक वातावरण एवं संवेधानिक व्यवस्थाओं से कुछ महिलायें लाभान्वित हुई। मध्यम वर्ग की बहुत सी महिलाओं को विभिन्न सेवाओं में प्रवेश प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ। सरकार द्वारा 'महिला मंडलों' की व्यवस्था की गयी तथा महिला उत्थान के लिये अनेक कार्यक्रम बनाये गये लेकिन महिलाओं को उस समय निराश होना पड़ा जब सामान्य नागरिक कोड जो सभी महिलाओं को कानूनी समानता प्रदान करता है, लागू नहीं किया जा सका। हिन्दु कोड बिल भी अपने प्रारम्भिक रूप में नहीं पारित किया जा सका। 1955-56 में इसको बहुत काँट छाँट कर चार अधिनियमों मे पारित किया गया जो विवाह, उत्तराधिकार, संरक्षण, दत्तकग्रहण तथा भरण भत्ते से संबंधित है।[3]

इसके अतिरिक्त विशेष विवाह अधिनियम 1961 में लाया गया। इन सब अधिकारों के प्राप्त होने से स्त्रियों को विवाह, सम्पत्ति, संरक्षण और विवाह विच्छेद के क्षेत्र में पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त हुये तथा सामाजिक रूढ़ियों से मुक्त होने का अवसर मिला। भारत में 'महिलाओं की स्थिति संबंधी समिति' ने दिसम्बर, 1974 में 'समानता की ओर' शीर्षक के अंतर्गत सरकार को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। 'पांचवी पंचवर्षीय योजना (1974-78) से महिलाओं से जुड़े मुद्‌दों के प्रति कल्याण की बजाय विकास का दृष्टिकोण अपनाया जा रहा है।[4]

अप्रैल, 1993 में 73 वां संशोधन लागू हुआ। संविधान में नया अध्याय 9 जोड़ा गया एवं 74वें संविधान अधिनियम 1992 द्वारा संविधान में भाग 9-क जोड़ा गया, जिससे स्थानीय स्वशासन, उसका ढाँचा उसकी शक्तियाँ तथा कार्यों का सुदृढ़ीकरण किया गया और उन्हें संवैधानिक दर्जा दिया गया। महिलाओं के लिये पंचायत एवं नगरपालिका के स्थानीय निकायों में एक तिहाई स्थान आरक्षित किये गये। जिसके परिणाम स्वरूप स्थानीय स्तरों पर निर्णय लेने की प्रक्रिया में उनकी भागीदारी को मजबूत आधार प्राप्त हुआ। 'पंचायती राज संस्थाओं के माध्यम से दस लाख से अधिक महिलाओं ने सक्रिय रूप से राजनीतिक जीवन में प्रवेश किया है।[5] लेकिन बहुत ही कम महिलायें सक्रिय

व स्वतंत्र रूप से कार्य कर रही हैं।

बिहार व उत्तर प्रदेश जैसे कुछ अन्य राज्यों में निर्वाचित महिलाओं के पति ही उनके कार्यों का संचालन करते है। महिला पंचायती सदस्यों का उनके परिवार के पुरुषों द्वारा ''रबर स्टेम्प'' की तरह इस्तेमाल किया जाता है। महिलायें पुरुषों के लिये पिछले दरवाजे से राजनीति में प्रवेश करने का माध्यम बन गयी है। अधिकतर महिलाओं ने आज की राजनीति के बारे अपनी चिन्ता जताई है उच्चतर तथा निचले स्तर पर अधिकारी तंत्र के विरूद्ध अपना आक्रोश प्रकट किया है।[6]

भारत सरकार ने 2001 को 'महिला सशक्तिकरण (स्वशक्ति) वर्ष के रूप में घोषित किया।[7] महिलाओं के सशक्तिकरण की राष्ट्रीय नीति 2001 में पारित की गयी।[8] इस नीति का उद्देश्य महिलाओं की प्रगति, विकास और सशक्तिकरण सुनिश्चित करना और महिलाओं के साथ हर तरह का भेदभाव समाप्त कर यह सुनिश्चित करना है कि वे जीवन के हर क्षेत्र और गतिविधि में खुलकर भागीदारी करें। इस नीति के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये एक राष्ट्रीय कार्ययोजना तैयार की गयी। लैंगिग समानता के लक्ष्य की प्राप्ति के लिये सरकार ने महिलाओं के समग्र सशक्तिकरण की दिशा में कई कदम उठाये है।[9] महिलाओं के विकास एवं उनको सशक्त बनाने के लिये 9 मार्च 2010 को राज्यसभा ने महिला आरक्षण बिल को पारित कर दिया जिसमें संसद और राज्य विधान सभाओं में महिलाओं के लिये 33 प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था है।[10]

महिला विकास के क्षेत्र में सरकार द्वारा लगातार प्रयास किये जा रहे है। यह आश्चर्य की बात है कि हमारे कुछ सामजिक कानून विश्व में सबसे अधिक सशक्त है परन्तु ये अधिकार सिर्फ कानूनी किताबों तक ही सीमित है। आज प्रायः सर्वत्र यह स्वीकार किया जा रहा है कि अभी कई क्षेत्र ऐसे है जिनमें स्त्रियों को पुरुषों के बराबर का दर्जा नहीं मिल पाया है।[11] महिलाओं के सरंक्षण हेतु प्रभावशाली कानूनों एवं संवैधानिक प्रावधानों के बावजूद भी महिलाओं के प्रति हिंसा एवं क्रूरता का व्यवहार जारी है। यह स्थिति महिलाओं की निरक्षता, विधिक सेवाओं तक अल्प पहुँच तथा अपने अधिकारों के प्रति अज्ञारता के कारण ज्यादा जटिल हो गयी है।

21वीं सदी में महिलाओं की समस्याओं के समाधान एवं उनके विकास के लिये समाज और सरकार जागरूक हो रहे है, महिला आन्दोलन मजबूत हो रहे है। महिला आन्दोलन लगातार महिलाओं के मुद्दो को सार्वजनिक बहस हेतु सामने ला कर प्रति क्रिया दिखाता रहा है। ग्रामीण से ले कर शहरी स्तरों तक और राष्ट्रीय से लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक महिलाओं की स्थिति सुधारने के सारे प्रयास किये गये है उन्हें मजबूत बनाने की कोशिशें की गयी हैं और काफी हद तक ये कोशिशें कामयाब भी हुई हैं। राजनीतिक प्रक्रिया में भागीदारी महिला मतदाताओं द्वारा मतदान के लिये आना

और प्रत्येक चुनाव में महिला उम्मीदवारों की संख्या में वृद्धि तथा विभिन्न चुनावों में महिला उम्मीदवारों की सफलता, महिलाओं के दबाव समूहों की कुशलता आदि इस बात का संकेत है कि महिलाओं में अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता में तेजी आयी है।

संदर्भ सूची

1. महिलायें तथा शासन राज्य की पुर्नकल्पना एक रिपोर्ट सोसाइटी फॉर केवल पमेन्ट आल्टरनेटिवअ फॉर विमेन नई दिल्ली, 2002
2. कल्यानी मेनन व ए. के. शिव कुमार (2001) ''वूमन इन इंडिया : हाउ फ्री? हाउ इक्वल?''
3. महिलायें तथा शासन राज्य की पुर्नकल्पना रिपोर्ट सोसाइटी फॉर डेवलमेंट आल्टरनेटिवूस फॉर विमेन, नयी दिल्ली 2002 पृ. सं. 10
4. www.wcd.nic.in/hi/womendevelop
5. केरोल एस कून रॉड (जून 1998) क्रोनिक हंगर एंड दा स्ट्टेस ऑफ वीमेन इन इंडिया
6. भारत में पंचायती राज में महिलाओं की सहभागिता, राष्ट्रीय महिला आयोग 2001 पृष्ठ क्र. 101
7. स्टेट्स ऑफ वूमेन : बेकग्राउड एंड परस्पेक्टिव http://www.infochang.org/owesuIbp.Jsp
8. नेशनल पॉलिसी फार दी इम्पॉवरमेंट ऑफ वूमेन (2001) www.wcd.nic.in/empower.htm
9. www.viracepanorama.com/national-policy-for-the-empowerment-of-women/
10. राज्य सभा पारित वूमेन्स रिजर्वेशन बिल http://hindu.com/2010/03/10/stories/200/00310500880100.htm
11. विश्व प्रकाश गुप्त, निहिनी गुप्त : स्वतंत्रता संग्राम और महिलायें, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 1999 पृ. 4

7.

धन के प्रबंधन में महिलाओं की भूमिका

डॉ. वर्षा चौधरी
प्राध्यापक
होशंगाबाद

परिचय

प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति में महिलाओं का विशेष महत्व रहा है। समाज के हर क्षेत्र में निरंतर संघर्ष कर महिलाओं ने अपनी प्रतिभा एवं योग्यता साबित की है। लेकिन दुर्भाग्य का विषय है कि आज उनमें स्त्री चेतना सम्पूर्ण रूप से जाग्रत नहीं हो पाई है।

''एक नहीं दो-दो माताऐं नर से भारी नारीं'' वहीं नारी आज के सभ्य समाज में असुरक्षित हो गई हैं। किंतु समाज की धुरी आज भी नारी हैं घर और बाहर समाज, कार्यक्षेत्र या विभिन्न स्थानों को जहां आज पुरुष वर्ग अपना अधिकार क्षेत्र समझता था नारी कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी है और अपने कार्य का अच्छा परिणाम देकर पुरुषों से ज्यादा पुरस्कृत भी हो रही है।

विकासात्मक सामाजिक व्यवस्था में मानव शक्ति स्त्रोत के महत्वपूर्ण संघटक के रूप में महिला की उपयोगिता सुस्पष्ट हैं। बदली हुई सामाजिक परिस्थितियाँ, समाज सुधार आंदोलन, शिक्षा, पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव, आवागमन एवं संचार संसाधनों में वृद्धि आदि ने महिलाओं पर दूरगामी प्रभाव डाले हैं। आधुनिक करण में महिला की भूमिका जितनी तीव्रता से परिवर्तित हुई है, उतनी पूर्व में नहीं हुई। संयुक्त परिवार के स्थान पर एकल परिवारों के जन्म से स्त्रियां घर की प्रमुख हो गई हैं। जीवन के सभी क्षेत्रों में उनको व्यापक अधिकार प्राप्त होने से उनकी निरन्तर प्रगति हो रही है जिससे महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में निरन्तर सुधार आ रहा है।

सदियों से महिलाएं आर्थिक रूप से किसी ना किसी प्रकार अपना योगदान घर व समाज को देती रही है खेती, पशुपालन, घर का संचालन, मिटटी के बर्तन बनाना, पीसना, कपड़ा बुनना, सिलाई, कढ़ाई करना, बांस की चीजें बनाना, अनाज साफ करना आदि। हमारे देश में उन्नसवी सदी के प्रथम चरण से लेकर अंतिम चरण में आर्थिक क्षेत्र के रूप में व्यवसाय, धंधों के अलावा कृषि के क्षेत्र में महिलाओं का स्थान अति महत्वपूर्ण आंका गया है।

गृहणी शब्द का अर्थ है गृह-पत्नी, गृह पत्नी से आशय ऐसी पत्नी या नारी से होता है जो विवाहित हो, मगर ऐसा नहीं है, आधुनिक समाज में गृह पत्नी या गृहणी वह कोई भी विवाहित या, अविवाहित महिला है जो गृह व्यवस्थापन करती है।

श्री रायडनक का कहना है कि ''स्त्रियों ने पहले संस्कृति की नींव डाल तथा मानव को इधर उधर भटकने से बचाया है'' किसी समाज की उन्नति का अनुमान इस समाज में स्त्री को दिये जाने वाले आदर से ज्ञात किया जा सकता है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि स्त्री ही समाज एवं परिवार के विकास एवं विनाश का कारण हो सकती है। आज की आधुनिक नारी गृह कार्य के अलावा अपने गृह को आर्थिक सहायता प्रदान करने हेतु सक्रिय कार्य कर रही है। आज ही गृहणी दोहरी भूमिका का निर्वहन कर रही है। वह गृह व्यवस्थापन की महत्वपूर्ण कड़ी है उसके अभाव में गृह व्यवस्थापन कार्य मायने नहीं रखता। इसके लिए स्त्री दो तरह से प्रबंधन करती वह अपने परिवार के संपूर्ण आय को बुद्धिमत्तापूर्वक वितरित करती है। पारिवारिक बजट बनाकर आवश्यक मदों पर व्यय करती है। संपूर्ण गृह कार्यों को परिवार के सदस्यों में विभाजित कर, स्वश्रम, व सहयोग दें धन की बचत करती है स्वयं कार्य करती है, परिवार की आय को बढ़ाने के लिए गृह कार्य से समय बचाकर व्यवसाय या नौकरी करती है। गृह प्रबंध के साथ आर्थिक प्रबंधन भी करती है। आज भौतिक विकास, नवीन प्रौद्योगिकी के कारण स्त्री बहुत से कार्य जो श्रम पूर्ण थे अब क्षण भर में समन्वयन कर वह अपने समय की बचत कर, इस मंहगाई से निपटने व्यवसायिक कार्य करने हेतु उद्यत हुई है। अब महिला घर से बाहर निकल पड़ी है। नारी की स्थिति उनको प्राप्त कर्तव्य, आकांक्षा व उपलब्धियों व अपेक्षाओं से प्रभावित रही है नारी गृह में आर्थिक प्रबंधन में कितना योगदान दे पाती है, यह उसके सामाजिक संस्कृतिक परिवेश, प्रौद्योगिकी का उपयोग उसको मिलने वाली स्वतन्त्रता, शिक्षा, परिवार की आवश्यकता व उसके परिवार के योगदान पर निर्भर करती है क्योंकि स्त्री का घर के बाहर नौकरी करना धनोपार्जन करना बहुत ही समस्या व बाधाओं से भरा होता है महिलाओं की आय भी बहुत कम आंकी जाती है। महिलाओं का गृह कार्य एवं बच्चों के लालन पालन में लगने वाले समय शक्ति का कोई मूल्य नहीं आंका जाता। महिलाओं

की यह अदृश्य आय भी आंकी जानी चाहिये। जिससे राष्ट्रीय नीतियाँ भी प्रभावित होगी और राष्ट्र का विकास ज्यादा गति से होगा।

अध्ययन की आवश्यकता

आज स्त्रियों को हर क्षेत्र में अग्रसर करने का प्रयास सरकार भी कर रही है। समान अधिकार, नौकरी में महिलाओं को आरक्षण देकर आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास राष्ट्रीय स्तर, कार्य के ढंग चेतना, मानसिक सोच में परिवर्तन, आर्थिक स्वतंत्रता से उनकी परिवार की स्थिति में परिवर्तन हर क्षेत्र की महिलाओं में देखने मिल रहा है इनके फलस्वरूप महिलाओं की स्थिति के विस्तृत अध्ययन, हेतु इस शोध की आवश्यकता महसूस हुई है। वह किस प्रकार धन का व्यवस्थापन करती है। आर्थिक प्रबंधन में क्या उपाय अपनाती है इस सब के बारे में जानने का प्रयास किया गया है।

आज वर्तमान समय में प्रत्येक परिवार में गृह व्यवस्थापन में आर्थिक समस्या ही प्रमुख रूप से देखी जाती है इसके मुख्य कारण दो हैं। पहला यह कि आय के उत्तम साधन होने के बावजूद धन व्यवस्थापन का ढंग गलत होना और दूसरा गृहणी की सूझबूझ के बाद भी आय अर्जनकर्ता की कमी और उपयोगकर्ता की संख्या ज्यादा होना। परन्तु आज हर वर्ग की महिलाओं ने गरीबी को नियति मानना छोड़कर उससे उबरने का प्रयास करना सीख लिया है। मध्यम वर्गीय महिलाएं अपनी शिक्षा का उपयोग, व्यवसाय, नौकरी आदि में कर रही है तो उच्च वर्गीय महिलाएं आत्म संतुष्टि, अपने समय का सदुपयोग व समाज में अपना नाम व पहचान बनाने के लिये अर्थोपार्जन कर रही है।

आधुनिक युग में विकास न अन्य कार्यों के लिये धन का जीवन में एक विशेष महत्व है। उच्च रहन-सहन से लेकर जीवन निर्वाह तक प्रत्येक परिवार को धन पर आश्रित होना पड़ता है। ''धन आदमी को बनाता है।''

धन परिवार के सुख व संतोष का भी एक मुख्य आधार है। धन से किसी भी परिवार को अधिकतम संतुष्टि तभी मिल सकती हैं जब उसका समुचित व्यवस्थापन हो। पारिवारिक बजट धन व्यवस्थापन का प्रथम चरण है। यह पारिवारिक धन का समुचित आयोजन है। गृहणी अपने परिवार के सभी लक्ष्यों को परिवार की अधिकतम आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु परिवार के पास उपलब्ध विभिन्न पारिवारिक साधनों का उपयोग कुशलतापूर्वक करती है। धन एक महत्वपूर्ण साधन है जो उसके परिवार में खुशी व स्वस्थ जीवन देने के लिए आवश्यक माना जाता है। गृहणी को अपनी व अपने परिवार की आय से अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करने के लिये आवश्यक है कि वह आय-व्यय और बचत पर पूरा-पूरा ध्यान दे सकें। परिवार की आय चाहे जितनी ही

अधिक क्यों न हो, किंतु जब तक परिवार के सभी सदस्यों की आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए उचित ढंग से व्यय नहीं किया जायेगा तब तक परिवार की उचित व्यवस्था बनी रहना और सदस्यों को संतुष्ट रहना बड़ा कठिन है। परिवार की आय हमारे उपयोग को प्रभावित करती है अतः संतुष्ट पारिवारिक जीवन के लिये व्यय की योजना पहले ही बना लेना आवश्यकता होता है।

धन के उपयोग की योजना का सबसे सामान्य तरीका बजट बनाना है। पारिवारिक बजट में एक निश्चित अवधि में किसी परिवार की आय व्यय का विस्तृत ब्यौरा दिया जाता है। ''बजट धन के आय और उसके व्यय की सूची को कहते हैं।'' तोमर, दर्शन, गोयल के अनुसार 'बजट' सुनियोजित भविष्य की परिकल्पना है जो कि आय-व्यय का निश्चित अवधि के लिये लेखा योजना है।

परिवार की आय-व्यय अर्थात पारिवारिक बजट के संबंध में सर्वप्रथम विस्तृत अध्ययन डॉ. एन्जिल का है जिन्होंने जर्मनी में परिवारों के बजट का अध्ययन कर 'उपभोग का नियम' प्रतिपादित किया। जिसे हम एंजिल का उपभोग का नियम कहते हैं। आपने पारिवारिक बजटों के वैचारिक अध्ययन में पाया कि (1) जैसे-जैसे आप बढ़ी हैं भोजन पर किये व्यय का अनुपात घटता है परंतु भोजन पर व्यय की गई वास्तविक धन राशि बढ़ती है (2) आय में परिवर्तन होने पर भी वस्तुत पर होने वाला प्रतिशत व्यय समान रहता है (3) आय घटने पर भी मकान प्रकाश, ईधन पर प्रतिशत व्यय स्थिर रहता है (4) आय बढ़ने पर शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन, व्यक्तिगत सेवाओं व अन्य फुटकर मदों पर व्यय में वृद्धि होती है।

पारिवारिक बजट के सिद्धांतों में पारिवारिक आय, परिवार के निर्धारित लक्ष्य, परिवार की वर्तमान आवश्यकताएं, एवं परिवार की भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान रखा जाता है।

एंजिला कृषि ने बताया कि बजट के सिद्धांतों में कुछ अन्य बातों का भी ध्यान रखा जाना चाहिए जैसे - आय से अधिक खर्च ना हो, सर्वाधिक सस्ती वस्तुओं पर सबसे पहले खर्च हो कम खर्च हो इस बात पर सावधानीपूर्वक निगाह रखी जावें नियमित रूप से निश्चित मात्रा में बचत की जाए। अपने धन को उपयोगी बनाने की कोशिश की जाए।

पारिवारिक बजट का महत्व परिवारों को सर्वाधिक होता है गृहणी को परिवार के लक्ष्यों व सीमाओं का ज्ञान होता है जैसे दीर्घकालीन आर्थिक लक्ष्य में बच्चों की उच्च शिक्षा, विवाह, व्यवसाय शुरू करना आदि। गृहणी अपने परिवार की असीमित इच्छाओं में से प्राथमिकताओं को तय कर क्रमशः अनिवार्य आरामदायक व विलासिताओं की

आवश्यकताओं पर सूची बनाकर व्यय करती हैं।

आय व्यय की सही जानकारी बजट से मिल जाती हैं जिससे वह व्यय पर नियंत्रण कर बचत की आदतों को विकसित करती हैं। जिसमें उसका व उसके परिवार का भविष्य सुरक्षित रह सकें। पारिवारिक बजट से वह क्रमशः भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन, यातायात, अन्य घरेलू व्यय एवं बचत पर ध्यान रखकर व्यय करती हैं और बचत करती हैं।

आज की गृहणी गृह व्यवस्थापन के तीन चरण आयोजन, नियंत्रण, और मूल्यांकन के द्वारा बजट बनाती उस पर नियंत्रण कर मूल्यांकन करती है। जिससे भविष्य में सही बजट बनाकर लक्ष्यों व आवश्यकाताओं को पूरा कर सकें। धन के व्यवस्थापन में बजट का आयोजन वह अपने परिवार की विभिन्न आवश्यकताओं की सूची बनाकर, व्यय का अनुमान, आय का अनुमान, आय व्यय में संतुलन, प्राप्त आय को बढ़ाकर या व्यय को घटाकर आयोजन का पुनः निरीक्षण करती है बजट की अवधि में व्यय पर नियंत्रण रखती है। जो वह घरेलू हिसाब किताब रख बही खाता बनाकर या बैलेन्स शीट (वार्षिक आय का विवरण) कर करती हैं। अंत में बजट का मूल्यांकन कर लक्ष्यों को प्राप्त करने की सफलता का आंकलन करती हैं। जिसमें परिवार को मानसिक संतुष्टि व सुख प्राप्त हो सकें।

समाज के तीनों वर्ग उच्च, मध्यम व निम्न मौखिक या लिखित बजट बनाकर धन का व्यवस्थापन करते हैं। परंतु मध्यम वर्गीय परिवारों की महिलाएं बजट अधिक बनाती देखी गई है। मध्यम वर्गीय परिवारों के लिये बजट अत्यंत आवश्यक है क्योंकि इन्हें अपने जीवन स्तर को बनाये रखने के साथ ही साथ आय और व्यय में समायोजन करके भविष्य की आकस्मिक आवश्यकताओं के लिये बचत करनी होती है। आय के स्त्रोत मध्यम वर्ग में सीमित रहते हैं और आधुनिक जीवन शैली भौतिक उपकरणों व विलासिताओं की ओर बढ़ता प्रचलन मध्यम वर्गीय महिलाओं को लोन लेने की तरफ आकर्षित करती है अतः यह जानना कि मध्यम वर्गीय परिवारों की महिलाएं किस प्रकार धन का प्रबंधन करती है कि इस वर्ग का सामाजिक व आर्थिक स्तर बना रह सकें।

अध्ययन का उदद्श्ेय

1. वर्तमान समय में मध्यम वर्गीय परिवारों के बजट का अध्ययन करना।
2. वर्तमान समय में मध्यम वर्गीय परिवारों में पारिवारिक जीवन चक्र की विभिन्न अव्यवस्थाओं में विभिन्न मदों पर किये जाने वाले कुल मासिक व्यय का अध्ययन करना।

3. महिलाओं की रोजगार के प्रति अभिवृति
4. परिवार के महिला सदस्यों द्वारा अर्थोपार्जन में मिलने वाला सहयोग।
5. महिला के अर्थोपार्जन का स्तर एवं अर्थोपार्जन से संतुष्टि।
6. परिवार की आय को बढ़ाने में महिलाओं की भूमिका का स्तर।
7. महिलाओं द्वारा रोजगार प्राप्ति हेतु चुने क्षेत्र।
8. महिलाओं द्वारा खाली समय का सदुपयोग करने का ढंग।
9. मध्यम वर्गीय परिवारों के बचत व्यवहार का अध्ययन करना।

अध्ययन उपकल्पना

1. मध्यम वर्गीय परिवारों के बजट पर जीवन चक्र की प्रारंभिक अवस्था एवं जीवन चक्र की विस्तृत अवस्था के मध्य अन्तःक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।
2. मध्यमवर्गीय परिवारों के बजट पर जीवन चक्र ही विस्तृत अवस्था एवं जीवन चक्र की संकुचित अवस्था के मध्य अन्तक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।
3. महिलाएं रोजगार के प्रति सकारात्मक अभिवृति रखती हैं।
4. परिवार के अर्थिक स्तर को बढ़ाने में महिला सदस्यों द्वारा अर्थोपार्जन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। परंतु पारिवारिक सदस्यों को सहयोग नकारात्मक होता है।
5. महिला की अर्थापार्जन एवं संतुष्टि के मध्य धनात्मक संबंध है।
6. परिवार की आय को बढ़ाने में महिलाओं की भूमिका का स्तर सकारात्मक होता है।
7. रोजगार हेतु महिलाएं शैक्षणिक एवं कार्यालयीन कार्य को अधिक महत्व देती है। जबकि अशिक्षित एवं साक्षर महिलाएं घरेलू, लघु, कुटीर उद्योगों को अधिक महत्व देती है।
8. महिलाएं खाली समय का सदुपयोग आय अर्जन कर अपने जीवन स्तर को ऊंचा उठाने हेतु करती हैं।
9. मध्यम वर्गीय परिवारों द्वारा बचत व्यवहार का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

अध्ययन की सीमाएं

1. यह शोध कार्य में होशंगाबाद शहर के सीमित क्षेत्र के मध्यमवर्गीय परिवारों के बजट का अध्ययन किया गया।
2. शोध कार्य में परिवार की आय, पारिवारिक जीवन चक्र की सुव्यवस्थायें, मुखिया का व गृहणी का व्यवसाय, गृहणी की शिक्षा, परिवार के सदस्यों की संख्या, परिवार की आय अर्जित करने वाले सदस्यों की संख्या, बजट पर प्रभाव का अध्ययन किया गया।
3. शोध कार्य में वार्षिक व्यय का अध्ययन नहीं किया गया।
4. शोध अध्ययन में केवल मध्यम वर्गीय परिवार की महिलाओं को ही सम्मिलित किया गया।
5. शोध अध्ययन में आय के अंतर्गत परिवार को प्रतिमाह प्राप्त होने वाली कुल आय ली गयी है।

शोध अध्ययन का विस्तार

प्रस्तुत शोध अध्ययन में होशंगाबाद शहर के मध्यमवर्गीय परिवारों के बजट का अध्ययन किया गया है। अध्ययन हेतु मध्यमवर्गीय परिवारों की महिलाओं को चुना गया है। सामाजिक व्यवस्था में महिलाएं एक उत्पादक, शक्ति एवं संसाधन के रूप में विशेष स्थान रखती हैं, समाज, परिवार व देश का विकास महिलाओं की प्रगति से जुड़ा होता है।

यह अध्ययन मध्यम वर्गीय महिलाओं में बजट के महत्व के प्रति, धन व्यवस्थापन के प्रति, धन के कुशल उपयोग एवं आवश्यक व्यक्तिगत विशेषताओं के प्रति, परिवार की प्राथमिक आवश्यकताओं के प्रति अनावश्यक व्ययों के रोक प्रति, बचत एवं अल्प व दीर्घकालीन लक्ष्यों के निर्माण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने में सहायक होगा।

इससे महिलाएं परिवार की प्राथमिकताएं निर्धारण कर केवल अनिवार्यताओं पर ही व्यय करेगी। व भविष्य के लिये बचत कर सकेगी। महिलाएं अपने प्रबंधकीय व्यवहार में सुधार लाकर परिवार के सदस्यों की आवश्यकताओं को पूर्ण कर उन्हें संतुष्ट कर सकेगी एवं अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये उचित धन व्यय की योजना बना सकेगी।

'बजट के क्षेत्र में यह शोध कार्य कई संभावनाओं को भी जन्म देगा।

साहित्य का पुर्नरावलोकन

जुलाई 1971 के अनुसार सामाजिक एवं आर्थिक विभिन्नताओं के होते हुए भी आर्थिक विकास महिलाओं की जीवन शैली में तीव्र परिवर्तन लाता है। महिलाएं इस बात से अवगत हो चुकी है कि धानोपार्जन द्वारा वे अपने परिवार को सुखी बनाने में

मदद कर सकती है। साथ ही कार्य करने में समाज में उनका सम्मान भी बढ़ता है। कुछ महिलाएं अपनी प्रतिभा शिक्षा एवं व्यक्तिगत संतोष के लिये कार्य करती है, पारिवारिक परम्पराओं को मानने वाली महिलाएं भी धनोपार्जन के लिए काम करना चाहती है।

अध्ययन के उपकरण

प्रतिदर्श के चयन के पश्चात गृहणीयों के साक्षात्कार व प्रश्नावली का प्रयोग किया गया।

अनुसूची निर्माण आंकड़े एकत्रित करने के लिये बनाये गये प्रश्नों की एक तालिका है, जिसे साक्षात्कार के समय भरवाया गया है। प्राथमिक एवं द्वैतियक स्त्रोतों के द्वारा सूचना एकत्रित की गई है।

अध्ययन का क्षेत्र

होशंगाबाद जिले के मध्यमवर्गीय परिवारों में महिलाओं के आय के प्रबंधन की भूमिका में अध्ययन हेतु 300 परिवारों का चयन देव निर्वशन पद्धति से किया गया।

सांख्यकीय प्रयोग

तथ्यों की सत्यता हेतु सह संबंध औसत, फाई वर्ग, ग्राफ, सारणीयम, टी-टेस्ट आदि को प्रयोग में लाया गया है।

प्रस्तावित शोध के निष्कर्ष

शोध अध्ययन से प्राप्त परिवारों के आधार पर निष्कर्ष निकलता है कि परिवार में जैसे जैसे आप में वृद्धि होती है बजट की विभिन्न मदों पर होने वाले व्यय में भी वृद्धि होती जाती है एवं परिवार की आय, जीवन चक्र की अवस्थाएं, गृहिणी की शिक्षा मुखिया का व्यवसाय, परिवार के सदस्यों की संख्या एवं परिवार में आय अर्जित करने वाले सदस्यों की संख्या का बजट पर प्रत्यक्ष व सार्थक प्रभाव देखा गया। साथ ही पाया कि मध्यम वर्गीय परिवार बजट के प्रति जागरूक है एवं बच्चों की उच्च शिक्षा के लिये बचत करते हैं।

महिलाओं का कुशल घन व्यवस्थापन एवं परिवारिक सदस्यों के लक्ष्यों को प्राप्ति में अधिक सफलता प्राप्त करती हुई पायी गयी। आवश्यकताओं का संतुष्ट करने में गृहणी सफल रही।

भारतीय संस्कृति में परिवार और गृहणी दोनों ही महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। गृह प्रबंध की धुरी गृहणी ही होती है। कुशल धन व्यवस्थापन पारिवारिक सुख एवं संतोष का आधार होता है। अतः गृहणी को व्यवस्थापन का ज्ञान होना आवश्यक है। गृहणी

की शिक्षा परिवार के प्रबंधन को बहुत अधिक प्रभावित करती है स्व विश्लेषण स्वमापन एवं स्व व्यवस्थापन, धन व्यवस्थापन के प्रति जागरूकता उत्पन्न करता है। पत्र पत्रिकाऐं, शासकीय व सामाजिक तंत्र भी शिक्षा के द्वारा प्रबंधन की जागरूकता उत्पन्न करने में सहायक होते हैं।

रोजगार के प्रति महिलाओं का सकारात्मक दृष्टिकोण पाया गया है। परिवार के आर्थिक स्तर को बढ़ावे में महिला सदस्यों द्वारा अर्थोपार्जन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं। आय का अर्जन महिलाएं अपने जीवन स्तर को ऊंचा उठाने हेतु करती है। शिक्षित महिलाएं रोजगार हेतु स्कूल, कालेज, कार्यालय व बैंकों में कार्य करती है व अन्य महिलाएं लघु कुटीर उद्योगों को अधिक महत्व देती है।

संदर्भ सूची

1. Prasad H (1991) Develpment of women's education in social walfare
2. मिश्रा के के (1995) भारतीय नारी यथार्थ और अपेक्षाएं कुरूक्षेत्र ग्रामीण विकास, नई दिल्ली
3. तिवारी एवं गीता शुक्ला (2004) कार्यकारी माताओं की भूमिका
4. मुखर्जी रविन्द्रनाथ (2005) सामाजिक शोध एवं सांख्यिकी, विवेक प्रकाशन, दिल्ली
5. refferan, colien (1982) 'Determinants and patterns of family saving Home Ecomnomics Reasarch Journal, Vol Issue, 47-55
6. Muradoglu, G. and Taskin F (1996) "Differences in household saving behaviour Evidence from Industrial and Developing countries" The Developing economics Vo. 34
7. पाण्डेय कांति (1984) 'गृह प्रबंध' सप्तक संस्करण, स्वर पब्लिकेशन आगरा।
8. पाटनी, डॉ.मंजू (1973) गृह प्रबंध पारिवारिक जीवन चक्र, धन व्यवस्थापन, स्टार पब्लिकेशन, आगरा
9. श्रीवास्तव शिप्रा (2007) बजट के प्रति महिलाओं का दृष्टिकोण रिसर्च हंट वाल्यू सितम्बर-अक्टूबर 2007
10. वर्मा, सरस्वती, देशपांडे आशा पारिवारिक वित मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी

8.
समय व्यवस्थापन एवं महिलायें

डॉ. भारती दुबे
प्राध्यापक (गृहविज्ञान)
शासकीय गृह विज्ञान महाविद्यालय
होशंगाबाद (म.प्र.)

बचपन में हमें यही सिखाया जाता है कि "Time is Money" शायद शिक्षक के डर से इसे कंठस्थ भी कर लिया था लेकिन इसे वास्तव में कितने लोगों ने जिन्दगी में अपनाया?

समय एक ऐसी चीज है जिसकी व्याख्या शायद कोई ना कर सके, लेकिन अगर हां आपके पास समय है तो आपके पास सब कुछ है। किसी रिश्ते को समय देकर देखिये वो रिश्ता संभलेगा भी और सुधरेगा भी। कभी किसी प्रोजेक्ट पर थोड़ा और समय दीजियेगा, प्रोजेक्ट "More than average" यानी बाकियों से अच्छा होगा। रही बात पैसों की तो दुनिया में वही अमीर हुआ है जिसने समय के मोल को सही वक्त पर पहचान लिया।

आज यह लेख आपको शायद समय को एक अलग नजरिये से देखने में मदद करेगा और साथ ही आपको समय-व्यवस्थापन सिखायेगा। श्री अर्नाल्ड बेन्नेट जी कहते है जब भी आप सुबह उठते है तो आपके पर्स में बिना कुछ किये 24 घंटे यू ही पड़े पड़े मिलते है। ये वो 24 घंटे है जो न कोई आपसे चुरा सकता है, न कोई छीन सकता है और न ही कोई इसे घटा-बढ़ा सकता है। ये आपके है अब आप इसका उपयोग करे या न करे, आपको कोई सजा देने वाला नही। आपसे कोई नही पूछेगा कि आपने 24 घंटों का क्या किया। ये आपकी जिन्दगी है आपके 24 घंटे......या तो जी लें या इन 24 घंटों को निचोड़ लें।

समय का सही उपयोग करने के कुछ आसान सूत्र

1. स्वयं की समय सारणी बनाये और उसके अनुसार कार्य करें

प्रत्येक महिला को अपने कार्यों को पूर्ण करने के लिये समय सारणी बनाना चाहिए, और कार्यो को उसी अनुसार पूर्ण करना चाहिए, क्योंकि समय-सारणी/अनुसूची बनाते तो बहुत लोग है लेकिन उसे मानता कौन है? कुछ महिलायें दो चार दिन मान भी लेती है लेकिन दो दिन बाद सब वही का वही। ऐसा दो कारणों से होता है एक आलस्य से दूसरा समय की पाबंदी से। आपको अपनी समय-सारणी बनाना होगा अपना मतलब अपना।

सुबह 6 बजे सब उठते है और रात 10 बजे सब सोते है तो वो आपकी समय सारणी कैसे हुई? कहने का मतलब यह नही कि सुबह जल्दी न उठे और रात को जल्दी न सोये, ये दोनों कार्य आपके मस्तिष्क और शरीर के लिये बहुत अच्छे है लेकिन जो घर बैठे काम करता है और रात 2 बजे दिमाग मे सबसे अच्छे विचार आते है वो सुबह जल्दी उठकर क्या करेगा? मेरे विचार से उसे रात भर काम करना चाहिए और सुबह सोना चाहिए। हम सबके काम अलग होते है तो समय-सारणी भी अलग होनी चाहिए।

- अपने शरीर की आवश्यकतानुसार 6-8 घंटे सोना समय-सारणी मे जरूर सम्मिलित करे।
- विश्राम के समय को काटकर कोई भी ध्यान भंग करने वाला काम न करे क्योंकि विश्राम शरीर के लिये बहुत आवश्यक है।
- आलसी न बने समय सारणी के अनुसार कार्य करें।

तो समय प्रबंधन का पहला सूत्र यही होगा कि अपना अलग टाइम टेबिल बनाये, जो आपके शरीर और काम पर समान ध्यान देगा और उसे मानें।

2. कार्यों को सूचीबद्ध कर प्राथमिकताओं को तय करें

समय सारणी बनाना एक सामान्य प्रतिदिन का कार्य है, लेकिन इसमें प्रत्येक दिन कुछ अलग कार्य जुड़ जाते है। कार्य सूची मे आपको दिनभर कौन-कौन से कार्य करने है यह लिखा होता है लेकिन इसके साथ प्राथमिकता का क्या सम्बंध? संबंध यह है कि कार्य सूची के अनुसार करें, किन्तु आवश्यकता के हिसाब से कार्यों के क्रम निर्धारित करे या यह कहें कि तात्कालिकता के हिसाब से प्राथमिक बनाये आपको यह समझना होगा कि हर काम का एक समय होता है और हरेक काम उस एक पल में आवश्यक नही होता। अगर आप इस तरीके को उपनाते है और अपने कार्यों को आवश्यकतानुसार बांट लेते हैं तो आपके कार्य बहुत आसानी से पूर्ण हो जायेंगे और भविष्य मे कार्यों

की चिन्ता नही होगी। यदि आप किसी चीज को लिखते है तो वह सिर्फ कागज पर ही नही बल्कि आपके मस्तिष्क में बैठ जाता है अतः कार्यों को लिखित रूप में सूचीबद्ध करना उन महिलाओं के लिये बहुत लाभदायक है जिन्हें भूलने की आदत है।

अपने पास एक डायरी रखें या अपने स्मार्ट फोन मे अपने कार्यों की सूची बनायें। इस प्रकार समय-व्यवस्थापन का दूसरा सूत्र है। ”कार्य सूची बनाये और आवश्यकतानुसार क्रमांकित करें।

३. समय बर्बाद करने वाली चीजों को दूर करें

ऐसी चीजों को अपनी जिन्दगी से दूर कर दीजिए जो आपका कीमती समय बर्बाद करती है जैसे आपका टेबिल किताबों या फाइलों से भरा पड़ा हो या आपको सुबह अलमारी में कपड़े ढूढने पड़ते है। जिससे जाने अनजाने आपका समय बर्बाद होता है। अगर प्रतिदिन आपके 5 मिनट बर्बाद होते है इसका मतलब सप्ताह में 35 मिनट और माह में 2 घंटे 34 मिनट।

इन छोटी-छोटी बातों को हम नजर अंदाज कर देते है जो शायद बाद में बहुत चुभती है। इसके लिये आपको योजना बनानी पड़ेगी -

- कौन सी चीज कहां रहेगी।
- चीजों को यथास्थान रखना।
- काम के समय व्यर्थ की गपशप न करना।
- काम के समय मोबाइल में न उलझे।
- किसी चीज को कितने दिन बाद बदलना है।

इस प्रकार समय की योजना इस प्रकार बनाये कि हमारा 5 मिनट भी बर्बाद न होने पाये तो समय व्यवस्थापन की तीसरा सूत्र है, ‘‘छोटी-छोटी बातों को नजर अंदाज न करें क्योंकि एक चिंगारी बहुत होती है, आग लगाने के लिये।”

4. एक समय पर एक ही कार्य करें

आज हम सभी एक साथ एकाधिक कार्यों को करने में विश्वास करते हैं। एक समय मे एक से अधिक कार्य करने को समय-व्यवस्थापन कहते है पर क्या सच में ऐसा है? ‘मल्टीटास्किंग’ कुछ हद तक अच्छा है जैसे गणित करते हुये गाना सुनना अच्छा है, किन्तु बात जब किसी बड़े कार्य को करने की हो तो यह उचित नही है। मल्टीटास्किंग से आपका ध्यान दो या तीन हिस्सों में बांटा जाता है और आपकी कुशलता भी बंट जाती है जो काम। घंटे में होना चाहिए उसमें घंटो लग जाते है। विशेषरूप से बात करें तो किसी भी काम को करते समय चाहे पढ़ाई हो या ऑफिस

का काम सोशल मीडिया से दूर रहें क्योंकि इससे समय का पता नही चलता कि कब बीत गया। तो समय व्यवस्थापन का चौथा सूत्र 'समय और कार्य देखकर मल्टीटॉस्किंग करे क्योंकि इसके लाभ से ज्यादा नुकसान है और सोशल मीडिया से बच के रहें।'

5. अपने कार्यों में निपुणता लायें

काम चाहे कोई भी हो उसमें निपुणता होनी चाहिए, क्योंकि हर कोई काम का अन्तिम रूप देखता है उसके पीछे की मेहनत शायद ही कोई देखता है। आपकी जिम्मेदारी काम को अच्छे ढंग से पूरा करने की है, पर काम आप ही के द्वारा होना चाहिए यह आवश्यक नही किन्तु यह उपाय छात्रों के लिये नहीं है।

अनेक बार ऐसा होता है कि आप कार्य को निपुणता के साथ नही करते बल्कि उसे जैसे तैसे पूर्ण करने की कोशिश करते है ऐसी परिस्थितियों से बचने के लिये आपको करना होगा -

लोगों से अच्छे रिश्ते रखना ताकि समय-असमय वे आपकी मदद करें इसके लिये अपनी संचार कुशलता को बढ़ाये और मित्रों, सहयोगियों, रिश्तेदारों से अच्छे संबंध बनायें।

आजकल (Out Sowrcing) एक बड़ा विकल्प बन चुका है। उसकी सहायता ले ये आपके समय को बचायेगा।

तो समय व्यवस्थापन का पांचवा सूत्र है, ''कार्य करनें पर नहीं, कार्य की उत्तमता को देखिये स्वयं निर्णय ले कि कौन सा कार्य आप ही को करना होगा और कौन सा किसी और के करने से ज्यादा अच्छा होगा"

6. प्रेरित हो एवं तनाव रहित रहें

कई बार ऐसा होता है कि हम अपनी जिन्दगी से, अपने कार्य से तंग आकर मूड खराब है,कार्य करना और समय का सही उपयोग करना भूल जाते है। यह स्वाभाविक है क्योंकि हम मनुष्य है, परंतु क्या आप जानते है कि हम अपने मस्तिष्क को चकमा दे सकते हैं।

यह बहुत ही सरल है अपने मन को समझाइयें कि आप खुश हैं और अभी कार्य करना बहुत जरूरी है। स्वयं ही स्वयं को प्रेरणा दें स्वयं ही स्वयं के तनाव मिटाये।

- अपने आसपास ऐसा वातावरण बनाये कि हर चीज आपको प्रेरणा दे। कुछ प्रेरित करने वाली चीजें अपने पास रखे और अपनी मंजिल तक पहुंचने का हर संभव प्रयास करें।
- अपने मन मस्तिष्क को शांत रखने का प्रयास करें।

- आवश्यक हो तो थोड़ा अपने आप को डराये कि "अगर यह कार्य समय पर पूरा नहीं किया तो क्या होगा?" परंतु साथ ही किसी भी प्रकार के तनाव को अपने से दूर रखें।

इस प्रकार प्रत्येक महिला समय व्यवस्थापन करके अपना और अपने परिवार/समाज/कार्यालय का विकास कर सकती है। समय मानव जीवन के लिये बहुत ही उपयोगी और सीमित साधन है। यह अमूल्य निधि है। समय व्यवस्थापन का मुख्य उद्देश्य, समय का भली-भाँति प्रयोग करना है ताकि व्यक्ति विशेष के व्यक्तिगत एवं पारिवारिक लक्ष्यों की पूर्ति हो सकें। समय की व्यवस्था करते समय एक कार्यरूप तैयार किया जाता है, जिसमें विभिन्न कार्य स्थान ले लेते है। विभिन्न प्रकृति के कार्य हल्के कार्य, रूचिकर कार्य, नीरस एवं आवश्यक कार्य आदि में संतुलन स्थापित किया जाता है।

वैसे तो अधिकांश महिलायें घर को व्यवस्थित रूप से चलाने में कुशल प्रबंधक होती हैं। कार्यों की अति व्यस्तता के चलते वह अपने आपको समय नहीं दे पाती हैं। यदि समय व्यवस्थापन के साथ अपने दिन की शुरूआत यदि घर की नारी करती है जो जननी है संस्कृति और सभ्यता की तो निःसंदेह वहां धरती पर स्वर्ग होगा।

संदर्भ सूची

1. गृह प्रबंध, साधन व्यवस्था एवं आन्तरिक सज्जा - डॉ. श्रीमती बेला भार्गव
2. संसाधन प्रबंध - डॉ. करूणा शर्मा, डॉ. मंजू पाटनी
3. इंटरनेट

9.

महिलाओं के विकास में पोषक तत्वों की भूमिका

डॉ. रश्मि श्रीवास्तव
प्राध्यापक (गृहविज्ञान)
शासकीय गृहविज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय
होशंगाबाद

पोषण उन प्रक्रिया का संयोजन है जिनके द्वारा कोई भी जीवित प्राणी भोज्य पदार्थों को प्राप्त कर पोषक तत्वों का उपयोग शारीरिक कार्यों को सम्पन्न करने के लिए वृद्धि के लिए तथा इसके घटकों के पुनः निर्माण के लिए करता है।

किसी भी महिला को अपने दैनिक कार्य करने बीमारियों की रोकथाम तथा सुरक्षित व स्वस्थ प्रसव के लिए अच्छे भोजन की आवश्यकता होती है। लेकिन फिर भी पूरे संसार में किसी अन्य स्वस्थ समस्या की तुलना में महिलाओं को कुपोषण से सबसे अधिक सामना करना पड़ता है जिसके कारण थकावट कमजोरी और बुरा स्वास्थ्य हो सकता है।

महिलाएँ तभी भोजन करती हैं। जब पुरुष व बच्चों ने खा लिया हो अर्थात सबसे अंत में खाती है। भोजन से शरीर को ऊर्जा पौष्टिक तत्व एवं ऊष्णता प्राप्त होती है जिससे शरीर की विभिन्न शारीरिक एवं मानसिक क्रियाएँ सम्पन्न होती हैं। शरीर की वृद्धि एवं विकास तंतुओं की मरम्मत, रोगों से रक्षा नियंत्रण एवं प्रजनन कार्यों के लिए भोजन जरूरी है। भोजन में वे सभी पोषक तत्व पर्याप्त मात्रा में उपस्थित रहते हैं। जो शरीर के सभी कार्यों को सम्पन्न करते हैं। अर्थात मनुष्य को स्वस्थ रहने के लिए लगभग 45 प्रकार के पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है।

राबिन्स के अनुसार - शरीर की विभिन्न जटिल रासायनिक प्रक्रियाओं को सम्पन्न

करने के लिए भोजन में उपस्थित पोष्टिक तत्वों की आवश्यकता होती है। भोजन के अंतःगृहण, पाचन एवं अवशोषण के बाद व्यक्ति द्वारा इन पौष्टिक तत्वों का उपयोग किया जाता है। जिससे शारीरिक वृद्धि होती है। तंतुओं की टूटफूट की मरम्मत होती है। शरीर को ऊर्जा प्राप्त होती है। तथा विभिन्न क्रियाओं का नियंत्रण होता है। पोषण कहलाता है।

मुख्य खाद्‌य पदार्थ

भारत में महिलाएं लगभग हर भोजन में कोई सस्ता मुख्य खाद्‌य पदार्थ खाती हैं क्षेत्र पर निर्भर करते हुए यह गेहूँ, चावल, मक्का, बाजरा या आलू हो सकता है यह मुख्य खाद्‌य पदार्थ ही शरीर की अधिकतर दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।

लेकिन केवल यह मुख्य खाद्‌य पदार्थ अकेले ही महिला को स्वस्थ रखने के लिए पर्याप्त नहीं है अन्य सहायक खाद्‌य पदार्थ - प्रोटीन (जो शरीर निर्माण के लिए) आवश्यक विटामिन व खनिज तत्व (जो शरीर की रक्षा व मरम्मत के लिए) चाहिए तथा वसा एवं चीनी (जो शक्ति तथा ऊर्जा देते हैं) आवश्यक होती हैं।

महिलाओं को 5 महत्वपूर्ण विटामिन व खनिज की आवश्यकता होती है। लौह तत्व, फोलिक एसिड, कैल्शियम, आयोडीन विटामिन ए।

1. **लौह तत्व-** इस तत्व की खून को स्वस्थ रखने व एनिमिया की रोकथाम के लिए आवश्यकता होती है। विशेषकर उन वर्षों में जब उसे माहवारी हो रही होती है व जब वह गर्भवती हो। इन खाद्‌य पदार्थों में लौह तत्व काफी मात्रा में होता है। फलिया व मटर, अंडा, मछली, रागी, बाजरा, मुर्गे का मांस इन खाद्‌य पदार्थों में थोड़ा बहुत लौह तत्व होता है। हरि पत्तेदार सब्जियाँ, गुड, आलू, गोभी, दालें, शलजम, अनन्नास एवं सूखे मेवे।
2. **फोलिक एसिड-** शरीर को स्वस्थ लाल रक्त कण बनाने के लिए इनकी आवश्यकता होती है। गर्भावस्था में इन पदार्थों की आवश्यकता अधिक महत्वपूर्ण होती है। फोलिक एसिड के अच्छे स्त्रोत - पत्तेदार सब्जियाँ, मूंगफली, जिगर, अंडा, मछली, कुकुरमुत्ता, मांस, मटर,एवं फलिया, सम्पूर्ण भूसी युक्त अन्न।
3. **कैल्शियम-** हर मनुष्य को मजबूत दांतों व हड्डियों के लिए कैल्शियम की आवश्यकता होती है। महिलाओं व लड़कियों को अतिरिक्त मात्रा में कैल्शियम चाहिए ये खाद्‌य पदार्थ कैल्शियम समृद्ध हैं। दूध, दही, पनीर, बादाम, सरसों, झींगा मछली, तिल रागी, सीताफल, मौसंबी, हरिपत्तेदार सब्जियाँ, बाजरा फल्लियाँ, सोयाबीन चूना।
4. **आयोडीन-** भोजन में उपस्थित आयोडीन घेंघा या गायटर नामक बीमारी (गर्दन के

सामने के भाग में मौजूद थायराइड ग्रंथि का आकार बढ़ जाना) तथा अन्य स्वास्थ्य संरचनाओं की रोकथाम करती है। भारत में पर्याप्त आयोडीन प्राप्त करने का सर्वोत्तम तरीका है कि आप नियमित नमक की बजाय केवल आयोडीन युक्त नमक का ही सेवन करें।

5. **विटामिन ए-** विटामिन ए रतौंधी रोवा की रोकथाम करता है और कुछ संक्रमणों से शरीर की रक्षा करता है। बिटामिन ए के स्त्रोत - अंडा, यकृत, दूध विटामिन ए के मुख्य स्त्रोत है। पालक, गाजर, पुदीना, टमाटर, केला, धनिया पत्ती, लहसुन, मीठा नीम, पत्तागोभी, चौलाई, पपीता, कद्दू, आम, संतरे, सरसों की भाजी, राजगिरा, मूली की पत्ती, शलजम की पत्ती, काली मिर्च।

खान पान के बारे में भ्रांतियाँ - भारत सहित विश्व के अनेक भागों में महिलाओं के लिए भोजन के विषय में कुछ गलत परम्पराएँ व विचार प्रचलित है जो काफी हानिकारक हैं। यह सच नहीं है कि लड़कियों को लड़कों की अपेक्षा कम भोजन की आवश्यकता होती है।

महिलाओं को हर स्थिति में हमेशा पौष्टिक भोजन की आवश्यकता होती है। विशेषकर गर्भावस्था एवं स्तनपान के काल में भोजन में कुछ खाद्य पदार्थों से परहेज करने से कमजोरी बीमारी एवं मृत्यु भी हो सकती है।

यह सत्य नहीं है कि महिला को पहले अपने परिवार को भोजन करना चाहिए क्योंकि ऐसी स्थिति में वह केवल बचा हुआ भोजन ही खा पाती है। और घर के अन्य सदस्यों को जितना भोजन मिलता है उसे नहीं मिलता

खराब पोषण से बीमारियाँ - लड़कियाँ एवं महिलाओं को आवश्यकता से कम भोजन या यूं कहिए कि कम पौष्टिक भोजन मिलता है इसलिए उनके बीमार पड़ने की संभावना अधिक होती है। उन्हें कुछ ऐसी बीमारियों की संभावना अधिक होती है जो खराब पोषण के कारण होती है। जैसे - एनीमिया, (खून की कमी), वैरी वैरी (विटामिन बी की कमी), रतौंधी (विटामिन ए की कमी)

पोषक तत्वों में पाये जाने वाले पौष्टिक तत्वों की मात्रा

पोषक तत्व	सामान्य महिला	गर्भवती महिला
कैलोरी (किलो कै)	1900 से 2850	+350
प्रोटीन (ग्रा.)	55 ग्राम	78
कैल्शियम (मि. ग्राम)	600	1200
आयरन (मि.ग्राम)	21	35

विटामिन ए (ग्राम)	600	800
फोलिक एसिड (ग्राम)	100	
थायमिन (मि ग्राम)	1.0 से 1.4	+0.2
राइबोफलेविन (मि.ग्राम)	1.1 से 1.7	+0.3
नायसिन (मि.ग्राम)	12 से 16	+2
विटामिन बी12 (ग्राम)	1.0	1.2
विटामिन डी	200	
फेट	20-30	30

एक महिला की पोषण संबंधी आवश्यकताएँ पुरुषों से भिन्न होती है। इस अवधि में तेजी से वृद्धि होने के कारण पोषक तत्वों की आवश्यकता अधिक होती है। अतः महिला के भोजन में अनाज तथा प्रोटीन जैसे दाल, दूध, मांस, मछली, अंडा ही शामिल करना पर्याप्त नहीं होता बल्कि हरि सब्जियाँ फल आदि भी सम्मिलित करना चाहिए।

ये उनकी हड्डियाँ बढ़ाने खून बढ़ाने एवं नये उतकों के निर्माण एवं विकास के लिए आवश्यक होते हैं किशोरियों का स्वस्थ रहना आवश्यक है क्योंकि वे ही मां बनेंगी यदि किशोरियाँ स्वस्थ नहीं होगी तो उनकी भविष्य में कोख से जन्म लेने वाला शिशु भी स्वस्थ नहीं होगा गर्भावस्था की नींव रखने वाली किशोरावस्था भी मजबूत होनी चाहिए।

इस अवधि में पोषक तत्वों की आवश्यकता वृद्धि की गति पर आधारित होती है। हमारे जीवन में पोषण का महत्वपूर्ण स्थान है। और स्वस्थ रहने के लिए उचित पोषण की आवश्यकता होती है।

संदर्भ सूची

1. आहार विज्ञान एवं पोषण - वृन्दा सिंह
2. आहार एवं पोषण विज्ञान - डॉ. कामिनी जैन
3. डायटिक्स वी श्री लक्ष्मी
4. जन स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण - वृन्दा सिंह

10.
महिला उद्यमियों की समस्याएँ

डॉ. संध्या राय
प्राध्यापक (गृह विज्ञान)
शासकीय गृहविज्ञान महाविद्यालय
होशंगाबाद (म.प्र.)

वर्तमान में महिला उद्यमशीलता के विकास के लिये सरकार द्वारा विभिन्न योजनाओं एवं संस्थाओं के माध्यम से सुविधाएँ, सहायता एवं मार्गदर्शन प्रदान किये जा रहें है, किन्तु फिर भी उद्यमशील महिलाओं को विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। सर्वेक्षण के दौरान उद्यमशील महिलाओं की समस्याओं को निम्नलिखित तीन वर्गों में वर्गीकृत कर प्रस्तुत किया गया है।

1. विशिष्ट सामाजिक दृष्टिकोण के फलस्वरूप ''महिला'' होने के कारण उत्पन्न समस्याएँ।
2. उद्यम संचालन के दौरान आने वाली समसयाऐं।
3. अन्य समस्याएं।

विशिष्ट सामाजिक दृष्टिकोण के फलस्वरूप "महिला" होने के कारण उत्पन्न होने वाली समस्याएं

उद्यमशील महिलाओं के समक्ष जो सबसे बड़ी समस्या है वह यह है कि वह महिला है और परिवार व समाज का उनके प्रति एक पूर्वाग्रही दृष्टिकोण है। यह वृत्ति और विशिष्ट दृष्टिकोण महिलाओं को उद्यम क्षेत्र में प्रत्येक स्तर पर यथा-उद्यम के चयन, क्रियान्वयन एवं संचालन में समस्याएं उत्पन्न करता है।

यह सर्वविदित तथ्य है कि भारतीय समाज ''पुरुष प्रधान'' है। जिले में भी परिवार व समाज में महिलाओं की परंपरागत भूमिका है। मुख्यतः बच्चों बच्चों का पालन-पोषण,

घर व परिवार व परिवार के अन्य सदस्यों की देखभाल करने की जिम्मेदारी है। घर के पुरुष आय उपार्जन में महत्वपूर्ण भूमिका निभातें हैं। इसलिये महिलाओं के प्रति गौण दृष्टिकोण है। विगत दशक में आर्थिक उदारीकरण के पश्चात् उद्यमशील महिलाओं की भूमिका में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ है यद्यपि यह व्यापक परिवर्तन नही हैं। यह आर्थिक विवश्ता हो सकती है कि महिलाओं ने उद्यम को रोजगार के रूप में चुना। बाजार के अवसरों साक्षरता, सूचना क्रांति एवं उच्च्य शिक्षा ने महिला उद्यमशीलता के अवसरों को बढ़ाया है यह परिवर्तन ज्यादातर शहरी व शिक्षित महिलाओं के मध्य ही दिखाई दे रहा हैं। आज भी जिले की महिलाओं को उद्यम क्षेत्र में आने के लिये परिवार से अनुमति प्राप्त करने में कठिनाईयां आती है, खासकर अविवाहित महिलाओं को आज भी परिवार के सदस्य उद्यम स्थापना हेतु सहर्ष व शीघ्र अनुमति प्रदान नहीं करते हैं। ग्रामीण क्षेत्र की अधिकांश महिलाएं आज भी संयुक्त परिवार में रहती हैं। ग्रामीण क्षेत्र में महिला आर्थिक रूप से स्वतंत्र नहीं है जबकि कृषि में भागीदारी बराबर की है।

उद्यमशील महिलाओं पर पारिवारिक उत्तरदायित्वों की अधिकता व परिचय की अपेक्षाएं अधिक है। पुरुष चाहता है कि महिलाएं उद्यमशील होकर धनोपार्जन करें तथा पारिवारिक दायित्व का निर्वहन भी करें। यह दोहरी मानसिकता भी उनके समक्ष अनेक समस्याएं उत्पन्न करती है। परिणाम-स्वरूप इन सबका प्रभाव उसके स्थापित उद्यम पर पड़ रहा है। महिलाएं उद्यम के साथ पारिवारिक जिम्मेदारियों का दोहरा कार्य करती है और वह दोनों की कार्यों को सही अंजाम देने में स्वयं को असमर्थ पाती है।

सर्वेक्षण के दौरान यह तथ्य भी सामने आया कि सामाजिक वृत्ति भी महिला उद्यमी के समक्ष समस्या उत्पन्न करती है। समाज की महिलाओं के कार्य के प्रति एक सामान्य सोच है कि व अमुख कार्य कर सकती है और अमुख नहीं कर सकती है। सर्वेक्षण के समय में एक महिला उद्यमी ने बताया है कि एक साइकल की दुकान खोलना चाहती थी इस हेतु वित्त प्राप्ति के लिए उसने संबंधित विभाग में आवेदन पत्र प्रस्तुत किया किन्तु शासकीय कर्मचारियों व अधिकारियों ने महिला होने के कारण इस संबंध में उससे इतने निराशा जनक प्रश्न किये कि अन्तः उसे अपने चयनित उद्यम में परिवर्तन करना पड़ा तथा उसने भी वही उद्यम का चयन किया जिसे सामान्यतः अधिकांश महिलाएं चुनती है। इससे उसे व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा की समस्या का सामना करना पड़ा।

उपर्युक्त विपरीत परिस्थितियों एवं समस्याओं बाद भी महिलाओं द्वारा उद्यम प्रारंभ किये जाते है। पर महिलाओं की समस्याएं उद्यम स्थापना के साथ-साथ उद्यम संचालन की भी है।

उद्यम संचालन के दौरान आने वाली समस्याएं

उद्यमी महिलाओं को उद्यम संचालन करते समय उद्यम से संबंधित जिन विशिष्ट समस्याओं का सामना करना पड़ा है उनमें वित्त व विपणन से संबंधित समस्याएं मुख्य है। इसके अतिरिक्त स्थान संबंधी समस्या, बिजली की कमी, कच्चे माल की समस्या, तकनीकी समस्या एवं कुशल कर्मचारियों व श्रमिकों की समस्या भी है जो निम्नानुसार है -

वित्तीय समस्याएं

वित्त संबंधी समस्या महिला उद्यमियों द्वारा संचालित उद्यमों की प्रमुख समस्या है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् इस ओर पर्याप्त प्रयत्न किये गये लेकिन यह समस्या महिला उद्यमियों के समक्ष यथावत हैं।

अधिकांश महिला उद्यमियों का कथन था कि उनके पास स्वयं की कोई ठोस वित्तीय व्यवस्था न होने के कारण उन्हें उद्यम हेतु प्रारंभिक पूंजी की व्यवस्था करने में कठिनाई होती है पूंजी न होने से कच्चा माल क्रय करने प्रारंभिक व्यय चुकाने में कठिनाई आती है। उद्यम का विस्तार करने में भी कठिनाई आती है। वित्त प्राप्ति हेतु उसे परिवार पर, वित्तीय संस्थाओं पर या अन्य स्त्रोतों पर निर्भर रहना पड़ता है। अतः वित्त प्राप्ति महिला उद्यमियों के समक्ष मुख्य समस्या है। जिसमें उद्यम संचालन में प्रत्येक स्तर पर उनके समक्ष अनेक समस्याएं उत्पन्न होती है।

सर्वेक्षण के दौरान महिला उद्यमियों ने संस्थागत वित्त प्राप्ति में आने वाली समस्याओं से अवगत कराया जिनमें प्रमुख निम्नानुसार है -

ऋण प्रक्रिया का अत्याधिक जटिल होना

कुछ महिला उद्यमियों ने संस्थागत वित्त प्राप्ति की प्रक्रिया को अत्याधिक जटिल बताया। महिला उद्यमियों का कहना था कि उद्यम/व्यवसाय/सेवा व्यवसाय हेतु ऋण प्रदान करने के पूर्व वित्तीय संस्थाये/विभागों द्वारा अनेक प्रपत्रीय एवं अन्य औपचारिकताओं को पूरा कराया जाता है। ऋण प्रक्रिया की जटिलता के फलस्वरूप अनेक महिलाओं द्वारा जिन्हें वास्तविक रूप से वित्तीय सहायता की आवश्यकता होती है वे इन संस्थाओं की औपचारिकताओं की पूर्ति न कर सकने के कारण सुविधा का लाभ नहीं उठा पाती है।

अपर्याप्त ऋण राशि का निर्धारण

महिला उद्यमियों का ऐसा मानना है कि विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत वित्तीय संस्थाओं द्वारा जो ऋण राशि उद्यम हेतु निर्धारित की जाती है उसका निर्धारण उन

योजनाओं के निर्धारित नियमों के आधार पर होता है जबकि इकाई की वास्तविक लागत कुछ और होती है। फलस्वरूप उद्देश्यानुरूप ऋण राशि प्राप्त नही हो पाती अर्थात् ऋण राशि उद्देश्य की पूर्ति हेतु अपर्याप्त होती है।

अत्यंत लघु/कुटीर उद्योगों में संबद्ध महिला उद्यमियों को पर्याप्त महत्व न दिया जाना

सर्वेक्षण के दौरान कुछ महिला उद्यमियों का यह भी अभिमत था कि ऋण स्वीकृति के समय छोटा व्यवसाय/उद्यमशील महिलाओं की अपेक्षा लघु उद्यम की महिला उद्यमियों को अधिक महत्व दिया जाता है।

गारंटी संबंधी समस्या

वित्तीय संस्थाओं द्वारा ऋण प्रदान करने के पूर्व ऋण की पर्याप्त सुरक्षा के उद्देश्य से प्रतिभूति/गारंटी की मांग की जाती है। महिलाओं के पास ऋण राशि के विरूद्ध पर्याप्त गारंटी के अभाव में वित्तीय संस्थाओं से ऋण प्राप्त करते समय समस्याएं आती है।

ऋण राशि का समय पर प्राप्त न होना

स्वरोजगार हेतु वित्तीय संस्थाओं द्वारा दी जाने वाली ऋण राशि उपयुक्त समय पर प्राप्त न होना भी महिला उद्यमियों के समक्ष एक समस्या है। ऋण स्वीकृति की प्रक्रिया अत्याधिक लंबी होने के कारण कभी-कभी वित्तीय संस्थाओं द्वारा ऋण स्वीकृति में इतना विलम्ब किया जाता है कि जिन उद्देश्यों की पूर्ति के लिये महिलाएं ऋण प्राप्त करना चाहती है उन उद्देश्यों की पूर्ति ही नहीं हो पाती। ऋण स्वीकृति में होने वाले विलंब का प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष प्रभाव प्रायः समस्त उद्यम संबंधी गतिविधियों पर पड़ता है किन्तु विलम्बता से कुछ उद्यम सर्वाधिक प्रभावित होते है जैसे - ईंट निर्माण करने वाली एक महिला उद्यमी ने बताया कि उसने ईंट निर्माण कार्य के लिये ऋण प्राप्त करने हेतु आवेदन प्रस्तुत किया था किन्तु बैंक द्वारा स्वीकृत राशि (बारिश शुरू होने के पहले प्राप्त हुई जब उनका ईंट निर्माण कार्य बंद होने पर होता है) समय समाप्त होने के पश्चात् उपलब्ध कराई गयी, फलस्वरूप ऋण का पूर्ण रूप से उद्देश्यानुरूप उपयोग नही किया जा सका।

किश्त अदायगी की सूचना समय पर न दी जाना

सर्वेक्षित महिला उद्यमियों का यह मत था कि बैंक/वित्तीय संस्था द्वारा नियत समय में किश्त अदायगी की सामान्य सूचना उन्हें नही दी जाती जबकि इन संस्थाओं का यह दायित्व है कि वह किश्त भुगतान की सामान्य सूचना उद्यमियों को नियत समय अवधि में दे। सूचना के अभाव में कई महिला उद्यमियों द्वारा चाहते हुये भी निर्धारित

समय अवधि में किश्त का भुगतान नही किया और निर्धारित समय अवधि में ऋण अदायगी न करने की अपनी भूल का अहसास तब हुआ जबकि बैंक द्वारा ऋण वसूली हेतु न्यायालय के माध्यम से नोटिस के रूप में सूचना भेजी गई। सूचना के अभाव के कारण ऋण पर ब्याज की राशि अधिक हो चुकी थी।

अदेय प्रमाण-पत्र की अनिवार्यता

बैंक/वित्तीय संस्थाओं के ऋण सुविधा प्राप्त करने के पूर्व महिला उद्यमियों को क्षेत्र में कार्यरत समस्त बैंकों और वित्तीय संस्थानों से किसी भी प्रकार के ऋण को प्राप्त न करने के आशय का अदेय प्रमाण पत्र प्राप्त कर बैंक को प्रस्तुत करना होता है। अदेय प्रमाण-पत्र की प्राप्ति के पश्चात् ही बैंक द्वारा ऋण प्रकरणों को स्वीकृत किया जाता है। कुछ महिला उद्यमियों में अदेय प्रमाण-पत्र की अनिवार्यता को लेकर रोष था। ऐसी महिला उद्यमियों का कहना था कि अदेय प्रमाण पत्र की प्राप्ति हेतु उन्हें विभिन्न बैंकों की शाखाओं और वित्तीय संस्थानों में भटकना पड़ता है। कभी-कभी बैंक अधिकारियों और कर्मचारियों द्वारा अदेय प्रमाण पत्र के नाम से उनका आर्थिक शोषण भी किया जाता है।

भ्रष्टाचार व लालफीताशाही

सर्वेक्षित महिला उद्यमियों ने यह भी अभिमत व्यक्त किया कि ऋण वितरण में भ्रष्टाचार व लालफीताशाही है। सर्वेक्षण के दौरान महिला उद्यमियों ने इस तथ्य को स्वीकार किया कि बैंक से ऋण स्वरूप वित्तीय सहायता प्राप्त करने हेतु बैंक अधिकारियों व कर्मचारियों को नगद राशि अथवा वस्तु उपहार स्वरूप भेंट करना होती है तभी ऋण स्वीकृत किया जाता है। बैकिंग जैसे संस्थान में भ्रष्टाचार रूपी अमरवेल के फलीभूत होने के परिणाम स्वरूप वास्तविक हकदार को उसकी आवश्यकता के अनुरूप या तो वित्तीय सहायता प्राप्त होती ही नहीं है और यदि होती भी है तो उसे प्राप्त वित्तीय सहायता उद्देश्यों की पूर्ति हेतु अपर्याप्त होती है।

उपरोक्त समस्याओं के कारण कई महिला उद्यमियों को वित्त के अभाव में कार्य करना पड़ता है जिससे उत्पादन व बिक्री पर विपरीत प्रभाव परिलक्षित होता है।

विपणन संबंधी समस्या

महिला उद्यमियों को संचालित उद्यमों में लागत व्यय अधिक होना, बाजार का उचित ज्ञान न होने, निर्मित वस्तुओं में सुन्दरता व एकरूपता की कमी होने, महिला उद्यमियों में संगठन न होने, जनता की रूचियों व फैशन में नित्य-प्रति परिवर्तन होने तथा उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण उन्हें तैयार माल के विपणन में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

महिला उद्यमियों के पास तैयार माल बेचने के लिये संस्थागत सुविधाओं का अभाव होता है। प्रायः उन्हें अपना माल स्थानीय थोक दुकानदारों को बेचना पड़ता है। साधारणतः महिलाएं कच्चामाल, वित्त आदि के लिये उन पर निर्भर रहती है। अतः माल के लिये जो भी मूल्य उन्हें मिलता है, उसे स्वीकार करना पड़ता है। वह सीधे उपभोक्ताओं को भी माल बेचती है तो उन्हें विशेष लाभ प्राप्त नही हो पाता, एक तो उनका बहुत सारा समय माल बेचने में नष्ट हो जाता है। दूसरे, साधनहीन, होने के कारण उसे माल कम दामों पर बेचना पड़ता है। उसमें विपणन क्षमता की कमी होती है। वह जानती है कि माल न बेचने कर मतलब है आय प्राप्त न होना। अतः उत्पाद बेचना उसकी विवशता है। वह अच्छे मूल्य की प्रतीक्षा नही कर सकती, फलस्वरूप मजबूरन उन्हें कम मूल्य पर अपने उत्पाद को बेचना पड़ता है।

इसके अतिरिक्त निम्नलिखित बाते भी महिला उद्यमियों के समक्ष माल के विपणन में समस्याएं उत्पन्न करती है।

बड़े उद्योगों के साथ प्रतियोगिता/व्यवसायिक प्रतिस्पर्धा

महिला उद्यमियों के समक्ष विपणन से संबंधित एक समस्या यह भी है कि उन्हें बड़े उद्योगों के साथ प्रतियोगिता करनी पड़ती है। बड़े उद्योगों से बनी वस्तुऐं प्रमाणित, आकर्षक व सस्ती होती है, जिनसे प्रतिस्पर्धा करने में महिला उद्यमी अपने आप को असमर्थ पाती है। बड़े उद्योग वैज्ञानिक ढंग से संगठित होते है और उत्पादन, विपणन आदि क्षेत्रों में आधुनिक विधियों का प्रयोग करते है। अतः उन्हें अनेक महत्वपूर्ण लाभ प्राप्त होते है। कुछ को सरकारी सरंक्षण भी प्राप्त हैं। इससे उनका उत्पाद भी अधिक श्रेष्ठ होता है। निःसन्देह महिला उद्यमियों के लिये उनकी प्रतियोगिता/प्रतिस्पर्धा में टिक पाना कठिन होता है।

मध्यस्थों की भागीदारी

कुछ महिला उद्यमियों ने बताया कि उनके पास स्वयं की कोई दुकान या उपयुक्त स्थान व सुविधा न होने के कारण उन्हें अपना उत्पाद बेचने के लिये मध्यस्थों की दया पर भी निर्भर रहना पड़ता है। मध्यस्थ उनके लाभ का बड़ा हिस्सा ले लेते है, जिससे उन्हें उचित लाभ नही मिल पाता। ईंट निर्माण करने वाली महिला उद्यमियों ने बताया कि वे स्वयं माल का आदेश प्राप्त करने व क्रेता तक माल पहुंचाने में असमर्थ होती है। अतः मध्यस्थों की सहायता से उन्हें अपना माल बेचना पड़ता है।

मोल-भाव की प्रवृत्ति

सर्वेक्षण के दौरान यह भी पाया गया कि अधिकांश महिला उद्यमियों द्वारा उत्पादित वस्तुओं/सेवाओं की ज्यादातर ग्राहक महिलाएं ही थी, जो महिला उद्यमियों से अच्छे

माल/सेवाओं की अपेक्षा तो करती है पर दाम कम देना चाहती है। साथ ही महिला उद्यमियों ने बताया कि उनमें मोल-भाव की प्रवृत्ति भी अधिक थी फलस्वरूप उन्हें अपने उत्पाद का पर्याप्त मूल्य प्राप्त नही हो पाता।

कुछ महिला उद्यमियों ने यह भी जानकारी दी कि उपभोक्ताओं/ग्राहकों के ऐसे व्यवहार के कारण उनकी उद्यमशीलता पर भी प्रभाव पड़ता है। वे अपने उद्यम के प्रति उदासीन होने लगती है।

स्थान संबंधी समस्या

सामान्यतः महिला उद्यमी स्थल का चयन ठीक से नहीं करती। अधिकांश महिलायें अपना उद्यम घर में ही संचालित करती है उनका उद्यमस्थल सस्ते किराये के स्थानों पर संचालित है। परिणाम स्वरूप परिवहन, उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं के प्रचार-प्रसार में कठिनाईयां होती है। साथ ही कच्चा माल प्राप्त करने व बाजार तक पहॅुचने में भी कठिनाइयां आती है। अर्थात औद्योगिक क्षेत्र घर से दूर होने पर महिला उद्यमी के उत्पाद की लागत को बढ़ाता है।

घर में उद्यम स्थल होने से यह उद्यम विस्तार को सीमित रखता है एवं महिलाओं के समक्ष उद्यम संबंधी कार्यों में समस्यायें उत्पन्न करता है।

बिजली की कमी

कई महिला उद्यमियों को उनके उद्यम/सेवा व्यवसाय में बिजली की कमी के कारण समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इस संबंध में उन्होंने बताया कि इसके कारण वे अपने उद्यम से संबंधित सयंत्र की क्षमता का भरपूर उपयोग नही कर पाती साथ ही कार्य भी समय पर नही हो पाता। साधनों की कमी व छोट पैमाने पर उत्पादन/सेवा व्यवसाय चलाने के कारण उनके लिये अपनी ओर बिजली सृजन कस सयंत्र लगाना भी संभव नही है।

कच्चे माल की समस्याएं

महिला उद्यमियों द्वारा संचालित उद्यमों में कच्चे माल संबंधी निम्नलिखित समस्याएं देखी गई -

कच्चे माल की कीमत अधिक होना

महिला उद्यमियों ने बताया कि उन्हें पर्याप्त मात्रा में कच्चा माल उचित कीमत पर उपलब्ध नही हो पाता। वित्त के अभाव में वे एक साथ पर्याप्त मात्रा में कच्चा माल क्रय नही कर पाती व थोड़ी मात्रा में स्थानीय दुकानों/व्यापारियों से कच्चा माल क्रय करती है। अतः माल खरीदते समय उन्हें कोई छूट नही मिलती बल्कि उन्हें कच्चे माल

के ऊंचे दाम देने पड़ते हैं।

उचित समय पर कच्चा माल प्राप्त करने में कठिनाई

महिला उद्यमियों के अनुसार कभी-कभी आवश्यकतानुसार ठीक समय पर कच्चे माल की प्राप्ति भी कठिन हो जाती है। रेडीमेड वस्त्र निर्माण करने वाली कुछ महिला उद्यमियों ने बताया कि इस क्षेत्र में व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा अधिक होने के कारण निर्मित वस्त्रों में विभिन्नता लाने के लिये कच्चा माल स्थानीय स्तर पर प्राप्त नही हो पाता, उन्हें बाहर से माल क्रय करना पड़ता है। सीमित गतिशीलता के कारण आज भी उन्हें अकेले एक स्थान से दूसरे स्थान पर आने-जाने में विशेष कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ग्रामीण क्षेत्र की महिला उद्यमियों ने बताया कि परिवहन के साधनों की कमी के कारण भी उन्हें उचित समय पर कच्चा माल प्राप्त नहीं होता जिससे उद्यम संचालन में समस्यायें आती है।

उच्च गुणवत्ता का माल प्राप्त न होना

अच्छे गुणवत्ता वाले कच्चे माल से अच्छा उत्पादन किया जा सकता है किन्तु कभी-कभी महिला उद्यमी इस क्षेत्र में धोखा खा जाती है। उन्हें उच्च कोटी का कच्चा माल प्राप्त नही हो पाता।

उपरोक्त समस्याओं/कारणों का परिणाम यह होता है कि एक ओर तो उत्पादन व्यय बढ़ जाता है वहीं तैयार माल की गुणवत्ता पर भी प्रभाव पड़ता है व विपणन में महिला उद्यमियों के समक्ष समस्यायें उत्पन्न होती है।

तकनीकी समस्या

महिला उद्यमियों के समक्ष एक समस्या तकनीकी भी है। वर्तमान काल में विज्ञान में महत्वपूर्ण उन्नति की है। जिसके फलस्वरूप उद्यम की व्यवस्था तथा उत्पादन विधियों, मशीनों तथा उपकरणों आदि में आश्चर्यजनक उन्नति हुई है। किन्तु अभी तक महिलाओं द्वारा संचालित उद्यमों पर इसका प्रभाव दिखाई नहीं देता। अनेक गरीब एवं कम शिक्षित महिला उद्यमी आज भी पुराने उपकरणों, मशीनों और साज-समान के साथ परंपरागत ढंग से उद्यम कार्य करती है। परिणाम स्वरूप उनका उत्पादन आधुनिक नहीं बनता, उत्पादन कम होता है, लागत अधिक आती है जिससे विपणन में कठिनाई के साथ-साथ ही उन्हें पर्याप्त लाभ नहीं मिल पाता है।

महिला उद्यमी जो अपने उद्यम/सेवा व्यवसाय में आधुनिक नवीन मशीनों व उपकरणों का प्रयोग करती है उनमें तकनीकी ज्ञान एवं प्रशिक्षण के अभाव के कारण उद्यम स्थापना से पूर्व व पश्चात् निम्न समस्याएं देखी गई है।

उद्यम स्थापना से पूर्व

सही मशीनों व उपकरणों के चयन की समस्या

महिला उद्यमियों ने बताया कि नवीन तकनीकी ज्ञान की कमी के कारण उन्हें उद्यम से संबंधित सही मशीनों व उपकरणों के चयन में समस्यायें आती है।

एक महिला उद्यमी ने बताया कि उसने अपने उद्यम हेतु मशीन आयात की किन्तु पर्याप्त तकनीकी ज्ञान के अभाव में जो मशीन आयी वह पर्याप्त गुणवत्ता की नहीं होने के कारण उसे वापस कर नई मशीन मंगवाने में अतिरिक्त व्यय करना पड़ा फलस्वरूप स्थापना व्यय में अत्याधिक वृद्धि हो गयी।

उद्यम स्थापना के पश्चात्

उद्यम स्थापना के पश्चात् कुछ महिला उद्यमियों में तकनीकी ज्ञान की कमी के कारण निम्न समस्या देखी गई।

मशीनों का रखरखाव व खराब मशीनों की मरम्मत संबंधी समस्या

तकनीकी ज्ञान की कमी के कारण महिला उद्यमियों को मशीनों के रख-रखाव एवं सामान्य देखभाल की समस्याएं आती है। साथ ही मशीन में किसी प्रकार की खराबी आने पर उनकी मरम्मत में उन्हें अत्याधिक व्यय करना पड़ता है व कार्य भी प्रभावित होता है।

कर्मचारियों व श्रमिकों से संबंधित समस्याएं

महिला उद्यमियों के समक्ष कर्मचारियों व श्रमिकों से संबंधित निम्नलिखित समस्याएं भी देखी गयी -

प्रशिक्षित कर्मचारियों व श्रमिकों की कमी

महिला उद्यमियों द्वारा संचालित कई उद्यमों द्वारा संचालित कई उद्यमों में स्थायित्व का अभाव है जिसके कारण उद्यम से संबंधित उच्चस्तरीय, कुशल व प्रशिक्षित कार्मिक व श्रमिक न भली प्रकार मिल पाते है और न ही स्थायी तौर पर मन लगाकर काम करते है फलस्वरूप उद्यम में निम्न स्तर के कार्मिकों पर या फिर परिवार के सदस्यों पर निर्भर रहना पड़ता है। जिनमें आवश्यक तकनीकी कौशल का अभाव होता है।

कुशल कर्मचारियों व श्रमिकों द्वारा अधिक वेतन की माँग

कुशल कर्मचारी व श्रमिक महिला उद्यमियों से अधिक वेतन की माँग करते है। किन्तु महिलाओं द्वारा संचालित उद्यम छोटे पैमाने के होने के कारण वे उन्हें अधिक वेतन नही दे पाती फलस्वरूप उद्यम संबंधी कार्य करने में उनके समक्ष समस्यायें आती

है।

आदेश की अवहेलना

कुछ महिला उद्यमियों ने बताया कि प्रतियोगी उद्यमी उनके कर्मचारियों व श्रमिकों को आर्थिक प्रलोभन देकर ले जाते है। परिणाम स्वरूप इसका प्रभाव उनके उद्यम पर पड़ता है।

अन्य समस्याएं

सर्वेक्षण के दौरान सर्वेक्षित उद्यमशील महिलाओं ने कुछ अन्य व्यक्तिगत समस्याओं से भी अवगत कराया जो उनके उद्यम की सफलता को प्रभावित करती है साथ ही उद्यमशीलता के क्षेत्र में अनेक समस्याओं को स्वतः ही जन्म देती है जो निम्नानुसार है-

उपयुक्त कार्यायोजना के चयन की समस्या

एक उपयुक्त एवं व्यवस्थित कार्यायोजना उद्यमशीलता के क्षेत्र में सफलता की संभावना को बढ़ा सकती है किन्तु सर्वेक्षण के दौरान कुछ महिला उद्यमियों ने बताया कि उन्हें उद्यम अवसरों के बारे में पर्याप्त ज्ञान न होने, आत्मविश्वास की कमी, अपनी पार्श्व भूमि को उद्यम से जोड़ना, अज्ञानता आदि के कारण वे उपयुक्त कार्य योजना का चयन नहीं कर पाती फलस्वरूप वे भी वहां उद्यम/कार्य योजना का चयन करती हैं जिन्हें अधिकांश महिलायें चुनती हैं। परिणामस्वरूप आगे चलकर व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा व ज्ञान की कमी के कारण उन्हें समस्याएं आती हैं।

बाजार विश्लेषण एवं सही पूर्वानुमान न होना

अधिकांश महिला उद्यमियों ने बताया कि उन्हें बाजार का आकार और प्रकृति, मांग और पूर्ति का दृष्टिकोण, संभावित ग्राहकों की स्थिति और विशेषताएं, बाजार को नियंत्रण में लेने तथा बाजार बढ़ाने की क्षमता का ज्ञान न होने के कारण उद्यम में समस्यायें उत्पन्न हो रही है।

विनियोग के मामले में सही निर्णय न ले पाने की क्षमता

उद्यमशीलता के क्षेत्र में सफल होने के लिये एक आवश्यक तत्व होता है उचित समय पर विनियोग के मामले में सही निर्णय लेने की क्षमता। अधिकांश महिला उद्यमी विनियोग के मामले में सही निर्णय नही ले पाती है। सर्वेक्षण के दौरान कुछ महिला उद्यमियों ने बताया कि प्रारंभिक स्तर पर भूमि, भवन एवं उपकरणों पर उन्होंने अत्यधिक पूंजी खर्च की जिससे बाद में कार्यशील पूंजी की कमी के कारण उन्हें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा।

सही लेखांकन का अभाव

अधिकांश महिला उद्यमियों ने अवगत कराया कि उन्हें उद्यम से संबंधित उचित लेखांकन रखने में कठिनाई आती है क्योंकि उन्हें लेखाकर्म का पर्याप्त ज्ञान नही होता है।

प्रबंधकीय क्षमता का अभाव

सामान्य महिलाओं को उद्यम से संबंधित प्रबंधकीय कुशलता एवं संगठन का कोई विशेष ज्ञान नही होता परिणाम स्वरूप में अपने उद्यम में विशिष्टीकरण एवं श्रम विभाजन का कार्य उचित रूप से करने में असमर्थ रहती है। उचित प्रबंधकीय कुशलता के अभाव में अपने कार्यों का समुचित नियोजन एवं लक्ष्य निर्धारित नहीं कर पाती हैं।

बैंक व्यवहारों से अनभिज्ञता

ग्रामीण अंचलों में रहने वाली अधिकांश महिला उद्यमी कम पढ़ी-लिखी होती है। फलस्वरूप उन्हें बैंक संबंधी कार्यों और व्यवहारों की सही-सही जानकारी न होने के परिणाम स्वरूप उन्हें ऋण प्राप्त करने व उसके पुनः भुगतान में कठिनाइयां आती है।

इसके अतिरिक्त शासन द्वारा प्रदत्त सुविधाओं व सहायताओं के बारे में पर्याप्त जानकारी का अभाव, वर्तमान आचार विचार के साथ समझौता न कर पाना व समय का अभाव भी महिला उद्यमी के समक्ष समस्यायें उत्पन्न करते है।

स्रोत

महिला उद्यमी पर लेखिका द्वारा स्वयं के सर्वेक्षण के आधार पर

11.

Role of Education in Women Empowerment and Development

Dr. Kalpana Bishwas
Asst. Prof., History
Govt. Narmada P G College
Hoshangabad, M.P.

"You can tell the condition of a nation by looking at the status of its women"

"If you educate a man you educate an individual, however, if you educate a woman you educate a whole family. Women empowered means mother India empowered"

JAWAHARLAL NEHRU

Education is not merely a means for earning a living or an instrument for the acquisition of wealth. It is an initiation into life of spirit a training of the practice of human soul in the pursuit of truth and the practice of virtue.

Education is the most important instrument for human resource development. Educating women, therefore, occupies top priority among various measures taken to improve the status of women in India. In recent years, the focus of planning has shifted from equipping women for their traditional roles of housewives and mothers in recognizing their worth as producers, making a major contribution to family and national income. Efforts have been made over the past three decades of planned development to enroll more girls in schools encouraging them to continue their education as long as possible, and to provide non-formal educational opportunities for women.

HISTORY OF WOMEN'S EDUCATION IN INDIA

In the Vedic period women had all rights similar to men in studying the vedas. Its important to remember that Vedas, Shastra's, Sanhitas, Upanishads

in ancient time were taught in Gurukuls is similar to schooling education in modern times. So denying this right to women in ancient times would have meant denying women the right to education. But as we shall see below, this was not the case. Women enjoyed equal liberty and freedom in their pursuit of knowledge in ancient India similar to men.

WOMEN VEDIC SCHOLARS WHO COMPOSED RIG VEDA HYMNS

Aditi 4.18, Aditirdâkshâyaòi 10.72, Apâlâ Atreyi 8.91, Indrâòi 10.86,Urvashi 10.85, Godhâ 10.134,Goshâ Kâkshîvati 10.39, 10.40, Juhûrbramhajâyâ 10.109, Tvaºhþa Garbhakartâ 10.184, Dakshiòâ Prâjâpatyâ 10.107,Yamî 10.154,Yamî Vaivasvati 10.10, Râtrîrbhâradvâjî 10.127,Lopâmudrâ1.171,Vasukrapatnî 10.28, Vagâmbhºòî 10.125,Vishvavârâ Atreyi 5.28, Sashvatyâògîrasi 8.1, Shradhdâ Kâmâyâni 10.151, Shachî Paulomi 10.159, Sarparâjni 10.189, Sikatâ Nivâvari 9.86, Sûrya Savitrî 10.85, Romashâ 1.126, Saramâ Devashunî 10.108, Shikhandinyavapsarasau, Kâshyapan 9.104,Jaritâ Sharògah 10.142, Sudîtîrangirasah 8.71, Indra Mataro 10.153

Madhava Samhita on Parashara Smriti says:

Yopanayanam krutwa pashcad vivaham karoti sa brahmavadini

tathaiva ya prathamata upanayanam krutwa sadya eva vivaham vidhaya tato vedamadhite sa sadyovadhuh

This means - She who studies Vedas after upanayana and then gets married is brahmavadini, she who gets married immediately after upanayana and then studies Vedas is sadyovadhu.

This goes on to show that women were eligible to both the sacred threading ceremony as well as the Vedic studies in ancient times. This also means that women are also eligible to Gayatri Upadesha and to learn the Gayatri Mantra, because any person who has gone through the Yajnopavitam ceremony is eligible for Gayatri Upadesha.

So, denying the women rights to study vedic knowledge, to Yajnopavitam Sanskara and Gayatri Upadesha is un-Vedic. In the Vedas there is not a single reference which denies the women these rights.

Shri Madhvacharya in his *Mahabharata Tatparya Nirnaya*, describes the scholarly nature of Draupadi, the wife of Pandavas. Women should study the Vedas like Krishna (Draupadi).

Even women Scholars got the name of – Rishika. All the Vedic hymns were actually revealed to different Vedic scholars, which is why we find each Vedic hymn attributed to a particular Rishi. Now what is interesting to note is that, there are many Vedic hymns attributed to Rishikas (female Vedic scholars). In Rig Veda alone there are around 30 women vedic scholars (Rishikas) to whom different hymns have been attributed to.

Now obviously, it would be naive to say that women cannot study the Vedas, while there are hymns in the Vedas which were revealed to women sages!

Katyaayana in his Rig-Veda Sarvanukramani lists the 27 Rishikas as follows, saying these are the Brahmavadinya or female Vedic scholars.

Godha Ghosha Vishwavara Apalopanishannishat

Brahmajaya JuhUrnama Agastyasya Swasa Aditih

Indrani Indramata Sarama cha Romashorvashi

lopamudra cha Nadyashca yami Nari cha Shashwati

Shrirlaksha Sarparaj ji Vak Shraddha Medha cha Dakshina

Ratri Surya cha Savitri Brahmavadinya Iritah.

Even Panini in his Ashtadhyayi refers to *Kathi* as female students of the *Katha Shaakha* of the Vedic school. He also refers to *Bahvrichi* as female students who are well versed in many hymns of the Rig-Veda.

Panini also mentions about the female students admitted to the study of Meemamsa and about chhatri (girl students) and Upadhyayi (women teachers).

This clearly shows that even during the time of Panini, Vedic education was imparted to both men and women.

In his book "Siddhartha Kaumudi" Bhattoji Deekshita, the 17th century Sanskrit grammarian from Maharashtra wrote on the Ashtadhyayi of Panini. In this book the author refers to the term *Upadhyayi* explicitly as ladies who are themselves teachers and not merely as wives of male teachers. This shows that, even in not so distant past, there were female teachers in Sanskrit education.

Isn't this an irony that on one hand we have the western civilization where women who were denied equal rights to that of men in the ancient times today enjoy equal rights with men in all sections of the society. And on the other hand our ancestors during the early Vedic civilization started off with equal rights to men and women, and today we have advocates who want to deny the very

same Vedic education and Sanskara to women.

Even during Sankaracharya period, 9th Century AD. It was the period when Muslim invaders had not come to India, he came to Mithila for a Sastrarth with Mandan Misra, in which Mandan Misra got defeated by Sankaracharya, that time Mandan Misra's wife came in front and said Mandan je only half defeated because you have not defeated me. A new Sastrarth took place between Sankaracharya and Bharti, wife of Mandan Misra. In first round Bharti was on the upper hand in the Sastrarth on Kama, Sankaracharya took time he got knowledge about Kamasastra and only after that he defeated Bharti . That Sastrarth took more than 1 year. It shows that there was education in women till that time.

Lilawati is a renowned Mathematician of her time. There is a book by her Lilawati. Gargi was a great scholar and is famous for her Sastrarth.

The Rig Vedic Women in India enjoyed high status in society. Their condition was good. The women were provided opportunity to attain high intellectual and spiritual standard. There were many women Rishis during this period. Though monogamy was mostly common, the richer section of the society indulged in polygamy. There was no sati system or early marriage.

Historically women have taken part in all spheres of life with courage and gusto. Indian higher education system is no exception. Indian mythology is rich with stories of highly educated and evolved women. We embrace womanhood that our deity of education is a woman. One can trace the historical evidence of ancient Indian education to the 3rd century B.C. when education was imparted orally and many women scholars were part in it. When Buddhism spread to India, some world famous educational institutions such as Nalanda, Vikramshila and Takshila were established. Research shows that a number of women were enrolled in these temples of learning. These universities flourished from about 5th century to 13th century. In the 11th century the Muslim rulers established universities in Delhi, Lucknow and Allahabad.

Women had taken part in all fields of knowledge such as theology, religion, philosophy, fine arts ,and astronomy. But still education has been found to be restricted to a certain strata of the society. It was not available to everyone.

Education in Medieval period in India was influenced mostly by foreign invasion. Various traders and rulers came to India during the medieval period and brought their own culture and tradition as well as learning process. Indian society imbibed those knowledge and introduced it among the people of the

country. However , these conquests resulted it the declined in women's status in the medieval period. The female literacy rate in India was lower than the male literacy rate. Women education in medieval India suffered a lot.

Women were described in ancient Indian texts as weaker section of the society: they were considered as frail physically and both socially. Thus, though women were given equal rights in the Vedic period, their situation deteriorated with time. The medieval societies were subjected to inequalities and they were oppressed too. Historically, the medieval period is attributed as the 'dark age' for women in India.

Nevertheless, the status of women in Southern India was far better than the North India. Women Education in Medieval India was seen in the south India. Furthermore, the evil practices of the societies existed only among the Hindu Community. Other religious such as Hinduism and were offered a more liberal approach.The plight of women during the middle ages was very intense.

The coming of the Muslims aggravated the troubles of the women in India in the medieval period. The women were forced to practice 'zenana'. In addition to that Muslim women were prevents them from getting equal access to education. Women Education in Medieval India was restricted among the Muslim women due to religion. Muslim women were illiterate: however, certain section of the women were better off and were given higher levels of education.

During the Muslim rule, Women Education in Medieval India was constrained because Muslim men were also subjected to low educational attainment in general. On the other hand many women excelled in arts, literature, music in the medieval period. Women also served as rulers in the medieval period. Razia Sultan was the only woman monarch to ruled the throne of Delhi in middle ages. The Gond queen Durgavati ruled for fifteen years, before she lost the battle to Mughal emperor Akbar's general Asaf Ali. Later when the British arrived in India, English education came into being.

Raja Ram Mohan Roy was the first Indian who founded a reformist movement in India. He wanted to modernize India as early as possible; therefore, he was called the 'representative of the modern age'. In fact, Raja Ram Mohan Roy played a significant role in the progress and development of women. He was a great reformer, politician, editor, theologian and a literary person. He played a prominent role in the modernization of India.

Raja Ram Mohan Roy was a learned and educated person, so he made

development of education and literature the aim of his life. Hence he opened schools and colleges at several places, Vedanta College, the English School and City College of Calcutta were the results of his efforts. All these educational institution so really contributed towards the modernization of India.

Raja Ram Mohan Roy made the newspapers and his books, a medium to propagate his ideals. He also made a tremendous contribution in the development of Bengal. Urdu, Persian, Ariabic, Sanskrit and English language and literature and wrote books in all these languages.

He made his newspapers 'Sainvad Kaumudi' and 'Miratul Akhbari' vehicles to carry his thoughts to the people. He was also in favour of making all education and literature free from any restrictions.

Roy believed education to be an implement for social reform. Without proper education we can t reform our society. Education is an instrument for social change. Roy believed that modern education was an important vehicle to carry social reforms and enlighten people about their rights.

He insisted that his teaching of monotheistic doctrines be incorporated with "modern, western curriculum". He supported induction of western learning into Indian education.

Women Education: Equally able was the Raja's advocacy of the education of Women. Although the concept had already been put forward by missionaries, it was the Raja who helped to popularize it among the Hindus. He said that the women of India were highly educated and that the education of women was in keeping with ancient religious traditions and beliefs. The Brahma Samaj did great service in removing the popular prejudices against the education of women that were the prevalent in the Hindu society and the credit for this goes mostly to Ram Mohan.

He also set up the Vedanta College, offering courses as a synthesis of Western and Indian learning. Raja Ram Mohan Roy was a great believer in the potency of western education, science and mathematics and propagated their adoption throughout India. He believed that if these disciplines were good for the British, then they were good for Indians too. Despite receiving widespread criticism and allegations of being „unpatriotic , he was responsible for bringing about a cultural and educational shift in India through his reforms and ideals. He believed that Indians should learn the good things from the west and infuse it with traditional knowledge to produce unique, potent results.

He was a scholar and a great educationist who had detailed knowledge

of Sanskrit, Persian, English, Arabic, Latin and Greek. He supported English as a medium of teaching in India as he believed that teaching through English language was superior to traditional Indian education system.

Another great contribution of Raja Ram Mohan to modern education was his emphasis on the study of modern Indian languages. He himself gave the lead in this direction by writing books in Sengali on Grammar, Geography, Astronomy and Geometry. Equally was the Raja's advocacy of the education of women. His Brahmo Samaj did a great service in removing the prejudices against the education of women that were prevalent in the then Hindu society.

Raja Ram Mohan Roy may rightly be called the precursor of the modern system of education in India. His moral earnestness and untiring energy, his boldness of imagination and firm grasp of first principles mark out Raja Ram Mohan Roy not merely as a great educational reformer but as a nation builder.

European missionaries played a great role for girl's education.

European missionaries came and established many schools. These missionaries promoted schooling for girls from the early part of 19th century. Mostly girls from poor families attended these schools. By the end of the 19thcentury, women were graduating from colleges and universities in a sizeable number. (In 1882, there were 2,700 schools and colleges for girls with 127,000 students.) The social reform movement of the 19th century (that originated within the Indian intelligentsia and later spread to sections of the middle classes) had a major role in this upsurge of education among women, but this movement was largely an urban phenomenon.

This period coincided with several other reforms such as child marriage, Sati Pratha, and Purdah system.

In 1857, three universities were established in three presidencies –Bombay (now renamed Mumbai), Calcutta (Kolkata) and Madras (Chennai).

Acquiring higher education presented a personal challenge to middle class girls, but the participation of Christian and Parsi women was much higher than that of Hindu women, and it was the lowest among Muslims. Around the beginning of the 20th century the new emphasis on education for women was not just to make them better housewives and mothers but also to help them educate their children and so contribute to nation building. In 1906, Sarojini Naidu said, in a speech to the Indian Social Conference in Calcutta, "Therefore, I charge you, restore to your women their ancient rights, for, as I have said, it is we, and not you, who are the real nation builders, and without our active

cooperation at all points of progress all your congresses and conferences are in vain. Educate your women and the nation will take care of itself, for it is as true today as it was yesterday and will be to the end of human life that the hand that rocks the cradle rules the world". At this time only 2% of Indian women had any education, so one can imagine the meager number of women who got 'higher' education. But education was increasingly being viewed as a means to enhance the social presence of Indian women and enable them to adapt to a changing external situation.

The Indian National Congress played a major role in emancipating women. Within a year of its formation in 1885, a Ladies' Association was formed. By the 1890s more and more highly educated women were visible in the public sphere. Later, prominent Indian women like Ramabai Ranade, Sarojini Naidu, Annie Besant, Rameshwari Nehru, Rajkumari Amrit Kaur, Aruna Asif Ali, Sucheta Kriplani, Usha Mehta and Vilasini Devi Shenai played an important political and social role. By the 1920s different rationales were being presented to provide quality higher education to women. According to one view, women should be highly educated because of their useful role as a mother. According to the other group, women having the same needs, desires and capacities as men should be given the same opportunities for higher studies. This period also saw a shift in consciousness of and about working class women. Once women were recognized as an integral part of the workforce, higher education became a necessary stepping-stone.

But the development of educational opportunities for girls was held back because of child marriage and purdah. Not only that, but women's education was not smooth as several traditional and orthodox forces came in the way. For instance, Sardar Dayal Singh, speaking on behalf of the Indian Association of Punjab, stated "the object of female education in this country is not to make sound scholars but to make better mothers, sisters and wives". "Girls should be taught suitable subjects and not be made to swallow history and geography indiscriminately," opined Lahore Arya Samaj. Many universities were established during this period. Benaras Hindu University in 1916, Aligarh Muslim University in 1920, and Delhi University in 1922 became new hubs of women's liberation. At this stage, many enlightened national leaders took much interest in this area and strove hard to bring about a change in the mindset of the people.

WOMEN'S EDUCATION AFTER INDEPENDENCE

After the Independence, women's education, especially higher education,

took off. Education started playing a great role in the emancipation of women from traditional dependencies. Women became more vocal, articulate and assertive. The Indian Constitution granted equal rights to women and later included the right to education. Jawaharlal Nehru said, "You can tell the condition of a nation by looking at the status of its women." He understood that higher education for women was the need of the hour. In 1950-51 there were nine women per hundred men pursuing higher education. In 1984-85 the situation improved to 28 women per hundred men.

The National Policy on Education of 1968 marked a significant step in the history of education in post-Independence India. It aimed to promote national progress, a sense of common citizenship and culture, and to strengthen national integration. It was acknowledged that the growth of our population needed to be brought down significantly over the coming decades. The largest single factor that could help achieve this was the spread of literacy and education among women. This policy laid special emphasis on the removal of disparities and to equalize educational opportunity for men and women.

Education was to be used as an agent of basic change in the status of women. To neutralize the accumulated distortions of the past, there was a well-conceived edge in favour of women. The National Education System played (and continues to play) a positive, interventionist role in the empowerment of women. It fostered the development of new values through redesigned curricula, textbooks, the training and orientation of teachers, decision-makers and administrators, and the active involvement of educational institutions. This was to be an act of faith and social engineering. Women's studies were promoted and educational institutions were encouraged to take up active programmes to further women's development.

The system worked vigorously to eliminate sex stereotyping in vocational and professional programmes and to promote women's participation in nontraditional occupations, as well as in existing and emergent technologies. The Constitutional Amendment of 1976, which includes Education in the Concurrent List, was a far-reaching step. The National Policy on Education of 1986 and the Revised Education Policy of 1992 also laid adequate emphasis on women's higher education. Ironically, much of the essential work of promoting education rested in women's hands, and no education policy could be effective without the active support of the society. Older women were not ready to let their progeny join institutes of higher learning. Only 'advanced' and 'modern' girls pursued such ambitions that were unthinkable for a 'nice'

'homely' 'traditional' girl, from a 'respectable' family. The matrimonial advertisements emphasized this brazenly. This was an unquestioned reality in most homes. 'Steeped in ignorance' might be a cliché, but it was the truth.

The poorer classes were, of course, completely unaware of the need for education, but the upper classes – as well as the middle class in its unrelenting desire for respectability – would not encourage it for fear of throwing open the doors to subversion.

The scales were heavily weighed against women. Only a few could break free from the mould in which they had been cast from birth. In most Indian families, a daughter was viewed as a liability, and she was conditioned to believe that she is inferior and subordinate to men. Sons were idolized and celebrated. "May you be the mother of a hundred sons,"was a common Hindu wedding blessing.

The origin of the Indian idea of appropriate female behaviour can be traced to the rules laid down by Manu in 200 B.C.: "by a young girl, by a young woman, or even by an aged one, nothing must be done independently, even in her own house". "In childhood a female must be subject to her father, in youth to her husband, when her lord is dead to her sons; a woman must never be independent."

Today Indian women's participation in higher education is quite high and growing. This is due to high job aspirations and parental support. But most women still attend local universities, as their parents want them to stay at home and study. A lot depends on their social class, and parental educational status.

WOMEN AND EDUCATION-PRESENT SCENARIO

Today 53.5% of young women below 30 have university degrees. These times in India are the kind of times when everything seems within reach, anything is possible with hard work and determination. The achievements of women during these times are so significant that they have altered the gender landscape of schools, colleges, offices, courts, police stations, hospitals, hotels and business establishments. Women are everywhere making their mark in every field. This revolution has occurred without an organized women's movement in the country. Women have begun to think of possibilities for their careers. The faith reposed by parents in their daughters and giving them the freedom is indicative of how the times have changed! Exposure to and interactions with the outside world are instrumental in determining the possibilities available to women in their daily lives. The situation of women is affected by the degree of

their autonomy or capacity to make decisions both inside and outside their own household.

As women receive greater education and training, they will earn more money. As women earn more money, they will spend it in further education and health of their children. As women rise in economic status, they will gain greater social standing in the household, and will have greater voice. As women gain influence, they will make stronger claims to their entitlements – gaining further training, and better access to higher incomes. As women's economic power grows, it will be easier to overcome the tradition of "son preference" and thus end the evil of dowry. As son preference declines, families will be more likely to educate their daughters, and age of marriage will rise. As women are better nourished and marry later, they will be healthier, more productive, and will give birth to healthier babies.

EDUCATION IN INDIA

The issues concerning women's access to education are not uniform across different stages, professions or geographical spread. A brief look at the education landscape with respect to women's education is provided here. Primary and Secondary Education

Under the Right of Children to Free and Compulsory Education, government has made education free for children of 6-14 years of age. One would expect that with this promise of free education, there would be an equal number of girls enrolling in primary education. However, in reality the picture looks much different. According to a 2008 government report, educational statistics indicate that the number of girls per 100 boys is around 80% for classes upto the VIII and a little over 70% for secondary higher education that covers classes upto XII. Secondary education generally covers children in the age group of 14-18 years, which is roughly 88.5 million people according to the 2001 Census. However, enrolment figures show that only 31 million of these are attending school (Census, 2001).

Of those attending, it appears that attracting and retaining girl children for secondary education is more difficult compared with primary education as well as attracting and retaining boys at the same level of education. The possible reasons for the same are discussed later in the article.

HIGHER EDUCATION IN INDIA

The Indian higher education system is one of the largest in the world after China and the United States. It consists of colleges, universities, institutions of

national importance (such as Indian Institutes of Technology, Indian Institutes of Management and Indian Institute of Science), and autonomous institutions with the status of deemed universities. As of 2009, there are 367 University level institutions including 20 Central Universities, 217 State Universities, 106 Deemed Universities and 5 institutions established under State Legislation, 13 Institutes of National Importance established under Central legislation and 6 Private Universities.

There are 18,064 degree and post-graduate colleges (including around 1902 women's colleges), of which 14,400 came under the purview of the University Grant Commission, the rest are professional colleges under the purview of the Central Government or other statutory bodies like the AICTE, ICAR, MCI etc. Of the Colleges under UGC purview 6109 have been recognized by the University Grants Commission (UGC) under Section 2(f) and 5525 under Section 12(B) of the UGC Act, which recognition permits them to receive grants from the UGC. (Government of India 2009-10).

And various institutes which are of national importance, such as the IITs, IIMs and universities such as JNU. Other institutions include 16000 colleges, including 1800 exclusive women's colleges, functioning under various universities and institutions (Government Report, 2009). Despite these exceptional numbers and acknowledged quality of many institutions, it is surprising that women record a lower presence across most institutions of higher education. Significant male-female disparities exist in the enrolment of women in higher education. Gender disparity in enrolment ratio is also because of visible differences in rural areas.

Since 1991, a large number of private colleges are being set up on a self-financing basis and their number has increased rapidly. The private technical education system in India is the largest in the world and the growth of higher education in the last 15 years has been mainly in the private sector (Anand krishnan 2004). They seem to fulfill the demand for undergraduate professional programmes in engineering/technology, medicine including dental education and health sciences, management, computer and IT education, mass media and communication, teacher education, etc. Most of these are in the southern and southwestern states of Karnataka, Andhra Pradesh, Tamil Nadu, and Maharashtra. Other provinces are following suit. They are quick to respond to the demand for new programmes though in a limited number of subjects. As a result, their number has increased so much so that they form a majority of the undergraduate colleges in India.

WOMEN IN HIGHER EDUCATION

Starting in 1950-51 when the proportion of women was 10.9 percent to 40.04 percent in 2002-03, the increase has been significant. In other words there were, 14 women per 100 men in 1950-51, which increased to 67 in 2002-03 (Shukla 2003). Thus, the proportion of women entering higher education today has increased rapidly from 1,685,926 in 1991-92 to 40% (3,695,964) of all students. There have also been shifts in women's choice of disciplines in higher education. There are also wide disparities in enrolment by region, caste, tribe and by gender. These differences had made an impact on women from the disadvantaged groups.

SOCIALIZATION OF WOMEN'S EDUCATION

Education has normally been viewed as an agency helping economic production; it is also said to provide instructions in suitable skills for a general division of labour. Thus one of the aims of higher education is to develop efficiency in production. But a great deal of ambivalence exists as regards women's education. The ambivalence has increased since women have begun to seek employment. The role of women as wives, mothers and homemakers has increased. Women must now also seek employment to improve their economic conditions and to seek intellectual satisfaction. It is interesting to note that in study conducted by the Carnegie Commission it was found that college educated women tend to spend relatively more time on child care than women with lower levels of education, but about the same amount of time on such activities as meal preparation. Thus the educated women are expected to display efficiency in all her roles. Any error and the blame will go to her education. In fact, it is viewed as wastage of education (Pruthi et al. 2001).

With the enhanced level in the enrolment rate of women students in higher education, it is not surprising that one finds it enterprising to know the pulse of the student community in opting for creative and challenging academic programmes thereby deserting the age-old stereotyped ones meant for them.

SELECTING AN ACADEMIC FIELD

Selecting a academic programme of study in the Indian context is a particularly significant decision with broader family consequences. Economically, one's degree profoundly affects access to a "good job" is simply a job with security, preferably a "desk job" not involving manual labour , with onsite

decent housing, medical facilities, schools, transportation, and other amenities generally associated with the government sector. For academically elite students like at an Indian Institute of Technology (IIT), a ‘good job’ with ‘scope’ provides not only economic security but intellectual challenge, ’glamour’, ‘prestige and opportunities for advancement and travel, such as going ‘abroad’ to the United States (Saxena 2002).

PATRIFOCAL FAMILY OBLIGATIONS AND GIRLS EDUCATIONAL SUCCESS

Given the prestige and job opportunities associated with Science and Engineering programmes, one would expect middle class, education oriented families to encourage both daughters and sons to pursue career in such academic programmes. But studies have revealed that most families view educational achievements, especially in scientific fields, differently for girls than boys and are less inclined to invest family resources in the academic success of daughters than sons (Jaiswal 1988; Rugmini 1986).

Within the Patrifocal family system, a family’s obligation to daughters consists primary of getting them “well settled” in marriage. This need not preclude and can even be an impetus for educational pursuits. A college degree and increasingly a “professional degree” or a course of study with career options is seen as enhancing a girl’s marriage ability (Saxena 2002). Women’s disciplinary choices in higher education have changed over the years due to various factors.

WOMEN’S DISCIPLINARY CHOICES

Globalization has changed the world into a global market and where the jobs generated is not restricted by geographical boundaries. Further, the direct nexus between the industry, corporate world and higher education has brought a transformation in the skills needed for jobs. There has been a corresponding change in the boundaries between arts and science subjects. While the stratification between arts and science has been further reinforced, the sciences are subdivided into applied/emerging versus pure sciences. Natural/pure sciences are relegated to a lower position than are the applied sciences and professional skills. Again, academic programmes related to biosciences such as molecular biology, microbiology, biochemistry, biophysics is preferred to biology, physics and chemistry. In this hierarchy of disciplines, new disciplines such as management, media and mass communication, and fashion technology have also taken their place towards the higher end of the spectrum. The private institutions are very quick to respond to these demands (Chanana 2004).

While women used to enter colleges and universities mainly in general education or in arts subjects till the early nineties, now they are entering the private self-financing institutions for pursuing their studies in both the new and the traditionally labelled 'masculine' disciplines.

The gendered impact of the changes requires attention if the goal of social change and gender equity has to be achieved. The study of gender is, in effect, the study of inequality and social differences are critical to the understanding of women's disciplinary choices (Thomas 1990).

The programmes in higher education are divided into those of general subjects such as arts which include social sciences and humanities; and pure sciences, on the one hand, and the professional academic programmes such as engineering (which includes architecture), medical science, teacher education, agriculture, law, etc, on the other. They are also divided into masculine and feminine disciplines. For example, arts, social sciences, humanities, and teacher education have been viewed as feminine disciplines. On the other hand, commerce, law, and engineering are masculine disciplines. Medical Science has not been a masculine discipline in India unlike in the western countries. In India as in the rest of South Asia, the practice of female seclusion enjoined the treatment of women patients by women doctors. This necessitated training women doctors thereby enabling women to enter the medical profession. The proportion of women in some of the masculine disciplines was miniscule soon after the Independence and remained so till the 1980s with the exception of commerce.

Pandit Jawaharlal Nehru once said: "If you educate a man you educate an individual, however, if you educate a woman you educate a whole family. Women empowered means mother India empowered".

When women who contribute almost half of the population are empowered it will strengthen the national economy. Education is considered as a milestone for women empowerment because it enables them to respond to the challenges, to confront their traditional role and change their lives. Increasing access to education notwithstanding, gender discrimination still persists in India and lot more needs to be done in the field of women's education in India. Women have so much unexplored potential which has never been tapped. As education is both an input and input of human development, educational equity will ensure enabling and entrepreneurial development. Today, the female literacy levels according to the Literacy Rate 2011 census are 65.46% where the male literacy rate is over 80%. Even beyond literacy there is much that education can do

for women's rights, dignity and security. Education is the key to unlock the golden door of freedom for development. Eileen Malone Beach sees education, health care, and income as a blessed trinity because they are so closely related. This paper discusses the impact of education on empowerment of women as well as the challenges and changes that we must have to deal with during the process. We call for a renewed emphasis on relevant, quality and holistic education to ensure the desired results.

"A stratified three tiered structure that enables seamless vertical and horizontal mobility of students would be able to create the desired intellectual, economic and social value" – *Vision Document for India's Higher Education*.

Education is considered as a basic requirement and a fundamental right for the citizens of any nation. It is a powerful tool for reducing inequality as it can give people the ability to become independent. Women, who come across discrimination in many spheres, have a particular need for this. Education is regarded as an important milestone of women empowerment because it enables them to face the challenges, to confront their traditional role and change their life. Education of women is the most powerful tool of change their position in the society. Still large womenfolk of our country are illiterate, backward, weak, and exploited.

Education also reduces inequalities and functions as a means of improving their status within the family. Empowerment and capacity building provides women an avenue to acquire practical information and learning for their improved livelihoods. India can become a developed nation only if women contribute to the best of her capacity and ability which is possible when she is educated and empowered.

BACKGROUND OF THE STUDY

India's newfound growth pattern owes much to a social infrastructure namely education. This service and its impact are visible in tertiary sector and the rest of the economy. Education is an end in itself as well as a means for realising other desirable ends.

Empowerment is a multi-dimensional process, which enables the individuals to realise their full identity and powers in all the spheres of life. Empowerment of women brings equal status to women, opportunity and freedom to develop her which also means equipping women to be economically independent and personally self-reliant. Providing them quality education is the fundamental way to empower women which makes them scientific, logical, open-minded,

and self-respecting and ensures greater autonomy in making decisions or free themselves from the shackles imposed on them by custom, belief and practices in the society. Without such virtues being developed among women, empowerment has no meaning.

OBJECTIVES OF THE STUDY

To study the impact of education on empowerment of women.

To study the challenges and changes from education on women empowerment.

Education is milestone of women empowerment as only the educated women can play a very dominant role in the economic development of our country as well as in becoming informed citizens, parents, and family members. The growth of women's education in rural areas is very slow implying that still large women folk of our country are illiterate, the weak, backward and exploited. Therefore, "educating the women" is the most powerful tool that can bring change of position of women in society bringing reduction in inequalities and functions as a means of improving their status within the family. Education implies not only gaining knowledge but also transforming that knowledge into application through vocational training and skill development. Gender Gap index 2013 (GGI) measures the gap between men and women in four fundamental categories – economic participation & opportunity, educational attainment, health & survival and political empowerment. India ranks among the lowest 101 in 136 Countries, below Countries like China, Sri Lanka and Bangladesh. This mirrors the status of women in India and gender discrimination in all aspects of life-education, economic activity and empowerment. Education is the basis for the full promotion and improvement of the status of women. Amartya Sen makes a compelling case for the notion that societies need to see women less as passive recipients of help, and more as dynamic promoters of social transformation, suggesting that the education, employment and ownership rights of women have a powerful influence on their ability to control their environment and contribute to economic development (Sen, 1999). Literacy and educational levels are increasing for Indian women still there is gap between male and female literacy rate which can be seen in the following Table.

TABLE : LITERACY RATE IN INDIA

Year	Persons	Male	Female
1901	5.3	9.8	0.7
1911	5.9	10.6	1.1
1921	7.2	12.2	1.8
1931	9.5	15.6	2.9
1941	16.1	24.9	7.3
1951	16.7	24.9	7.3
1961	24.0	34.4	13.0
1971	29.5	39.5	18.7
1981	36.2	46.9	24.8
1991	52.1	63.9	39.2
2001	65.38	76.05	4.0
2011	74.04	82.14	65.46

Source: *Census of India* (2011)

As Table shows the pre-Independence time literacy rate for women had a very poor stream in comparison to literacy rate of men. This can be witnessed from the fact that literacy rate of women has risen from 0.7% to 7.3 % while the literacy rate of men has risen from 9.8 % to 24.9 % during these four decades. The literacy rate of male has almost tripled over the period e.g. 25% in 1951 and 76 % in 2001. Government has undertaken various programmes to increase literacy rate. Surprisingly the female literacy rate has increased at a faster pace than the male literacy during the decade 1981 -2001. The growth is almost 6 times e.g. 7.9 % in 1951 and 54% in 2001. From this analysis one can infer that only half of the female population are literates are wadding behind three fourth of the literate male population.

WOMEN EMPOWERMENT

Women empowerment is a process of enabling women to have access and make productive contributions to their economic independence, political participation and social development. Empowerment enables the individuals to realize their identity and powers in all spheres of life. It consists of greater access to knowledge and resources, greater autonomy in making decisions or free from the shackles imposed on them by custom, belief and practices in the

society. As per the latest Census of India, women constitute 48.49%of the country's population and about 90% of the informal sector. Women are mostly venerated and found valuable. Yet they are often invisible in the development scenario. It is said that between the rhetoric of women's empowerment and the reality of decreasing fund allocation for schemes related to women's health, education etc., lies the story of women's development in India. Denial of access and opportunities to rightful place, possession and position to women begins from home and extends beyond to schools and other institutions of learning and work. Differences in avenues to growth and development thus, become issues. The issues become areas of concern, not just for women, but for the entire society.

NEED FOR WOMEN EMPOWERMENT

Empowerment enables women to acquire knowledge, skills and techniques which will help them in their personal and social growth as well as foster in them sensitivity towards problems in the society. Special efforts are required to be taken for education, health and employment of women. Economic empowerment is essential for improvement of female sex ratio but economic empowerment is possible only when women are educated.

Lack of education is the root cause for women's exploitation and negligence. Only literacy and education can help women to understand the Indian's constitutional and legislative provisions that are made to strengthen them. Education is "potential affirming and performance confirming". Empowerment of a girl starts even enterprise makes empowerment operational. That is full filling journey for a mother too: from a painful situation to a gainful situation. When women are educated, they will be able to contribute in nation building. A few women are currently holding powerful positions in India and in the world, but there is still room for improvement if more women are educated. Perhaps with increase in women holding the mantle in a male-dominated political arena, the socio-political state of affairs of the whole world will definitely improve.

Gender equity is what women desire. Empowerment becomes the means of achieving it with dignity. Indian woman is considered as *shakti*, which means power. What is power without justice? Empowerment calls for critical intervention by governments too. Interventions need neatly designed approaches with assigned roles for women and executed systematically. Women development and women empowerment are correlated conceptually and methodologically. Thus, promoting education among women is of great

important in empowering them to accomplish their goals in par with men in different spheres of life, nurturing and sustaining a culture on unity, equity and dignity. Cultural and knowledge value-addition makes the case for social emancipation, political nurturing and economic empowerment that much stronger. Education makes women economically sound which is source of other all types of women empowerment i.e., Social, Psychological, Technological, Political. It enables them to overcome obstacles.

OBSTACLES TO WOMEN EMPOWERMENT

Illiteracy of the women: this is a measure drawback of women empowerment.

Violence: Violence is the prime factor which opposes women's empowerment.

Physical, emotional, mental torture and agony are deep rooted in the society from ancient times which are responsible for decline in female sex ratio.

Gender inequality: Women empowerment is not only limited to economic independence of women; gender equality is the other side.

Family restrictions: Illiterate guardians who are not willing to send their female children's to educational institutions.

Early marriages: Early marriages results in dropouts from school. Lack of awareness on female education is also one of its causes. Women's own perception of themselves and on their empowerment must be changed. They should also strive to change their image as weak, dependent, passive and try to become independent, active, strong and determined human beings.

MEASURES AND MECHANISMS FOR THE EMPOWERMENT OF WOMEN

INITIATIVES AND INSTITUTIONS

According to the Human Development Report (1993) literacy is a person's first step in learning and knowledge building. So literacy indictors are essential for any measurement of human development. In India National Policy on Education (NPE) was set up in 1986 for the development of education and eradication of illiteracy. The higher rate of illiteracy of women is undoubtedly attributing for women to depend on men and to play a subordinate role.

Within the framework of democratic polity, our legislation, development policies, plan and programs have aimed for advancement of women in difference spheres. From the Fifth five year plan (1974-78) onwards has been

a marked shift in the approach to women's issues from welfare to development. The *Mahila Samakhya Program* (Education for Women's Empowerment) started in 1987 focuses especially on the socially excluded and the landless women.

This programme is an example of creative collaboration between the voluntary sector and the State In recent years, empowerment of women is considered as the central issue in determining the status of women. The National Commission for Women was set up byan Act of Parliament in 1990 to safeguard the right and legal entitlements of women. The National Policy on Education (1986, revised in 1992) is perhaps the most luminous document on women's education. It emerged as a major breakthrough in addressing gender issues in government policy, which projected that education can be used as an agent of basic change in the status of women. The District Primary Education Program (DPEP) started in 1994 has a holistic approach to reducing gender and social disparities and universalising access, retention and achievement. Enrolment of girls has shown significant upward trend in DPEP districts as compared to non-DPEP districts. The 86th Constitutional Amendment made free and compulsory education a fundamental right for all children in the 6-14 age group which increased the enrolment of girls in schools that is 64.1% in 1980-81 to 85.2% in 1999-2000.

The Government of India has declared 2001 as Women's Empowerment year. The national policy of empowerment of women has set certain clear-cut goals and objectives. The policy aims at upliftment, development and empowerment in socio-economic and politico– cultural aspects, by creating in them awareness on various issues human rights, fundamental freedom, providing access to health care, quality education at all levels, career building, vocational guidance, employment, equal remuneration, occupational opportunities, health, safety, social security and public life etc. in relation to their empowerment. The ***Sarva Shiksha Abhiyan*** (SSA – Education for All), which was launched in 2001-02, is the national umbrella program that is spearheading the universalization of elementary education through a community-owned approach, with a specific focus on the provision of quality education. One of the challenges accepted during the 12th Plan was establishing more Women's Universities. Inequality in education is a Global Issue. The highest levels of inequality in education were in South Asia (42 %), the Arab States (41 %) and Sub- Saharan Africa (37 %).There has been limited progress in reducing disparities in education, except in Europe and Central Asia (Human Development Report 2014).

Free and compulsory education to all children between the ages of 6 and 14 is a fundamental right of citizens under the 86th Amendment to the Constitution of India. Yet, the state of education of women in India is far from 'free' or as totalizing and encompassing as the right appears to guarantee. Although the government, through its various initiatives such as the ***Sarva Shiksha Abhiyan*** (aimed at providing primary education especially to girl children from disadvantaged rural areas), attempts to improve the education of women, the barrier to educating women is not always monetary and within the purview of the state.

Post independence there has been a concerted attempt to improve literacy levels of the population in India. Many schemes have been introduced to increase the access, expand coverage and improve the quality of education. Amongst them the universalisation of elementary education, incentive schemes for retention and non formal education for adults are noteworthy for their scope and intent. Special attention has been given to the education of women in all of the schemes. However, despite the varied attempts of the government and various NGOs operating in the field of education, the statistics for women's education leaves a lot to be desired.

According to the 2001 census data (Census Report, 2001), national literacy rate stands at 64.84%. While male literacy was noted as 75.26%, female literacy lags behind at 53.67%. A more recent government report on education statistics (2008), notes that the literacy rates for women in India has steadily increased from 8.9% in 1951 to around 57% in 2004. Although substantial progress has been achieved since India won its independence when less than 8% of females were literate, the gains have not been rapid enough to keep pace with population growth. Although there has been marked improvement over the years, there is still much wanting in terms of women's literacy. The problem is further compounded if we look at the male-female gap in literacy rates. This has almost always been more than 20% over the years. For a more detailed examination of education statistics.

The various statistics and numerous studies have repeatedly pointed to the need to extend the reach and access of education to the women of the country. Although literacy rates and access to education are an area of concern for both males and females, they appear particularly problematic for women. The dropout rates and enrolment in higher education imply that getting girls to enroll in schools is the first hurdle, once surmounted girls are more likely than boys to stay on for primary education, but pose a challenge again at the

secondary and higher level of education. Although it is well acknowledged that when you educate a woman you educate a nation, this often-quoted maxim has somehow been lost in translation as the reality of women's education in India seems to suggest.

GEOGRAPHICAL DIFFERENCES

Female literacy amongst the four large northern states - Bihar, Uttar Pradesh, Rajasthan and Madhya Pradesh - is lower than the national average (53.67%), while states such as Kerala, Goa and Mizoram record comparatively higher literacy rates for women (Census,2001). The discrepancy between male and female literacy rates is also higher for states such as Bihar, Jharkand, Chattisgarh, Rajasthan and Uttar Pradesh. The differences in literacyrate for women also vary across urban and rural areas. The access level of education for women (as measured by the Gross Enrolment Ratio, see Appendix I) in rural areas is almost three times lower than that of urban areas (Census, 2001).

There is also considerable inter-state variation in education access, as can be inferred from the 2001 Census data. While the GER at the aggregate level is about 13%, it is more than the national average in states such as Kerala, Goa, Nagaland and Manipur and substantially lower in states such as Bihar, Orissa, Madhya Pradesh and Uttar Pradesh.

VOCATIONAL AND TECHNICAL EDUCATION

Vocational education is a separate stream of higher education aimed at providing opportunities to students to choose programmes of study towards gainful employment.

The total enrolment in over 8000 institutions spread across the country catering to technical vocational skill building such as the Industrial Training Institutes (ITIs) and the Arts and Crafts schools is of the order of 1.4 million, of which women constitute less than 28% (UNESCO report, 1991). Of the 950 or so ITIs including both government and private, 104 were set up exclusively for women giving training in areas such as receptionists, electronics, book binding and the like. Even considering technical education imparted through polytechnics, 35 of the 450 recognised ones have been exclusively set up for women, providing training in areas such as pharmacy, food technology, textile design, commercial art etc. Although the rate of participation is gradually increasing, women constitute, on an average, only about 10 percent of total enrolment in technical and vocational education at post secondary level, and about 28 percent at secondary and post secondary levels, taken together. For

more detailed education statistics.

BARRIERS TO WOMEN'S EDUCATION

Why do the statistics reflecting women's literacy, their enrolment in primary, secondary and higher education or their dropout rates read so poorly? What do they tell us about women's access to education? What systemic errors have aided in this and what can be done to remedy the situation? This section highlights some of the barriers to women's education, drawing on previous studies where possible.

Inadequate school facilities can sometimes serve as a deterrent for the girl child's participation in formal schooling. A report by the International Programs Centre for the U.S. Department of Commerce (Velkoff, 1998) lists the chief barriers to women's education in India as inadequate sanitary facilities, shortage of female teachers and gender bias in curriculum.

A BBC news report by Kaushik Basu (2004) notes that a study of 188 government-run primary schools found that 59% of the schools had no drinking water and 89% had no toilets. Another report in the Times of India (2005) cites a 2003/2004 data by National Institute of Educational Planning and Administration that reported only 3.5% of primary schools in Bihar and Chhattisgarh had toilets for girls. In Madhya Pradesh, Maharashtra, Andhra Pradesh, Gujarat, Rajasthan and Himachal Pradesh, the rates were 12-16%. Lack of toilets can be particularly detrimental to girl's school attendance, where the only option of attending to nature's call out in the open can pose both a physical as well as a psychological barrier. Some of the barriers to women's education are sociological, rooted in gender stereotyping and gender segregation, and others are driven by economic concerns and constraints. A consequence of gender profiling and stereotyping is that women tend to participate more in programmes that relate to their domestic role.

In institutions of higher learning, women are more inclined to enroll in courses traditionally considered more suitable for them such as arts and education, but less in courses related to science and technology. Likewise enrolment in vocational and technical fields has been male-dominated and providers of nonformal education and training tend to conduct programmes that relate to women's domestic role rather than their productive role. Families are also far less likely to educate girls than boys, and far more likely to pull them out of school, either to help out at home or for other socially induced normative considerations.

Parental reluctance to educate girls is a huge factor inhibiting their access to education. There exist various factors that fuel the choices parents in Indian society make with regard to refusing or limiting the education of the girl child. The way a society views its women determines the roles it delegates to them and the choices made for them or those they are allowed to make. When women are seen primarily as child bearers and rearers, then education is sometimes viewed as an unnecessary and extravagant indulgence. A mindset that views education for girls as unlikely to reap any returns ascribes to the view that investing in the education of the male child is like an investment as the son is likely to be responsible for caring for aging parents, and women with largely a reproductive role in society have little need for education and any gains from it are anyway likely to accrue to the homes they go to after marriage. Economically poorer sections are often not in a position to send their children to school and are likely to invest in the male child than in the female child if they can for the above-mentioned reasons. The middle class too often does not consider education for women an important means for preparing them as individuals in their own right. Amongst the upper middle class, where education of women may not be encumbered by economic constraints, discriminatory stances, such as women's education having lower economic utility or at best being a secondary wage earner, do exist and are pervasive in the attitudes and norms prevalent in society.

In many cases, women themselves are responsible for holding back their participation in education, working on preconceived notions that they will be unable to cope with the pressures of balancing work and home, assuming that mobility in employment can cause strain at the home front, or to confirm to socially induced images of femininity. Studies conducted by the National Committee on the Status of Women in India (1974), covering a sample of 200 undertakings in the private and public sectors, reveal amongst others that women were restricted to a few limited types of occupation because of prevailing social attitudes regarding their aptitude, resistance of employers, denial of training opportunities in higher skills and their ignorance regarding the opportunities open to them.

Women and girls receive far less education than men, due to prevailing social norms and sometimes fears of violence. Pointing to the inhibitions parents feel, especially amongst the poor or backward sections of society, Sonalde Desai, in her book on Gender Inequalities and Demographic Behaviour, argues that 'another disincentive for sending daughters to school is a concern for the protection of their virginity. When schools are located at distance, when teachers

are male, and when girls are expected to study along with boys, parents are often unwilling to expose their daughters to the potential assault on their virginity'.

Added to these biases and concerns is the social reality of the girl child as a vital resource in agriculture and household chores. Census reports and findings across various studies on the employment of women reveal that women workers in agriculture and related activities constitute about 88% (of the total female workforce) in rural areas and about 18% in urban areas (UNESCO report, 1991). In rural households and especially amongst the poor, the girl child is a valuable resource for housework and in the fields, an additional hand that cannot be wasted away through an education with almost invisible gains and far too heavy a price that most rural and poor families cannot afford to pay. Thus, a large proportion of the girls missing from schools are kept at home to tend to the responsibilities of housework and serve as free labour in the farms and fields. It is interesting to observe that although women constitute a major chunk of the workforce in rural areas especially with respect to agriculture, the percentage of women in skilled, technical and professional level in agricultural machinery, production, marketing and extension services is just around 4% according to the UNESCO report. Here is a massive segment of working women badly in need of training through non-formal modes to help them adopt scientific and technological devices and practices to improve their work and productivity; however, their education for the same seems to be hugely lacking. The different stages or levels of education are shown in Figure 1 along with the key attendant issues regarding accomplishment of women's education for each of the levels.

If we consider different stages or avenues for education, then education can be categorised in terms of primary and secondary school education, vocational and finishing school education, arts and sciences and professional-level education. Primary and secondary levels would encompass the basic school level education while finishing school would refer to skills training for Issues of women's access to education are not uniform along the varying levels as the figure indicates. Although getting the girl child to enrol in primary schools seems to be the most problematic, once enrolled girl children are more likely to continue their primary education.

At the secondary level of education, girls tend to drop out more than boys, again posing a challenge to retain the girl child for secondary education. Therefore, the focus primarily is on drawing girl children to enrol in schools at the primary level and ensuring their continuation for secondary education.

Participation of women in vocational training and skills building, particularly in non-stereotyped ones, and in professional-level courses also requires particular attention as the statistics suggest (see Appendix I). Thus, addressing the issue of women's access to education may require a customised approach, with issues at different levels of education varying by region or state. For example, the BIMARU states (Bihar, Madhya Pradesh, Rajasthan, and Uttar Pradesh) may require greater focus on primary and secondary level education for women given their poor literacy levels. Urban pockets may want to focus more on finishing schools with more avenues for employment in catering services or BPOs, and rural areas could benefit with a greater concentration of vocational schools geared towards agriculture-related skills training.

It may also be kept in mind that the impact of interventions for improving access to education may also vary according to the level. For example, attempts to ensure participation of the girl child in formal schooling may have a higher impact at the primary level, since there is a high probability that once enrolled girls will continue with their education. Similarly, impact on society with increased employment in sectors such as nursing and BPOs. Arts and science education pertains to higher degree education in the field of arts and sciences with graduates in commerce, home science, sociology etc. falling in this category. Medical, engineering and other professional level education appears at the other end of the chain.

participation of women in vocational and professional-level education may also be high, since this would mean greater participation in the labour pool and improved economic and psychological fallouts of the same. Thus, considering issues pertaining to women's access to education may require a unique lens focusing on the differing levels, issues and varying degree of impact. A more customised approach to addressing the problems related to women's access to education is required, as will also be discussed in the recommendations put forth later in the paper.

ROLE OF THE STATE

Being the largest machinery for dispensing and disseminating education, the role of the state in providing women access to education is most primal and influential. Over the years, the government's commitment to education articulated through the constitutional Act for Free and Compulsory Education until the age of 14, its National Policy on Education, or its various schemes and initiatives to promote the education of women all have been oriented towards enhancing women's access to education.

The National Policy on Education 1986, revised in 1992, was an important decision in the field of policy on women's education. It recognised for the first time the gender imbalances in educational access and achievement and also the need to redress them through enhancing infrastructure and the empowerment of women for their participation in the education process.

The ***Mahila Samakhya programme*** was launched in 1988 in pursuance of the goals of the New Education Policy for the education and empowerment of women in rural areas, particularly of women from socially and economically marginalised groups. Women from remote, underdeveloped areas or from weaker social groups across more than 21,000 villages fell under the Mahila Samakhya Scheme. Apart from provisions for education the programme also aims to raise awareness by holding meetings and seminars at rural levels.

Another government initiative, the ***Sarva Shiksha Abhiyan (SSA)***, was started in 2001, with the intent to provide education to children between 6 and 14 years by 2010. The programme focuses especially on girls and children with challenged social or financial backgrounds, charged with providing infrastructure and relevant resource material in the form of free textbooks to children in remote areas. The effectiveness of the programme is yet to be measured.

Although these various endeavours of the government have, over time, yielded significant results, especially with respect to increasing literacy levels amongst women, gender disparities continue to persist, more so in rural areas and amongst disadvantaged communities. Many villages continue to not even have a school, fewer than one third of India's primary and middle-school teachers are women and schools have remained inflexible to the labour demands of girls as various reports suggest. The question of improving women's access to education then remains, beyond the structural changes, at a deeper level one of a sociological change rooted in changing mindsets and empowering women, to challenge the assumptions we hold as a society about the role of women in the labour market and the value of educating women. The attempt of the state thus far has been a blanket approach to address the issue of access to education for women.

Its various initiatives such as the ***Sarva Siksha Abhyan*** have largely focused on spearheading education access for all across the country. Although these efforts are commendable, a more customised approach may be required as discussed earlier.

Approaches for addressing the issues would differ based on the particular

requirements of the region. Enhancing literacy levels should take priority in states with lower literacy rates through sustained interventions and programmes designed for the purpose, while in other areas where basic education issues may be addressed, for example states such as Kerala, employable skills and professional-level education efforts may warrant greater attention to address the issue of migration. When imbalances in education for women have been pervasive and prevalent for long, as the continuing 20% differential in literacy rates for men and women suggests, the state may have to intervene in more drastic ways, as will be discussed in the next section along with other recommendations.

THE WAY FORWARD - SOME RECOMMENDATIONS

Although much work has been done to improve the state of education in India, we are still a long way off from attaining standards comparable even to other developing nations. India is ranked 109 amongst 128 countries in its education index for women..

Although there is much work to be done to enhance education in India, particular attention is warranted to women's access to education. An attempt has to be made to remove the social, psychological and structural barriers, for participation of majority of women in education. The state must play a prominent role in preventing gender stereotyping and segregation in education, and providing stipends, scholarships, loans, transport facilities, guidance and counseling services to women and their families, especially belonging to the lower and marginalised sections of society, and with required regulation and intervention, when necessary, to correct the imbalances in education access.

Below are some recommendations and suggestions for improving access to education for women of the country. The recommendations can be categorised as those related to (a) grassroots level improvements related to mindset changes, (b) strategic initiatives related to innovation and incentivisation and (c) enabling policy level framework that deals with regulation and reservation.

GRASS ROOT LEVEL IMPROVEMENTS/INTERVENTIONS

One of the foremost requirements for ensuring increased participation of women in education is effecting a mindset change in society. This class of recommendation, the building block or core of enabling any kind of change, is discussed first.

Sensitisation and awareness building for women's education: Although the

government and various voluntary organisations engage in various attempts to sensitise the local population to the need for women's education, much needs to be done in this area .Unless parents of the girl child see value and merit in sending the girl child to school, they will resist doing so and instead prefer to use her help in household chores or agricultural activities. Institutes of higher education such as the IIMs and other management schools can lead the way by designing programmes using marketing and selling skills to facilitate dialogue and build greater awareness about the benefits of educating the girl child. Rural immersion programmes for management students, especially in regions where the participation rate in schools is particularly low, will pave the way for better understanding and awareness of the differing needs and constraints of the intended beneficiaries. Parental reluctance can be targeted and stymied through such interaction, with a discussion of the various options and avenues that education can open up building awareness, and joint exploration facilitating alternate solutions keeping in mind the needs of the target population. Institutes of higher learning such as the IIMs, IITs, NITs, TISS, JNU etc. can lead the way by partnering with the state governments in the region to spearhead such an initiative.

STRATEGIC INITIATIVES

Beyond building awareness and sensitising people towards the need for educating women, innovative approaches to make education available and accessible to women, and incentives to make the prospect attractive for both women and their families, is required. Some recommendations in this direction are offered below.

Target segment and approaches: We need to move towards a segment-based and sector-wise approach to tackle the problem of poor access to education for women.

In rural areas, where enrolment of women in education is rather low, mechanisms need to evolve such that the schools are more accessible for the girl child as well as the psychological and sociological barriers to sending the girl child to school are overcome.

An approach that ensures the schools go to the girls instead of the girl child having to struggle to reach the school is one possible direction. For example, the concept of mobile schools in far-flung rural areas where the teacher and the classroom can be made mobile is likely to reach far more girl children and also effect parental sensitisation for education of the girl child in the process. Similarly, other mediums can be explored such as video and tele

schooling, imparting education through e-choupals and panchayats, and tie-ups with mobile health clinics to get the school to reach the girl child rather than have them labour to reach the schools.

A segmented approach will have to consider how best to address the particular requirements and needs of the region, depending on the potential for tie-ups and alternative media that can be used to deliver education.

Build linkages between government schemes such as NREGS and education: A recurring concern is that of poor infrastructure in schools, such as provision for toilets for women, that specifically addresses the needs of the girl child. While every school needs to have adequate facilities such as drinking water and toilets for both men and women, the fact that these are currently not in place indicates perhaps the lack of will or the fund and resource crunch at the local level. A way out might be to tie up with the NREGS (National Rural Employment Guarantee Scheme) that focuses on developmental projects while ensuring minimum 100 days of employment with education-related projects.

State governments can introduce projects under the NREGS that focus on providing adequate infrastructure in schools, with particular attention to the specific and differing needs of the girl child. This will jointly address the NREGS objectives as well as assure the female population of adequate school facilities.

Incentivisation for education of the girl child: Since girls are more likely than boys to stay on in schools once they enroll, the primary problem is that of attracting the girl child to the school in the first place.

To facilitate this process, beyond communicating the usefulness of education to women, education of the girl child must become an attractive proposition for the parents of the girl child, who might otherwise prioritise sending the male child only to school. Some form of monetary incentive that state governments or panchayats can introduce at their level would go a long way in ensuring equal participation of both boys and girls in formal education.

While mid-day meal schemes are one such incentivisation, it might help if incentive plans that particularly target the female child are introduced. For example, if a family has its girl children enrolled in schools, they can be made eligible for further discounts through the Public Distribution System (PDS) or entitled to food stamps, or even direct subsidies can be offered.

Other forms of incentives that directly address the concerns of the parents, such as discounts in agricultural supplies for parents of the girl child or loaning out the school premises for marriage of girls who have completed 16 years of

schooling, can all be made available. While these incentives may not cost the government much in aggregate, they are likely to fuel stronger participation especially in the short term where instrumental and monetary concerns override the need to educate women.

ENABLING POLICY FRAMEWORK

Efforts to improve access to education for women may also be addressed through effective regulation and government intervention beyond piecemeal efforts by the citizen body for any long-lasting impact. This class of recommendation is shown as the outer ring in the figure, intended as the overarching umbrella in efforts to revitalise education access for women.

Reservation for women in education: The role of legislation and government intervention is one of the most powerful and effective tools to remedy systemic errors and imbalances prevalent in any society, which continue to be sustained over a period of time. A form of affirmative action, akin to other affirmative actions that provide for reservation to SC/ST and OBC in institutes of higher education, reservation for women in education can potentially reduce the disparity in education access and enrolment, and therefore opportunities made available to women. Although government intervention may not always be desirable, there is no denying that the reservation policy for 'backward castes' has benefited a section of the population and has been instrumental in correcting existing social imbalances.

Extending the same logic, since women have continued to be inadequately represented across the education value chain, necessitating a certain percentage of women participation across various levels through required legislation and reservation will not only ensure fair representation but also encourage schools and institutes to actively devise means and programmes to attract women to their portals. Additional subsidies and incentives can further augment such structural mechanisms to ensure gender parity in education.

The road ahead for education of women is long and winding. Much needs to be accomplished, first to attract the girl child to enroll in schools and then to retain, train and educate them. Although structural issues may be easier to address with the commitment and will of the government and local bodies, the psychological and sociological barriers require long-term sustained efforts from all. Improving attitudes towards the girl child, challenging prevalent norms of society and countering gender stereotyping and segregation will require more

than government engagement; it will take the concerted effort of civil society, NGOs, institutes of higher learning, other stakeholders in education and, above all, the initiative and will of women themselves.

SUGGESTIONS

1. Awareness of daughter's education is essential. It is said that "educated mothers educate family which results in educated population of a nation which builds strong nation"
2. In women the confidence that change is possible, if women work collectively.
3. Encourage and ensure socio-economic participation of women in local and international forums.
4. Encourage participation of women in income generating activities. Proper implementation of schemes provided by the government should be done by respective agencies
5. Change the approach towards women based on sex discrimination.
6. To induce the feeling of self-dependence amongst women.
7. Child bearing at young ages should be prevented by preventing early marriages.
8. Removal of gender inequality.
9. Women should actively participate in social and political moves. Fifty % seats should be reserved for women in all the governments
10. Spread the message that education of women is a pre-condition for fighting against their oppression
11. Awareness needs to be generated regarding the necessity of educating girls so as to prepare them to contribute effectively to the socio-economic development of the nation
12. Eliminating all forms of discrimination in employment especially to eliminate wage differentials between men and women
13. In order to change the attitudes towards female education and to raise the social consciousness of the country, a conscious strategic change is required in national media and communication effort
14. Education is capable of increasing women's sense of analysing which will support wider reforms in support of gender equality

15. Introduce satellite schools for remote hamlets
16. Be cautious and patience in the knowledge journey: it is from knowledge creation/discovery KD) to knowledge transfer (KT)
17. Encourage ICT tools and the use of internet, for the study and research by women.
18. Increasing real representation of women in political bodies and governance institutions in order to move from being objects of legislation to initiators of change

CONCLUSION

The evils of poverty, unemployment and inequality cannot be eradicated by man alone. Equal and active participation of women is obligatory. Unless women are educated they will not be able to understand about their rights and their importance. Empowerment of women aims at striving towards acquiring higher literacy level and education, better health care for women and their children, equal ownership of productive resources, increased participation in economic and commercial sectors, awareness of their rights, improved standard of living and to achieve self-reliance, self-confidence and self-respect among women. Recently the NDA Government has launched ***Beti Bachao, Beti Padhao*** scheme which aims at making girls independent both socially as well as financially and which will help in generating awareness and improving the efficiency of delivery of welfare services meant for women. Such schemes should be implemented nationwide to bring the desired changes. What should never be forgotten is that women like men need to be proactive in the process lifelong learning. That is true empowerment. From "women for development" the time has come to shift focus to "women in development", with the cooperation of men through group engagement and management. That will indeed be a 'quality' change for equality. While being attracted by modernization and globalization we must be confident to say no to marginalization.

One may ask why education of women is even important, or why the state ought to focus on it, beyond improving the numbers and statistics to reflect figures at par with the rest of the developed world. Is it a mere image building exercise in an attempt to stay on top of the numbers? Although that may be equally important, there are more to accrue for the individual, family unit and ultimately the nation, with investment in education of its women.

Neglecting the education of women, who constitute nearly half of the population, does not auger well for the development of any nation. Beyond

the obvious imbalance in the labour pool, education for women is an important determinant of their enhanced self-esteem and self-confidence, helping to build a positive image, developing their ability to think critically, fostering better decision making and helping them make more informed choices about health, employment and even the education of their children. Education will not only ensure more participation in developmental processes but also enhance awareness of rights and entitlements in society, so that women can enhance their participation in society on an equal footing in all areas. The economic independence that education brings is an added incentive. Economic independence and awareness will help curtail the vicious cycle of reinforcing negative stereotypes and aid women in chartering paths as individuals in their own right, contributing to society, polity and the economy.

REFERENCES

- Government Report (1974). Report of the National Committee on the Status of Women in India towards Equality, Ministry of Education and Social Welfare.
- Government Report (2008). Educational Statistics at a Glance 2005-2006, Ministry of Human Resource Development. Government official education website www.education.nic.in.
- Census Report (2001). Available at www.censusindia.gov.in
- UNESCO Report (1991). Access of Women and Girls to Technical Vocational Education in India. Studies in Technical and Vocational Education, 36.
- Basu, K. (2004). Combating India's Truant Teachers. BBC news report. http://news.bbc.co.uk/2/hi/south_asia/4051353.stm.
- Singh, S. (2005). Education Cess: Are Government Schools any better now. Article in the Times of India
- http://timesofindia.indiatimes.com/articleshow/1070939.cms.
- Velkoff, V. A. (1998). Women of the World: Women's Education in India. International Programs Centre report for the U.S. Department of Commerce. http://www.census.gov/ipc/prod/wid-9801.pdf. Retrieved 30.03.2010.
- Desai, S. (1994). Gender Inequalities and demographic behaviour. Population Council, New York.
- Thorat, S. (2006). UGC: Chairman's Nehru Memorial Lecture, University of Mumbai, Nov.24, 2006 Available at (http://www.ugc.ac.in/more/chairman_nehru_lecture.pdf)

- IMJ 112 Nisha Nair
- Government Report (2009). India 2009: A Reference Annual (53rd edition). Publications Division, Ministry of Information and Broadcasting, Government of India.
- IMF-World Bank Report (2008). Global Monitoring Report. Available for download at http://www.worldbank.org/gmr2008
- UNESCO Report (2007). Global Education Digest. UNESCO Institute for Statistics, Montreal. http://www.uis.unesco.org/template/pdf/ged/2007/EN_web2.pdf
- UNESCO Report (2010). EFA Global Monitoring Report 2010, Reaching the Marginalized. Oxford University Press. Available at http://unesdoc.unesco.org/images/0018/001866/186606E.pdf
- Alva, A. and Hans V. B. (2013). "Higher Education in India – Opportunities, Changes and Challenges". Available at http://ssrn.com/abstract=2203706
- Balve S. (2015). "Women Entrepreneurship towards women Empowerment in India: plan Initiatives" *Southern Economist 54*(3): 11-16.
- GoI (2001). National Population Policy, 2000.
- GoI (2012a). *Census of India 2011*.
- GoI (2012b). *Report of the Working Group on Empowerment of Women for the XI Plan*, Ministry of Women and Child Development.
- Hans, V.B. (2008). Marginalisiation in the Midst of Modernisation – Women's Health Empowerment. In Rathakrishnan, L. (Ed.), *Empowerment of Women through*
- *Entrepreneurship* (pp. 61-75), New Delhi: Gyan Publishing House.
- Hans, V. B. (2012). "Dalits in India: From Marginalisation to Inclusion". Available at
- http://papers.ssrn.com/sol3/papers.cfm?abstract_id=2323268
- Hans, V. B. (2012). "Women – Issues in Development and Empowerment". Available at http://ssrn.com/abstract=2080105
- Hans V. B. (2013). "Higher Education in India – Assailing Challenges; Assuring Quality". Available at http://papers.ssrn.com/sol3/papers.cfm?abstract_id=2306842
- Hans, V. B. (2015). Women, Health and Empowerment. In Mukund, M. (Ed.), Women & Health (pp. 191-209), Mangalore: Mangala Publications.
- Hans, V. B. (n.d.). "Creativity and Innovation in Research: Scope for Multidisciplinary Research", *International Journal for Educational Research and Information Science,* forthcoming.
- Hans, V. B. (n.d.). "Social Networking and Knowledge-Sharing with Reference to Higher Education in India". Working Paper.

- Pathak S; and Gupta, A. (2013). "Status of Women in India with Particular Reference to Gap in Male Female Literacy Rate in India", *International Journal of Environmental Engineering and Management*, *4*(6): 549-552.
- Sen, A. (1999). "Women's Agency and Social Change" *Development as Freedom.* Oxford University Press. New York.
- Shivalingappa P: and Nagaraj, G. H. (2011) "Women Empowerment and Gender Equality –A Study" *Southern Economist 50*(10): 15-17.
- Shoba K. (2008) "Problems of Self Employed Women; an Analysis" *Southern Economist* 47(6): 24-26.
- Suguna, M. (2011) "Education and Women Empowerment in India" *International Journal of Multidisciplinary Research*, *1*(8): 219-317
- UNDP (1994). *Human Development Report, 1993*.
- UNDP (2014). *Human Development Report, 2013*.

12.
A Critique On Feminist Writing

Dr. Mamta Garg
Professor in English
Govt. Narmada P.G. College
Hoshangabad (M.P.)

It is an undenying fact that emotions and feelings require an outlet. For example if water of the rivers does not get an outlet, it can create flood like situation and can lead to great devastation. In the same way, in the absence of the expression of feelings, a person can become a victim of psychological disorder which can ultimately be disastrous. So in order to balance oneself, it is of paramount importance that one should express one's ideas before others.

If we talk about women in this context, it won't be an exaggeration to say that women have always been subjugated and have been deprived of liberty to express themselves. They have always been dragged at the secondary position and have been undervalued and underrated. Their worth has not been recognized inspite of being the male's counterparts. They have always borne the brunts of their destiny and have been at the mercy of males. Willingly or unwillingly, they have always been forced to consider their plight their FATE; because of the TAG of being WOMEN.

At such a juncture, it became necessary for women to turn to writing to project their voices through writing. Reform took place in the 19th century. The suppressed voice of women emerged through their writing. For centuries women have been subjected to male criticism and have faced degrading and inestimable remarks. They have been considered (suitable) for holding "needle" than a "pen". Even Nathaniel Hawthorne in his work **Mrs. Hutchinson** (1830) had stated, "The hastiest glace may show, how much of the texture and body of cisatlantic literature is the work of those slender fingers, from which only a light and fanciful embroidery has heretofore been required."

It indicates there was little or no change in the status of women since the 17th century. Several critics have delineated the negative criticism that women writers have received from male authors. Early feminist Virginia Woolf in one part of **A Room of One's Own** writes about what it may have been like if Shakespeare had a sister, "She was as adventurous, as imaginative, as agog to see the world as he was. But she was not sent to school. She had no chance of learning Grammar and logic, let alone of reading Horace and Virgil. She picked up a book now and then, one of her brother's perhaps and read a few pages. But then her parents came and told her to mend the stockings or mind the stew and not moon about with books and papers….."

So many societal obstacles would have hampered her from expressing her talent no matter whatever that was. For a woman to write either fiction or any other genre of literature, she must have a room of her own so that what she could offer to other women and to the world has the room to flourish and expand. Virginia Woolf gives her opinion, "She must have that liberty to travel and to idle, to contemplate the future and the past of the world, to dream over books and loiter at street corners and let the line of thought dip deep into the stream." (Woolf, 119). She had a profound influence over later- twentieth century writers, Woolf, never segregated herself from her writing but was every "she" and "her" in her work. Woolf says that the "Freedom of the mind is the first requirement for the women to write, for 'taboos' and inhibitions do not allow the pursuit of experience for woman. Freedom means to breathe freely, to meet people, to have an openness of experience. But women have been kept in kitchens and parlors, in purvey and luxury but deprived freedom".

It is a great paradox, on one hand women have been placed outside culture, outside history, outside time, on the other hand they have been treated as the custodians of culture, preserving it and continuing it through procreation, tradition, rituals and conservatism.

The feminists have attempted to restore the tarnished image of the women and glorify it. The revolutionary spirit with which the women writers have striven to write, to project the pent up feelings of women through their writings reflects the concern of women for women. But uncertainty hovers on this issue also. Inspite of the acknowledgement and respect received by the female writers in the field of writing since the 19th century, they still experience hardship from male writers, readers and critics.

Women writers have to face the Acid Test to prove their ability and proficiency in the literary field. They have to accept the challenges to evince

the relevance of their own works. The struggle for women writers prevails throughout the world and is not the problem of the woman of any particular place or country. The literary art still remains confined to the world of males.

Fanny Fern was an American novelist, a renowned highly paid author of the 19th century who consistently wrote a newspaper column in "The New York Ledger". Even she had to bear the unanticipated insult at the hands of her brother N.S. Willis who considered the writing of her sister to be "Vulgar" and suggested her to continue with her needle work instead, similar to what Ann Bradstreet had discussed in the 17th century (Lauter 2462). This statement from the brother of Fern categorically reflects the male dominance in the literary field not only outside, rather within the boundary of the family itself. Out of anger, Fern exclaims, "I never knew an artist to Nob his pen with a knife as sharp as his temper, and write a scathing criticism on a book, because the authoress had declined contributing to his paper" (Lauter 2467). In a highly satirical way, she closes **Critics** "a man never stoops to meanness. There never was criticism yet, born of envy, or malice, or repulsed lose, or disappointed ambition. NO-NO". (Lauter 2467). In order to address the serious social issues, using humor was a trademark in Fern's writings.

Black Women writer Harriet Jacobs also throws light on the same issue of gender inequality in her work **Incidents of the life of a Slave Girl** (1861). In this work she has depicted the relationship between a black female slave and white slave owners, how she undergoes through the sexual exploitation at the hands of her owners and her own relatives. After establishing the liberty, when Jacobs undertook to write her own experience and share it with the public, at that point also, she struggled a lot in the literary field. She bore the adverse remarks not only from men and the white population, Glenna Matthews states in this context: "In her desire to go public with the worst facts of slavery, she was exposing herself to possible censure from the very group of women least likely to have shared the same experience". In order to reveal their crucial experiences, women writer had to assume other name, because they could describe the brutal realities only through the garb of the new persona. That's why Harriet Jacobs also took up of a persona, Linda Bent, which helped her to achieve her target.

Most of the women writers Fanny Fern, Jozef Korzeniowski (Joseph Conrad) and Eric Arthir Blair (George Orwell) used pseudonyms to conceal their true identities. Writing anonymously became a compulsion for the female writers, as it helped them to recount the harsh experiences without becoming

the victims of the censure of the white male population.

Mary Ann Evans (George Eliot) and Loisa May Alcott (A.M. Barnard) also adopted male pseudonyms in order to gain recognition in the literary field. Sanders says, "In order to distance herself from the female romance novelists of the time and to ensure that her works taken seriously". Evans wrote under the pseudonym George Eliot. She contributed articles anonymously for Atlantic Monthly to be accessible more and more to the audience and also to escape the harsh and cruel male detractors.

The use of male pseudonym is too common even in the contemporary time also. Sheldon, writer of **Star Songs of an Old Primate** wrote under the name James Trip tree to get her work published in the male dominated literary world. She admitted: "A male name seemed like good camouflage. I had the feeling that a man would slip by less observed. I have had too many experiences in my life of being the first woman in some damned occupation". (Phillips 47)

Even the writer of **Harry Potter** series, Joanne Rowling also felt the constraint to write under the changed name J.K Rowling and in her case, she was forced to do so by her publishers who convinced her that she would not get publicity for her work in the market if she wrote with her real womanly name. Elizabeth Jane Howard, a writer of the **Cazalet** and winner of John Llewellyn Rhys prize, being a writer herself has touched and shown concern for the problems of the women writers. She believes that male critics "scratch each other's backs" but they don't let women writers gain recognition and acknowledgement for the works they have produced. At higher levels also, the journey of the male writers is easier than that of the female writers, as it is governed by the male dominance.

As in the contemporary time, it is said women writers are flourishing in the literary field, but still they have to convince the public about the credibility of their work. It is an undeniable fact that women writers are still forced to stand under the shadow of their male counterparts. In spite of bearing the disparity in the literary world, one more horrifying fact which emerges before us is the level of "women's fiction" within fiction itself. This term refers to the fiction written by women only centering on the womanly issues. This is how line is created between the male's fiction and the women's fiction. On Wikipedia, it is noticed by online blogger Maria Poppova that now-a-days even the corpus of "American novelists" is sub-categorized into "American women novelists." Though the intention of the editors behind it may not be harmful, rather it may be to make the matters less complicated where the women writers are placed

in a separate group. But still if we cast a glance on the nineteenth century, twentieth or twenty first century women writers, their problems are same and share the same position in the male dominated literary world.

A Greek novelist and critic, Emmanuel Roidis, once observed that women should write "about needle work and cooking" and when they write about the socio-political issues, they appear to be the imitators of the males. Due to such criticism, Greek women writers were compelled to doubt their own writing caliber, as they considered "calling themselves women writers would jeopardize them".

In the same way modern Chinese writers, where the writings of the Chinese women writers also face the same insult and bear the degraded remarks at the hands of the males. Chinese women writings are considered to be merely "the ideas rather than a reality." (Dooling) Though since the nineteenth century, the deplorable condition of women writers has improved but not to the satisfactory extent where we can perceive the upgraded status of women writers.

At such crucial times when women's contribution in literary field was not acknowledged, women writers had to grow out of subordinate structures. They had to grow and abandon their passivity. They were bound to rebel against the prevalent patriarchal system and to redefine the womanly self. Women's writings at such time supported them and assisted them to discover their own self. Apparently the tyrannical regime of the patriarchal system led to the emergence of the Feminist movement in literature. This movement made women strong. It gave power to women folk. As Ann Snitow says in this context, "Woman is my slave name…. Feminism will give me freedom to seek some other identity altogether". According to Elaine Showalter:

> It was through the Women's liberation movement that we began to draw connections between our own work and our own lives, to note the disparities between the identifications and ambitions that had attracted us, along with thousands of other women, to the study and teaching of literature, and the limited and secondary roles granted to fictional heroines, women writers or female scholars. Feminism spoke to our lives and our literary experience with the fierce urgency of a revelation or a great awakening.

The role of the Feminist, and the feminist writer took a more active turn since Virginia Woolf and other literary women writer prior to the 1960s. The personal narratives of the women writers got connected with women everywhere. In her work **Toward a Female Liberation Movement,** Beverly pointed out, "the first step in female liberation is to accept our plight as a common plight, to see other women as reflections of ourselves".

Women readers started to find an affinity between their life situations and with those of women writers. Heilburn reflects in this context: "Writings by women will offer unment friends provided the subjects of the writings have encountered struggles or dilemmas or crises of choice that the women readers can learn from as one would from a friend's. Heilburn further says that woman would like to read as woman about woman who has braved the terrors and the hopes women share at least to some degree…. The secret of unment friends is that they have called upon the same strengths to escape or endure the same kinds of situations."

It can categorically be said that through the women's writings, women readers came to understand their own selves, through their own feelings; they could gain insights that could encourage them to strengthen themselves and also could motivate them to demonstrate uncommon courage which was the necessity of the moment. Women writers in this direction took great risks. Simon de Beauvoir speaks, "it is not in giving life but in risking life that man is raised above the animal that is why superiority has been accorded in humanity not to the sex that brings forth life but that which kills." It is on the basis of the writings of Brave women writers, the term transgression was attached to their narratives. Alicia Ostriker states: "writers necessarily articulate gendered experience, just as they necessarily articulate the spirit of nationality, an age a language." It was very difficult for women writers to abandon their gender entirely and to split off their sexual identity from their literary energy. Rising above the hackneyed and old established values and choking habits, women writers raised their voices and realized that "the literary voice provides opportunities to shatter women's frequent silences."

Virginia Woolf in her essay "Women and fiction" says "women were beginning to explore their on sex, to write of women as women, of course, until very lately, women in literature were the creation of men" (82). With the emergence of the liberal ideas, women now explored themselves in different spheres. They became members of different societies in the academic field, the literary field. They participated in administrative fields and became bread

earners and occupied high positions in every sphere. One of the most important areas which could be easily accessible to women was of course writing because writing could become a medium for women to express their experiences. Virginia Woolf observes:

> writing was a reputable and harmless occupation. The family peace was not broken by the scratching of a pen….. The cheapness of writing paper is, of course, the reason why women have succeeded as writers before they have succeeded in the others professions. (The Death of the North 149).

So realizing the importance and ease of writing women started putting themselves in the texts, into the world by their own movement towards a new era of womanly emancipation. New women writers dug the inner psyche of themselves and brought to light the personal consciousness. The journey of the women writers assumed an aesthetic proportion leaving behind men in this field. The prolonged suppression of women made them now free and fearless. Without any taboo, with subjective introspective and spiritual approach, they turned to art. Helen Cixous says:

> Women must write herself, must write about women and bring women to writing form which they have been driven away as violently as from their bodies for the same reasons, by the same law, with the same fatal goal. Women must put herself into the text-as into the world and into history by her movement.

Feminists unearthed womanly writing from its stage of anonymity to recognition at the national and international level. The most renowned names in this field are the pioneers Elaine Showalter, Sandra Gilbert, Susan Guber, Patricia Meyer Spacks and Ellen Moers. Elaine Showalter in her work "**A Literature of Their Own** has categorized women's literature, how it evolved from the point of Victorian period to the modern period. Under the three stages of this movement- first period is the feminine, which marks the beginning with the use of the male pseudonym in the 1840's until 1880 with George Eliot's death, second is the feminist, from 1880 till the winning of the vote in 1920 and the third stage is the female, from 1920 till the present day, apart from the inclusion of a new stage of self awareness about 1960".

When Showalter discusses the prominent features of these cultures, she has discussed about how the other subcultures like Black, Jewish, American developed out of the three phases. But whatever may be the time periods, female unanimity always existed due to "a shared and increasingly secretive and ritualized physical experience……the entire female sexual life cycle". Female writers always have written keeping in mind the concept of commonality of the feminine experiences. Hence we find feminine awareness in their writings and women's experiences lead to the implication of the "Unities of Culture".

The feminine phase comprises of women writers such as the Brontes, Elizabeth Gaskell, Elizabeth Barrett Browning, Harriet Martineau, George Eliot, Florence Nightingale and the later generation women writers such as Charlotte Yonge, Dinah Mullock Craik, Margret Oliphant and Elizabeth Lynn Linton. The writings of these women writers reflect the hardships they had to face in the public sphere and the male dominated literary field. Though we find the exuberance of the women writers writing novels in the Victorian period, still the women writers were "metaphorically paralyzed". They didn't have liberty to express their experiences as women freely, rather they were bound to keep themselves confined within the Victorian traditions and had to adhere to the Victorian bourgeois propriety.

In the second feminist phase, women writers wrote in different perspectives, commenting and protesting against the injustice inflicted on the poor, whether they were slaves, prostitutes, laboring women. By contributing in the social field, by rendering such type of social work where they tried to depict the atrocities of women, their economic oppression, the customs pertaining to marriages, the women writers like Marry Braddon, Rhoda Broughton and Florence Marryat tried to be influential, but they also weren't free to express themselves. Rather these writers also had to follow the feminine conventions that demanded the erring heroine's destruction. Other women writers such as Sarah Grand, George Egerton, Mona Caird, Elizabeth Robins and Olive Schreiner made "fiction the vehicle for a dramatization of wronged women hood……demand(ing) changes in the social and political systems that would grant women male privileges and require chastity and fidelity from men". But Showalter found these women lacking artistic talent. But at the same time their writings opened a new vista for the succeeding women writers. The questions related with the female identity, feminist theory and the female aesthetics emerged before the women writers. These grave issues preoccupied the sensibilities of them and led to their movement towards "Self discovery".

The focus of the third period was the hallmark "self discovery" or 'self definition'. The women writers like Dorothy Richardson, Katherine Mansfield and Virginia Woolf applied the cultural analysis of the feminists (before them) towards, sentences and structures of language in the novel. But their works were criticized by Showalter and were considered to be a room of one's own.

Drastic change came in the 1960s. Writers such as Iris Murdoch, Muriel Spark, Doris Lessing, Margret Drabble, A.S.Byatt and Beryl Bainbridge expressed women's experiences. Women writings reached at peak at this time. The historical survey of different phases of Feministic Movements help us to understand the complex inter relationship between women writers and their response to societal changes. Elaine has explained and clarified that the three phases are not the rigid categories, rather they may overlap each other "there may be Feminist elements in feminine writers as well as the other way round and one may even find all three phases, in the total career of a single writer".

In order to comprehend women's literary works, comprehension of 'feminine', 'feminist' and 'female' is badly needed. Toni Morison differentiates "Initially, I will suggest that we distinguish between 'feminism' as political position, 'femaleness' as a matter of biology and 'feminist' as a set of culturally defined characteristics". Being a woman doesn't ensure a feminist approach. Twentieth century women writers have endeavored to unravel the complexity related with the subject and have reexamined it leading to the emergence of possible meanings.

Kate Millet's **Sexual Politics** played an important role in this direction. In stereo- typical ways, women were represented in earlier writings. They were depicted generally in sexually determined roles like good mothers, too polite and submissive wives, seductresses, betrayers and motivation for male artists. Feminist critics realized that such representation of women was far away from the reality and they decided to depict the real experience of women in their writings.

Another reason which forced women writers towards writing was the prejudiced approach of males towards women. Mary Ellmann puts forth her views; the custom in western culture was "to comprehend all phenomena, however, shifting, in terms of original and simple sexual differences; and classify almost all experience by means of sexual analogy". Male academics and reviewers made the "phallic criticism" of women. Mary Ellmann observes: "With a kind of inverted fidelity, the analysis of women's books by men will

arrive punctually at the point of preoccupation, which is the fact of feminist. Books by women are treated as though they themselves were women, and criticism embarks, at its happiest, upon an intellectual measuring of busts and hips".

In later years women writers were undervalued, discredited and were forgotten: But later in 1970's Elaine Showalter provided to women's writing such an attention which was never received earlier. She developed a theory of women's writing. Her inclination was completely different. She held the opinion, "If we study stereotypes of women, the sexism of male critics and the limited roles women play in literary history, we are not learning what woman have felt and experienced, but only what men have thought women should be".

She herself was in great favor of the new world of "feminist collection", which could lead to the recovery of a tradition of women's writing. Ellen Moer's **Literary Women** is also a significant contribution which delineates the reasons held responsible, which prompted women to write of themselves, where they felt their place was, and how it may be changed with the giving and receiving of other women's contributions.

Main contribution of women's literature to other women is the endless list autobiographies, memoirs and diaries. Through their writings, women writers had endeavoured to inculcate in readers "self- help" which would bring self-awareness amongst the readers. As reading of other women's lives help in training "self- confidence and creative powers" which assists them to explore themselves and the society as well. These writings proved to be milestones for the readers leading microcosm to macrocosm. Kate Millets **Flying** (1974) and Ann Oakley's **Taking It like a Woman** (1984) share "a foregrounding of a relationship between a female author and a female reader" (Felski 1988). The connection of the author and the reader is too pertinent as it refers to "we" representing the unification of the two.

When a woman shares her story with other woman, it assumes powerful proportion as it reflects the power a woman has. The motive behind telling one's story is none other than to know that it is being told to a family of women. Kennedy Fraser has written about how reading the works of other women writer's helped her to understand her situation:

> I was unhappy, and ashamed of it. I was baffled by my life. For several years in my early thirties, I would sit in my armchair reading books about these other lives. Sometimes when I came to the end, I would sit down

and

read the book through from the beginning again. I remember an incredible
intensity about all this, and also a kind of furtiveness as if I were afraid
that something might look through the window and find me out. Even now,
I feel that I should pretend that I was reading only these women's fiction
or

their poetry- their lives as they chose to present them, alchemized as art.
But that would be a lie. It was the private essays I really liked- the journals
and letters and autobiographies and biographies whenever they seemed
to be telling the truth. I felt very lonely then, self- absorbed, shut off. I
needed

this entire murmured chorus, this continuum of true life stories, to pull
me through. They were like mothers and sisters to me, these literary
women, many of them already dead; more than my own family, they
seemed to stretch out a hand.

Language and writing have been viewed by women as crucial means of altering an already existing male dominance and establishing the communication with the women readers through intimate writing style as well as the subject of writing. Apparently, the implication is meant for the sympathetic females who will understand and share the position of the author. Audre Lorde writes, "We share a commitment to language and to the power of language, and to the reclaiming of that language which has been made to work against us"- "we" referring to the community of women to which the text is addressed.

As women's writing continued to flourish throughout the world, women's voices show the note of resentment against the oppressive forces. Women throughout the world in late eighties to early first decade of twenty first century celebrated and asserted women-hood and feminine experience. Feminist issues transcend all limits of nationality, creed, race etc. Some of the most influential works which helped the people to understand the plight of women are written by African American women, who have exemplified the struggle of the Black Women Writers who "have suffered truly more so in this society from living the phenomenon of being black and female in a country that is both racist and sexist". Alice Walker, Toni Morrison, Zora Neale Hurston, Audre Lorde are some of the most prominent writers who have depicted the torturing experiences

of women.

All feminists have written one huge story with different perspectives. Alice Walker, for example has strongly condemned the painful social system that she fought herself as an activist. The main preoccupation of Walker in her poetry, novel, short stories, essays and reviews has been the Black Women and their problems. The excruciating experiences of the Black Women, at the hands of the whites and even blacks are hair- splitting. Women were tortured in that society to a greater extent without raising their voice against the cruelties inflicted on them.

Audre Lorde, another woman has dealt with multiple forms of oppressions including homosexuality. She believed that she could not be "simply a black person and not be a woman too," nor could she be "a woman without being a lesbian". The poem "Who Said It Was Simple" describes the complex struggle of the writer:

But I, who am bound by
my mirror
as well as my bed
see cause in color
as well as sex.
and sit here wondering
which me will survive
all these liberations.(Schneir 137)

Such types of confessional poems exemplify the problems and contradictions of the females.

As creating writing has become a tactic for the survival of women throughout the world. Indian women writers have also proved through their writings that the "hand that rocks the cradle can rule the world". Twentieth century is replete with women writers in India from all the regional languages; Tamil, Telugu, Malayalam, Kannada, Urdu, Bengali, Oriya, Gujarati, Punjabi and Hindi, who are fiercely feminist and have "captured the soul of women". They have portrayed the psychological problems faced by women and have written on various themes like alienation, loneliness, ennui and existential predicament, which has helped the women to gain strength and insight. It has brought for Indian women a new age of brightness. Promilla Kapur, a sociologist, while analyzing this change states, "With a change in woman's

personal status and social status has come a change in her way of thinking and feelings and the past half century has witnessed great changes in attitudes towards sex, love and marriage".

Surveying the literary scenario one would get a glimpse of the change or rather up gradation of women's role as a writer of free will. Kamla Das is one such Indian woman writer who was unconcerned about what the others thought of her. She gave space to herself and in a very easy bold manner pictured her craving for love, freedom and sex. Her autobiography My Story created controversy and shocked the people with its candid accounts of her encounters with men. Very few writers have the courage to confess about such matters. And if they have, they are condemned and bear the censure of the people.

Whatever may be, Indian women writers have projected in their novels and poetry that women are not mere stereotype, are not puppets that can move in any direction according to the will of the holders in the patriarchal society. They are, rather, now masters of their own will who can show note of defiance in their voice when the question of their identity is concerned. Today, education has brought awareness in them about their rights and their worth. These lines reflect the present status of women in India:

Woman has proved her mettle in all walks of life. The efforts of many

stalwarts have spudded a beautiful world to live in. the world today

is full of women bringing laurels in every area. Women's rights and the

birth of feminism changed the way society looked at women……..women

have started to have a more individualistic view on life, they realized that they

donot have to depend on a man to survive. (Meikandadevan 149-153).

Despite their marginalized existence and almost complete obscurity, women in India have written their heart and psyche in their writings where on one hand poet like Sarojini Naidu charmed and ignited fire in the reader, on the other hand women writers like Kamla Markandaya, Anita Desai, Shashi Dheshpande, Mahashweta Devi, Nayanatara Sahgel, Ruth Jabawala, Arundhati Roy, Shobha De and many more women writers built a platform of universal female experiences. The emergence of the Indian women novelists, on the Indian Fictional cosmos has added a new dimension to feminist's concerns.

The most vital ingredients in all women's writings which connect the whole gamut of feminine world are their experiences. These very experiences of

women have bound them together and have helped to strike a communion with women throughout the world. Women writers under the banner of Feminism have been successful to a greater extent to transform the psyche of women, to make them assertive. Women have evolved from Victimized Self to liberated Self.

REFERENCES

- Beauvoir, Simonde. "The Second Sex". Trans and Ed. H.M. Parshley, Alfred A. Knoff: New York. 1957.
- Blaha '98', Heather (1997). "Feminist Literature: Confessional Writing Beyond National Boundaries": *Undergraduate Review*: Vol. 10: Iss. 1. Article 8.
- Cixous, Helen. "The Laugh of Medusa". *New French Feminisms*. Eds. Elaine Marks and Isabella de Coutrivon, Brighton: Harvester. 1975.
- Dooling, Amy, and Wendy Larson. "Writing and Women in Modern China". *The Journal of Asian Studies*: JSTOR. 2014.
- Ellmann, Mary. "Thinking About Women". New York: Harcourt. 1968.
- Felski, Rita. "Beyond Feminist Aesthetics". Cambridge: Harvard Univ. Press. 1989.
- Humm, Maggie. "Feminisms: A Reader London": Harvester Wheat Sheaf. 1992.
- Lauter, Paul. "Fanny Fern, Immanuel Hawthorne". *Health Anthology of American Literature*: Vol. A and Vol. B. 7th ed. 2013
- Meikandadevan, B. Subhasini, Mary Persis T. "Self-Identity: Analysis of Women Characters in the novels of A. Desai, S. Deshpande and K. Markandaya": *Contemporary Discourse*: Vol. 2: Iss. 2. 2011
- Phillips J, James T Jr. "The Double Life of Alice B. Sheldon". New York: St. Martin's. 2006.
- Sanders, Rachel. "10 Famous Females Who Used Male Pen Names". 2014
- Schneir, Miriam. "The Vintage Book of Feminism". New York: Vintage Books. 1994.
- Showalter, Elaine. Ed. *The New Feminist Criticism: Essays on Women Literature and Theory*. New York: Pantheon Books. 1985.
- Snitow, Ann. "A Gender Diary". *Conflicts in Feminism*. Eds. Marianne Hirsch and Evelyn Fox Keller. New York: Routledge. 1990.
- Spacks, Patricia Meyer. "The Female Imagination". New York: Alfred A. Knopf. 1975.
- Woolf Virginia. "A Room of One's Own. London": Penguin. 1945.
- Woolf Virginia. "Women and Writing". Ed. Michele Barrett. London: Women's Press. 1979

13.

A Literary Review On The Conceptualization Of Women's Empowerment

Arpana Shrivastava
Guest Faculty Lecturer(English)
Govt. N. M. V. Hoshangabad

Woman is the central figure in our society. She inspires confidence, inculcates and prepares children to peruse their goods relentlessly. History bears testimony to the fact that height of patriotism selflessness, fearlessness and determination are imbedded in children through the persistent efforts of mothers. But unless women is provided the prerequisites of education for developing her vision, proper health care and social security, respect and status, her efforts are likely to fall short to accomplish the ultimate objective of a civilized and prosperous nation.

Women constitute one of the backward social groups in need of special protection. Although nearly half of the population of any society consists of women, they have due to long tradition of male domination ,prevailing almost universally. Women all over the world have had to struggle for equality with men. They had to fight against unequal laws and for equal opportunities.

The state is expected to protect the special interest of women and at the same time is seen to endorse the control of men over women. In India, the history speaks that the women are considered as a divine force but the multi cultured Indian society placed the women at different positions. Thus, there is no uniform status of women in the Indian society. The Indian philosophy poses the women with dual character. undoubtedly, the position of women during the vedic period was glorious on account of freedom and equality. During this period, the women participated in every walk of life. This shows a high status

of women. During the post vedic period, the women had suffered drastic hardships and restrictions as propounded by Manu. In the British period , the position of women had undergone drastic changes mainly due to the western impact on the Indian socio-culture pattern.

The worth of a civilization can be judged from the position that it gives to women. Women constitute about half the population of India, received only a small share of development opportunities.

For a long time women remained within the four walls of their households. Their dependence on men folk was total. But in recent years educated women in particular and the poor ones in general realized the need for taking up employment outside the household with rapid rising cost of living, pressure of economic, necessity, inadequate income of family, economic development and modernization in different spheres of economic activities women entered in gainful employment, where they experienced an old age problem but a new issue of humiliation specifically sexual harassment of working women by their supervisors, colleagues and other persons. This problem has created a havoc and terror in working women, crimes against the Indian women are in international focus now. The agency quoted a Guwahati High Court Judgment which ruled that women must not be taken to army camps for integration, or any other purpose. Artticle51A(e) imposes fundamental duty on every citizen of Indian to renounce practices derogatory to the dignity of women.

With increased use of the social networks and various mobile apps are spanning out to ever more remote corners of the world. Violence against women is new widely recognized as a serious human right abuse, and an important social problem with substantial consequences physical, metal sexual and reproductive health violence. Therefore appropriate health promotion information activities needed to tackle associated factors of domestic violence against women are to prevent and control the problem to save women from being victim.

Both the reformists and nationalist ideologies subjected, women to a new partriarchy and we see the women in Rabindernath Tagore's novels being shaped by it. At the same time Lolita, Anandamoi and Bimala emerge as individuals in their own right and contribute to the discourse of the nation'.

THE HISTORY AND IMPORTANCE OF WOMEN'S LITERATURE

Throughout the eighteenth and nineteenth centuries, women read and wrote

in every conceivable literary form despite prevailing laws and customs. Women were defined participation in political forums such as town meetings. The American revolution helped bring women into the world of published literature. In their writings women often apologized for violating gender customs.

It's fair to say that the term 'Women's literature covers everything from the yearnings of fairy tale princesses to the brilliant contributions of free thinking literary innovators. Marry wollstone craft's philosophical treatise. A vindication of the rights of women's set a trajectory that women writers including Virginia, wolf. Audra Lorde ,Adrienne Rich, Toni Morrison, Margaret. Atwood among so many others have followed since, a trajectory that combines literary excellence with advocacy.

We all want to believe that people out there understand us. We want to know that we can do great things and that we can inspire others as well. It becomes a chain of inspiration among writers, readers and everyone else within their lives. When women share their voices powered things can happen. Movements occur and the impossible becomes possible. Light begins to spread through the darkness of the loneliest girl's heart. When she knows other women understand her, she feels hope and she grows as she becomes a strong tree of strength and a powerful source of light, She inspires more and more women and men to do the same.

Thus is why it is so important for women in literature to flood on to the scene.

Only in recent decades have writers and scholars begun to ask how women contributed to the expansion and maintenance of the British Empire, nation building in the colonies and to various war efforts, for example.

In the broadest sense, literature includes any type of writings on any subject ; the literature of medicine, usually, however it means the body of artistic writings of a country an period that are characterized by beauty of expression and farm and by universality of intellectual and emotional appeal. Literature, most generically is any body of written works used to refer to all written accounts, in which expression and form, in connection with ideas of permanent and universal interest are characteristic as poetry, novels, history, biography and essays.

The representation of women in the media is important and influential. Feminism is still relevant today issues of equality still exist and will continue to exist unless we do something about it. People in the media such as authors and directors have the power to gender complex characters who can defy gender

and social norms and to break the barrier of inequality.

Since women constitute half the world's population and are entitled to all human rights on an equal basis with men, women's struggle for equality of right has been one of the key issues global concern. Our country is still unable to protect and people its women. The law, the police, the NGOs, all are trying to give justice to the affected women, but yet the desired results have not been achieved. Issues regarding women not only threaten their, but also our nation as a whole. Therefore protection and promotion of women of our country should be a national agenda.

If at all there is to be time fore rethinking on women's concern in India., for restructuring of strategies for their upliftment and a time of reckoning with the failure of having achieved less than anticipated for women, then that time is now!! Because the moral Fabric of a nation is strengthened only when its women are strengthened."

Literature has witnessed the roles of women evolving through ages, but until recent times, most of the published writers were men and the portrayal of women in literature was without doubt biased. A lot of it has to be blamed on the fact that in the ancient world, literacy was strictly ,limited, and the majority of those who could write were male. How ever, the contribution of women to oral folklore can not be taken for granted in folk songs, stories poetry and literature in general.

Here's a look at how women were portrayed in literature through eras. During the Victorian era ,Edwardians poetry spoke of women's right gathering much attention, feminism and females getting out of their homes during the war times.

According to author Anita Nair "Literature has always been ambivalent in its representation of women."

Good women as in ones who accepted societal norms were rewarded with happily ever after. Speaking of depiction of women in Indian poetry, it was freedom fighter educationist and activist Mahadevi verma, who became the torch bearer of Hindi poetry on women issues. The great poetess took drew inspiration for her subjects from traditional Hindu literature which talked about liberating images.

Jai Shankar Prasad who was famous for his strong portrayals of women became popular for famously glorifying women,. A popular verse from one of his most widely read poems, "Kamayani" reads-

" Nari! Tum Kewal shraddha ho

vishwas-rajat-nag-pal-tal mein

piyush strot si-baha karo,

jeevan ki sunder samtal mein."

Poeters Amrita Pritam proved to be one of the leading voices in Indian regional poetry in the 20th century. More recently Indian writers like Chetan Bhagat and Anita Nair have show cased the new women in their books. While Chetan portrays his women characters as harbingers of social change and equality, an aspect which is evident in his book' One Night at the call centre' whose men and women are treated equally and work in night shifts in the past, women were uneducated. By comparison, modern women have more refined tastes. On the other hand, whereas women were once hard working and strong, they were now lazy and fond of luxury, further in the olden days women were religious. They were faithful to their husbands, hospitable to guests, and charitable, to the needy. They genuinely belived in the norms of right conduct.

In all Tagore's novels except,Gora women are the protagonists. Their rare qualities like courage, pity, devotion are the themes of Tagore's novels and short stories

"Women in Development" is an approach of development projects that emerged in the 1969's, calling for treatment of women's issues in development projects. It is the integration of women into the global economics by improving their status and assisting in total development **Greek Mythology :**

Women in Greek mythology were perceived to be more as sexual objects than individuals. Many were taken advantage of by the Gods and by human beings. One would see that women's rights were very limited and they were not allowed to express much of their freedoms. Within this time period women were blamed for wars, destruction of towns and the death of men. It was not unlikely to see goddesses using their powers for vengeance. Although the role of human women was limited the existence of goddesses attributed great amounts of power to female characters.

DEPICTION OF WOMEN IN LITERATURE THROUGH AGES – MEDIEVAL LITERATURE.

The women of the Medieval times were surprisingly a lot more candid and sexual than one might expect of an era where the ideal of feminity was Mary, the mother of Jesus. In actuality, the women in the literature of the period, as well as the historical female figures seemed to be torn between the ideal and

the physical desires and domineering character that her antagonist, Eve, embodies in a careful reading of the literature of the time, one finds the first buds of a feminist literature emerging from the words on the pages.

ELIZABETHAN LITERATURE

The theme of misogyny and superiority of men was the typical genre that authors took within their writing. Women were not looked to as a person but were consideration a mere necessity for the procreation process. Women continued to be split between the ideal of the virgin Mary and her fallible counterpart, Eve, Unfortunately, the virgin Mary was one of a kind, so there was often a general distrust of women. This distrust of women lead to most works degrading the female race, and terming females as the "other" which was to be feared equality between the sexes was not present within this era and is evident from the numerous writings degrading the female race.

VICTORIAN AND TURN OF THE CENTURY LITERATURE

The role of women in 19th century literature was one in which they redefine

their place in society by accepting an image of themselves, which involved both home centeredness and inferiority. Elizabeth Gaskell did not concede to the idea of women's inferiority although she does concede to the nation that a women's place is in the home, and is evident by her portrayal of Bessie in her poem " Cranford". In this time period women were being portrayed as protagonists more often than in the past. In Gustave Flauberts novel Madame Bovary, Emma the lead character, is portrayed as a tragic heroine" . At the time the book was written(1856), the character of Emma was viewed as foolish and putting herself in narrow circumstances. Alfred Lord Tennyson's poem " The Princess", States-

"Man for the field
and woman for the hearth,
Man for the sword
and for the needle she."

It is evident from these works that during this time women were still in a subjugated role despite their desire to breaks free of societies restrictions .

20TH CENTURY LITERATURE

Women's roles in literature has evolved throughout history and had lead

women to develop into strong independent roles. Modern Literature has

served as an outlet and sounding board for women's right and feminist pioneers. Female writers have come to the fore front and provided today's readers with a vast array of ethnic and cultural perspectives. The unique voice of female minorities is a common theme in many coming of age novels that allows each writer to establish a separate identity for their characters and themselves. Women in modern literature often include strong independent females juxtaposed by oppressed women to provide examples for young female readers and to critique short comings of our society. The emergence of the independent female novelist in America has allowed for a new evolution of the role of women in fictional literature.

SPANISH LITERATURE

It is difficult to summarize the role of women in Hispanic literature, as it has been ever changing. It is surprising to see a feminist view point since the Medieval times in Spanish and literature, but its most productive era has come to exist in the last twenty years.

While women may not have always effected the same kinds of social and cultural changes as men, especially those women who were confined to domestic work, overlooking their role can only offer an incomplete reconstruction of the past. Frequently women's voices are simply not recorded in archives, printed records, such as newspapers and government papers, do not always register their lives and contributions. Unless a woman happened to keep a diary and subsequent generations considered, it is important enough to preserve, there might be few traces of her existence.

CONCLUSION

Thus through the laws, made for the welfare of women. They can occupy high place in our society. By following these rules women will be honored with a high degree because, we know a man without the participation of his wife can perform no religious rites with perfection. Through interaction actions and councils, self defence training programmers NGO's, we reserve the right to make improvements and changes in the condition of woman. In this way women also can occupy not only an important place but also an equal position with men.

REFERENCES

- Moser, Caroline, O.N. (1995) : Gender Planning and Development : Theory, Practice and Training (Reprinted) London (U.A.) : Routledge.
- Bosercep Eter(2011), Women's role in economic development , in visvanathan Walini, Duggan, Lynn ; Nisonoff, Laurieet
- IreneTinker(1990) Persistent Inequalities women and worlddevelopment, Oxford University Press, p.30 Isbn 978-0-19 .
- Robert Connell(1987) Gender and Power Society, the person, and sexual politics Stanford University Press. Isbn 978-0-80471490.
- World Bank(1995) : " Enhancing Women's Participation In Economic Development."(Washington, DC World Book) 22
- Elizabeth Wilson : Women And The Welfare State ; Routledge.
- WDB about page : Women's Development Business. WDB 2013 : Retrieved 28 Nov.2013